Teacher's Manual

Help-kit
6-8

Tanquiri.AI

व्याकरण

व्याकरण-6

खंड 'क' : व्याकरण

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) अपने मित्र को कंप्यूटर पर ई-मेल भेजने के लिए हम लिखित भाषा का प्रयोग करते हैं।

(ख) मनुष्य द्वारा मन के विचारों को व्यक्त करने का माध्यम भाषा कहलाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचरों या मनोभावों को दूसरों के समक्ष व्यक्त करते है।

भाषा के तीन रूप होते हैं–मौखिक लिखित सांकेतिक।

मौखिक भाषा–जब हम अपने मन के भावों को बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं तब वह भाषा का मौखिक रूप कहलाता है; यथा-वाद-विवाद, संवाद, भाषण इत्यादि। जैसे–नेता जी भाषण दे रहे हैं।

लिखित भाषा–जब हम अपने मन के भावों को लिखकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं तब वह भाषा का लिखित रूप होता है; जैसे–संदीप कंप्यूटर पर ई-मेल भेज रहा है।

सांकेतिक भाषा–बच्चों, आपने चौराहे पर ट्रैफिक लाइट देखी होगी और देखा होगा कि लाल बत्ती होने पर सभी लोग रुक जाते हैं एवं पीली बत्ती होने पर चलने के लिए तैयार हो जाते हैं तथा हरी बत्ती होने पर चलने लगते हैं। ये सभी संकेत हैं।

(ख) मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप में प्रकट करनेके लिए निश्चित किए गए चिह्नों की व्यवस्था को लिपि कहते हैं।

(ग) **लिपि की उपयोगिता**–लिपि की अनेक उपयोगिताएँ हैं–

लिपि का रूप लेकर लिखे जाने पर विचार सुनिशिचत और स्थायी हो जाते हैं।

लिपि, विचारों को समय से आगे बढ़ा देती है।

लिपि की मदद से ही विचार, ज्ञान-विज्ञान, नई खोज और जानकारी, प्रसार और विस्तार पाती है। संसार के किसी भी कोने में प्राप्त जानकारी हर कोने में पहुँचती है और उसका लाभ संपूर्ण मानवता को मिलता है।

प्रथम उपयोगिता तो स्वयं भाषा के लिए ही होती है। दुनिया में वे ही भाषाएँ जीवित रहती और विकास करती हैं, जिनकी स्यं की कोई लिपि होती है।

(घ) हिंदी की लिपि का नाम देवनागरी हे। हिंदी के अतिरिक्त मराठी, नेपाली, गुजराती, संस्कृत भी देवनागरी में ही लिखी जाती हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) जो भाषा बोलकर प्रकट की जाए, उसे **मौखिक** कहते हैं।

(ख) 'व्याकरण' शब्द का अर्थ है **टुकड़े-टुकड़े करना**।

(ग) भाषा की शुद्धता का ज्ञान हमें **व्याकरण** कराता है।

(घ) **हिंदी और अंग्रेजी** भाषा की लिपि बायीं ओर दायीं ओर लिखी जाती है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓)

5. निम्नलिखित क्रियाओं में भाषा के किस रूप का प्रयोग हो रहा है–

(क) पत्र लिखना – **लिखित**
(ख) समाचार पत्र पढ़ना – **लिखित**
(ग) दादी से कहानी सुनना – **मौखिक**
(घ) एस०एम०एस० करना – **लिखित**
(ङ) ई-मेल करना – **लिखित**
(च) वाद-विवाद करना – **मौखिक**

6. निम्नलिखित प्रदेशों में बोली जाने वाली भाषाओं के नाम लिखिए–

गुजरात – **गुजराती**
जम्मू-कश्मीर – **उर्दू, कश्मीरी**
मध्य प्रदेश – **हिंदी**
महाराष्ट्र – **मराठी**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **नीचे वर्ग-पहेली में कुछ खाने खाली हैं उन्हें उन प्रांतों के नामों से पूरा कीजिए जिनकी आम बोलचाल की भाषा हिंदी है।**

ह	रि	या	णा	हि	उ
	म	छ		मा	त्त
	ध्या	त्ती		च	रा
रा	प्र	स		ल	खं
ज	दे	ग		प्र	ड
स्था	श	ढ़		दे	
न	बि	हा	र	श	

2. वर्ण-विचार

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) स्थान के आधार पर व्यंजन के नौ भेद होते हैं। उनके नाम हैं–1. दंतोष्ठ्य 2. वर्त्स्य 3. कठोर तालव्य 4. मूर्धान्य/पूर्व तालव्य 5. स्वरयंत्रीय 6. कोमल तालव्य 7. जिह्वामूलीय 8. दन्त्य 9. ओष्ठ्य।

(ख) हाँ वर्ण भाषा की बुनियाद होते हैं।

(ग) वर्ण ही किसी भाषा को लिखित आधार देते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) **ह्रस्व**–जिन स्वरों के बोलने में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहा जाता है। अ, इ, उ, ऋ, ह्रस्व स्वर हैं।

(ख) व्यंजन के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–(i) स्पर्श व्यंजन (ii) अंतःस्थ व्यंजन (iii) ऊष्म व्यंजन।

(ग) **संयुक्त व्यंजन**–दो अलग-अलग व्यंजनों के परस्पर मेल से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।
हिंदी में चार मानक संयुक्त व्यंजन हैं–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।
द्वित्व व्यंजन–संयुक्त व्यंजन के विपरीत द्वित्व व्यंजन दो समान व्यंजनों के मेल से बनते हैं। जैसे–क् + क = क्क (पक्का, चक्की)।

(घ) **अल्पप्राण व्यंजन**–जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा की मात्रा कम रहती है, वे अल्पप्राण व्यंजन कहलाते हैं; जैसे–क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म (प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ व्यंजन) य, र, ल, व, ड़।
महाप्राण व्यंजन–जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा की मात्रा अधिक रहती है, वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं; जैसे–ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ (प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा व्यंजन) श, ष, स, ह, ढ़।

3. दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) वर्ण दो प्रकार के होते हैं **स्वर** और **व्यंजन**।
(ख) श्वास-नली के ऊपरी भाग में ध्वनि उत्पन्न करने के मुख्य **अवयव** हैं।
(ग) **जीभ** उच्चारण-अंगों में सबसे प्रधान है।
(घ) नाक तथा मुँह से निकलने वाली ध्वनि को **अनुनासिक** कहते हैं।

4. 'क' वर्ग के विभिन्न वर्णों का उच्चारण स्थान बताइए–

क–**कोमल, तालव्य** ख–**कोमल, तालव्य**
ग–**कोमल, तालव्य** घ–**कोमल, तालव्य**
ङ–**कोमल, तालव्य**

5. निम्नलिखित वर्णों का उच्चारण स्थान बताइए–

वर्ण		उच्चारण स्थान	वर्ण		उच्चारण स्थान
य	–	कठोर तालव्य	र	–	वर्त्सर्य
ल	–	वर्त्सर्य	व	–	दंतोष्ठ्य
श	–	कठोर तालव्य	स	–	वर्त्सर्य
ह	–	स्वरयंत्रीय			

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नांकित वर्ण-भेद तालिका को पूर्ण कीजिए–**

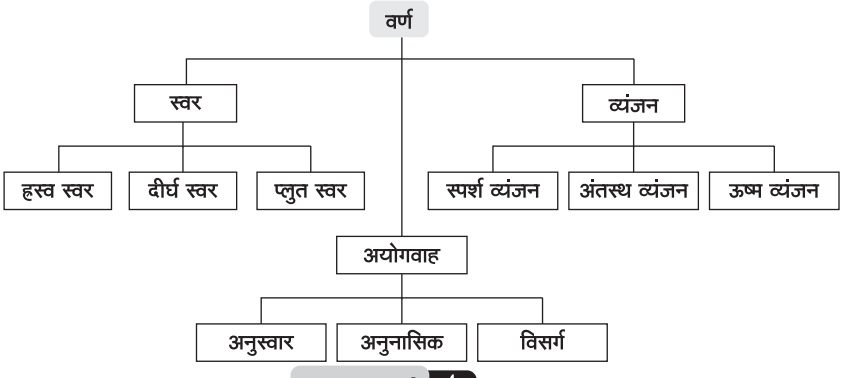

3. शब्द-संरचना

अभ्यास

1. सोचिए, और बताइए–

(क) दशानन में बहुव्रीहि समास है।

(ख) समाज + इक = सामाजिक।

(ग) अंतर्राष्ट्रीय शब्द में 'अंतर्' उपसर्ग है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास के कुछ शबदांश जोड़कर एक शब्द से अनेक शब्दों के निर्माण को शब्द-रचना कहते हैं।

(ख) वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं; जैसे–कु + पुत्र = कुपुत्र, सु + योग = सुयोग इत्यादि।

हिंदी में तीन तरह के उपसर्गों का प्रयोग होता है–

तत्सम उपसर्ग–संस्कृत के उपसर्ग, जो हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं।

तद्भव उपसर्ग–संस्कृत से विकसित उपसर्गों को तद्भव उपसर्ग कहा जाता है।

आगत उपसर्ग–विदेशी भाषाओं के जो उपसर्ग हिंदी में आ गए हैं, वे आगत उपसर्ग कहलाते हैं।

(ग) **तद्धित प्रत्यय**–जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में जुड़कर उन शब्दों के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करते हैं और उन्हें नया रूप देते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

शब्द	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
कहानी	कार	कहानीकार

(घ) **कर्मधारय और बहुव्रीहि में अंतर**

कर्मधारय में दूसरा पद प्रधान होता है, बहुव्रीहि में कोई पद प्रधान नहीं होता।

कर्मधारय के पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का संबंध होता है। बहुव्रीहि में दोनों पद मिलाकर प्रसंग के अनुसार अन्य विशिष्ट अर्थ प्रदान करते हैं।

(ङ) **द्वंद्व समास**–जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास के नाम से जाना जाता है। विग्रह करने पर मध्य में 'और' अथवा 'एवं' लगाना पड़ता है।

उदाहरण–समस्त पद विग्रह

माता-पिता माता और पिता

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थान भरिए–

(क) शब्द में कुछ नया जोड़कर एक शब्द से अनेक शब्दों के निर्माण को **शब्द-रचना** कहते हैं।

(ख) जो शब्दांश अन्य शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं, वे **प्रत्यय** कहलाते हैं।

(ग) प्रत्यय के दो भेद हैं **कृत प्रत्यय** तथा **तद्धित प्रत्यय**।

(घ) **द्वंद्व** समास में दोनों पद प्रधान होते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

5. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्गों और मूल शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए–

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
निर्बल	निर्	बल	कुसंग	कु	संग
चिरायु	चिर	आयु	अपमान	अप	मान

6. निम्नलिखित मूल शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर नया शब्द बनाइए–

मूल शब्द	प्रत्यय	नया शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
चिकना	ई	चिकनाई	गुण	ई	गुणी
विष	ऐला	विषैला	चाल	ऊ	चालू
धर्म	इक	धार्मिक	पठ	नीय	पठनीय

7. निम्नलिखित सामाजिक शब्दों में पूर्व पद तथा उत्तर पद लिखकर समास का नाम भी लिखिए–

सामासिक शब्द	पूर्व पद	उत्तर-पद	समास का नाम
नीलकंठ	नीला	कंठ	बहुव्रीहि समस
पवनपुत्र	पवन	पुत्र	बहुव्रीहि समास
भारतरत्न	भारत	रत्न	कर्मधारय समास

8. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) 1. द्वंद्व समास का (ख) 2. बा

(ग) 1. आवा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नांकित वर्ग-पहेली में कुछ उपसर्ग हैं। उनसे संबंधित शब्द बनाइए–**

अ	स	मा	न
प्र	भा	व	अ
	अ	कु	उ
न	न	फ	ज
ग	ब	ल	इ
प्य	न		

4. संज्ञा

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(ख) अंग्रेजी भाषा के प्रभाव के अनुसार संज्ञा के दो अन्य भेद हैं–1. द्रव्यवाचक संज्ञा, 2. समुदायवाचक संज्ञा।

(ग) स्त्री शब्द का लिंग स्त्रीलिंग है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद तीन भेद होते हैं–

संज्ञा–जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा–जिन शब्दों से किसी संपूर्ण जाति का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सदन, नदी, पशु, मोम, मंत्री इत्यादि।

व्यक्तिवाचक संज्ञा–जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान विशेष का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–यमुना, आगरा, आदित्य, हिमालय, स्वीटी, कोलकाता इत्यादि।

भाववाचक संज्ञा–जिन शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, दशा, धर्म अथवा अवस्था का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–द्वेष, दुश्मनी, जवानी, दयालुता, करुणा, कड़वाहट इत्यादि।

(ख) **द्रव्यवाचक संज्ञा**–जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ अथवा द्रय का ज्ञान होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, द्रव्यवाचक संज्ञाओं को नापा तथा तौला जा सकता है; जैसे–कोयला, चीनी, लोहा आदि।

(ग) अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार कुछ विद्वान संज्ञा के तीन भेदों के अतिरिक्त दो भेद और भी मानते हैं–

द्रव्यवाचक संज्ञा–जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ अथवा द्रय का ज्ञान होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, द्रव्यवाचक संज्ञाओं को नापा तथा तौला जा सकता है; जैसे–कोयला, चीनी, लोहा आदि।

समुदायवाचक संज्ञा–जिन संज्ञा शब्दों से किसी समुदाय तथा समूह का ज्ञान हाता है, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हें; जैसे–वाचनालय, सभा, सेना, परिवार, प्रतियोगिता, झुंड, भीड़ इत्यादि।

(घ) **समुदायवाचक संज्ञा**–जिन संज्ञा शब्दों से किसी समुदाय तथा समूह का ज्ञान हाता है, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–वाचनालय, सभा, सेना, परिवार, प्रतियोगिता, झुंड, भीड़ इत्यादि।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थान भरिए–

(क) हम गंगा की **पूजा** करते हैं।

(ख) लक्ष्मीाबई बहुत **वीर** थी।

(ग) गंगा **हिमालय** से निकलती है।

(घ) स्नेह को भीड़ में **घबराहट** होने लगती है।

4. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए–

(क) माव – **मानवता**

(ख) पराया – **परायापन**

(ग) आवश्यक – **आवश्यकता**

(घ) चुनना – **चुनाव**

(ङ) निकट – **निकटता**

(च) मित्र – **मित्रता**

5. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✗)

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (1) जातिवाचक संज्ञा (ख) (2) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ग) (2) भाववाचक संज्ञा

5. शब्द-भंडार

1. सोचिए और बताइए–

(क) वे शब्द जो प्रसंग एवं संदर्भ के अनुसार अलग-अलग या भिन्न अर्थ देते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

(ख) विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

(ग) किरण – **रश्मि, अंशु, आभा**।

(घ) उत्तीर्ण – **अनुत्तीर्ण**।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो प्रसंग एवं संदर्भ के अनुसार अलग-अलग या भिन्न अर्थ देते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

शब्द	**अर्थ**
अवकाश	छुट्टी, बीच का स्थान या समय।

(ख)

समरूपी	**अर्थ**
अचल	पहाड़
अचला	पृथ्वी

(ग) हम ऐसे अनेक शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो एक समान अर्थ देते हैं। समान अर्थ देने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है।

बादल – **मेघ, घन, जलद**।

(घ) एक दूसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे–

शब्द	**विलोम**
अर्थ	अनर्थ

(ङ) भाषा को स्पष्ट एवं प्रभावशाली बनाने के लिए कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए वाक्यांश अथवा शब्द समूह के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करते हैं।

(च) उपर्युक्त का अर्थ है ठीक या उचित जबकि उपर्युक्त का अर्थ है ऊपर कहा गया।

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) पत्थर – **पाषाण, प्रस्तर, पाहन** (ख) पेड़ – **वृक्ष, विटप, पादप**

(ग) बाग – **बगीचा, वाटिका, उद्यान** (घ) मनुष्य – **मानव, मनुज, मानुष**

(ङ) मोर – **मयूर, केका, नीलकंठ** (च) शेर – **सिंह, वनराज, शार्दूल**

(छ) राजा – **नृप, भूपति, नरेश**

4. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

(क) अमृत – **विष** (ख) योग्य – **अयोग्य**

(ग) आदान – **प्रदान** (घ) दयालु – **निर्दयी**

(ङ) सदाचारी – **दुराचारी**
(च) सक्रिय – **अक्रिय**
(छ) सार्थक – **निरर्थक**
(ज) अपव्यय – **आय**
(झ) आकाश – **धरती**
(ञ) संक्षेप – **विस्तार**
(ट) छोआ – **बड़ा**
(ठ) शवेत – **श्याम**

5. निम्नलिखित समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए–

(क) आसमान – **आकाश**
असमान – **जो समान न हों**
(ख) सुरंग – **घोड़ा**
तरंग – **लहर**
(ग) कपट – **धोखा**
कपाट – **द्वार**
(घ) प्रसाद – **ईश्वर को लगा भोग**
प्रसाद – **महल**
(ङ) ग्रह – **अंतरिक्षीय पिंड**
गृह – **घर**
(च) लक्ष – **निशाना**
लक्ष्य **मंजिल**
(छ) अचल – **स्थिर**
अचला – **लक्ष्मी**
(ज) अनल – **आग**
अनिल – **वायु**

6. निम्नलिखित शब्द-समूह अथवा वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) जिसका कोई शत्रु न हो – **अजातशत्रु**
(ख) जो कभी नष्ट नहीं होता – **अनश्वर**
(ग) जिसको कोई भय न हो – **निर्भय**
(घ) जिसके समान और कोई न हो – **अद्‌वितीय**
(ङ) जिसकी संख्या निशिचत न हो – **अनंत**
(च) विशाल हृदय वाला – **उदार**
(छ) इतिहास संबंधी – **ऐतिहासिक**
(ज) किसी के जीवन का पूरा विवरण – **जीवन चरित**
(झ) जिसका कोई पुत्र न हो – **पुत्रहीन**

6. संधि

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) दो या दो से अधिक शब्दों के पास-पास के वर्णों का परस्पर मेल संधि कहलाता है।
(ख) यदि अ या आ के बाद इ या ई हो, तो दोनों के स्थान पर ए, यदि उ या ऊ हो, तो दोनों के स्थान पर ओ और यदि ऋ हो, तो अर् हो जाता है। उसे गुण संधि कहते हैं।
(ग) दीर्घ संधि का उदाहरण– दीप + अवली = दीपावली।
(घ) दो स्वरों के मिलने से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जब दो वर्ण आपस में मिलते हैं तो उनमें विकार उत्पन्न होता है अतः हम कह सकते हैं कि दो अक्षरों के मेल को संधि कहते हैं। व्याकरण में संधि का अर्थ होता है दो या दो से अधिक शब्दों के पास-पास के वर्णों का परस्पर मेल होना। जैसे–
सूर्य + उदय = सूर्योदय (अ + उ = ओ)

(ख) **विसर्ग संधि**–किसी भी शब्द के अंत में लगे विसर्ग के पशचात स्वर या व्यंजन आने से विसर्ग में जो बदलाव आता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

(ग) **स्वर संधि**–दो स्वरों के मिलने से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। जैसे–विद्या + आलय = विद्यालय (अ + आ = आ)

(घ) **विसर्ग संधि**–किसी भी शब्द के अंत में लगे विसर्ग के पशचात स्वर या व्यंजन आने से विसर्ग में जो बदलाव आता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। **उदाहरण**–मनः + रथ = मनोरथ, दुः + शासन = दुश्शासन।

(ङ) **व्यंजन संधि**–किसी व्यंजन ध्वनि के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो ध्वनि परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहा जाता है। जैसे–
'त्' या 'द्' के पश्चात् 'ज/झ' आ जाए तो 'त्द्' 'ज्' में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–सत् + जन = सज्जन।

(च) **वृद्धि संधि** में अ, आ का ए, ऐ से मेल हो पर 'ऐ' तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर 'औ' हो जाता है। जबकि **यण संधि** में इ-ई, उ-ऊ, ऋ के बाद भिन्न स्वर आए, तो दोनों के मेल से क्रमशः य, व, र हो जाता है।

(छ) **स्वर संधि** में केवल दो स्वरों का ही पारस्परिक मेल होता है और उससे संधि होती है जबकि व्यंजन संधि में व्यंजन का मेल स्वर और व्यंजन दोनों से हो सकता है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) स्वर संधि के **पाँच** भेद होते हैं।

(ख) विसर्ग के पश्चात् स्वर या व्यंजन आने से विसर्ग में जो बदलाव आता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं।

(ग) व्यंजन ध्वनि से परे स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहा जाता है।

(घ) दो निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन या विकार को **संधि** कहते हैं।

(ङ) स्वर के बाद स्वर आने से होने वाले विकार को **स्वर संधि** कहा जाता है।

(च) संधि के **तीन** भेद होते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓) (च) (✗)

5. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

हिमालय – **हिम + आलय**
विद्यालय – **विद्या + आलय**
मतानुसार – **मत + अनुसार**
सूर्योदय – **सूर्य + उदय**
अत्यधिक – **अति + अधिक**
संतोष – **सम् + तोष**
सच्चरित्र – **सत् + चरित्र**
दिगंबर – **दिक् + अंबर**
भोजनालय – **भोजन + आलय**
प्रतीक्षालय – **प्रतीक्षा + आलय**
रजनीश – **रजनी + ईश**
गणेश – **गण + ईश**

6. निम्नलिखित शब्दों को संधि कीजिए–

अनु + छेद – **अनुच्छेद**
विद्या + अर्थी – **विद्यार्थी**
वाक् + ईश – **वागीश**
उत् + हार – **उद्धार**
निः + अर्थक – **निरर्थक**
सम् + गति – **संगति**

महा + उदय – **महोदय**
दिक् + अंत – **दिगंत**
समू + चय – **समुच्चय**
निः + चय – **निश्चय**
अभि + आगत – **अभ्यागत**
निः + धन – **निर्धन**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **दिए गए शब्दों की संधि के द्वारा वर्ग-पहेली को हल कीजिए–**

	व							गा	
	नौ			व			ना	य	क
	ष			धू		प्र	त्ये	क	
स्वा	ध			त्स					
ग				व					
त	था	पि					अ		वि
							त्या		द्या
							चा		ल
	ज	लो	र्मि				र		य

7. लिंग

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) चावल – **पुल्लिग**, सब्जी – **स्त्रीलिंग**।

(ख) हमेशा पुल्लिग रहने वाले शब्दों का स्त्रीलिंग में परिवर्तन करने के लिए मादा शब्द को जोड़ा जाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो किसी पुरुष अथवा सत्री जाति के होने का बोध कराते हैं, लिंग कहलाते हैं। स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हें। जबकि पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं।

(ख) लिंग दो प्रकार के होते हैं–

1. पुल्लिग–जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिग कहते हैं; जैसे–कुत्ता, शेर, मोर, मामा, नाना इत्यादि।

2. स्त्रीलिंग–जिन शब्दों से सत्री जाति का बोध होता हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–कुतिया, शेरनी, मोरनी, मामी, नानी इत्यादि।

(ग) पर्वतों के नाम, समुद्रों के नाम, देशों के नाम, अनाजों के नाम तथा दिनों के नाम हमेाा पुल्लिग होते हैं।

(घ) नदियों के नाम, भाषाओं के नाम, तिथियों के नाम, लिपियों के नाम व बेलों के नाम हमेशा स्त्रीलिंग होते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) लिंग दो प्रकार के होते हैं– **स्त्रीलिंग** तथा **पुल्लिग**।

(ख) भाषाओं के नाम सदैव **उभयलिंगी** होते हैं।

(ग) सेवक का **स्त्रीलिंग** सेविका होता है।

(घ) पाठिका का पुल्लिग **पाठक** होता है।

4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए–

धोबी – **धोबिन**

साँप – **साँपिन**

मूर्तिकार – **मूर्तिकारिणी**

डिब्बा – **डिब्बी**

इंद्र – **इंद्राणी**

धनवान – **धनवती**

गायक – **गायिका**

ऊँट – **ऊँटनी**

5. निम्नलिखित शब्दों के उचित स्त्रीलिंग शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

मालिक – मालकिन **(✓)**

सुत – सुता **(✓)**

सम्राट – सम्राज्ञी **(✓)**

6. सही मिलान कीजिए–

- बेटा
- बूढ़ा
- लोआ
- चोर

- लुटिया
- बुढ़िया
- बेटी
- चोरनी

7. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) पुल्लिग

(ख) (2) स्त्रीलिंग

(ग) (2) स्त्रीलिंग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो स्त्रीलिंग शब्द बनाइए–**

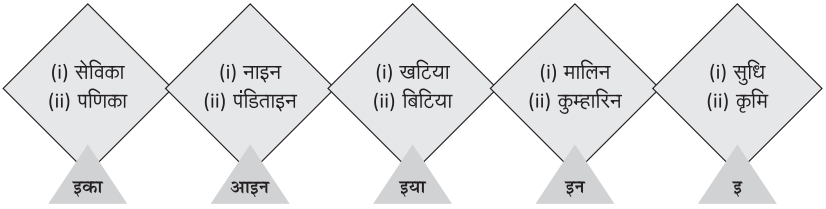

8. वचन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) वचन एक और अनेक संख्या का ज्ञान कराता है।

(ख) चाँद एकवचन है और तारे बहुवचन हैं।

(ग) दर्शन, हस्ताक्षर, प्राण, रोम, लोग, समाचार, बाल इत्यादि शब्द बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जिस शब्द से एक या एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

(ख) वचन के दो भेद होते हें–एकवचन तथा बहुवचन।

(ग) एकवचन से वस्तु अथवा प्राणी की एक संख्य का ज्ञान होते है जबकि बहुवचन द्वारा उनके संख्या में अनेक होने का ज्ञान होता है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) संज्ञा के जिस रूप से अधिक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे **बहुवचन** कहते हैं।

(ख) वचन दो प्रकार के होते हैं **एकवचन** तथा **बहुवचन**।

(ग) पानी शब्द हमेशा **बहुवचन** में प्रयुक्त होता है।

(घ) छात्रा का बहुवचन **छात्राएँ** होता है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗)

5. सही मिलान कीजिए–

• पुस्तक	• दीवारें
• बच्चा	• मछलियाँ
• दीवार	• कथाएँ
• मछली	• बच्चों
• कथा	• पुस्तकें

6. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–

गाय – **गायें**	आचार्यों – **आचार्य**	छात्र – **छात्रों**
महिलाएँ – **महिला**	किसान – **किसानों**	सड़कों – **सड़क**

7. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (1) मछलियाँ (ख) (2) पक्षी

9. विशेषण

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) यह लाल साड़ी मैं विशेष तौर पर तुम्हारे लिए लाया हूँ।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) यह संख्यावाचक विशेषण है।

(घ) **संख्यावाचक विशेषण**–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

परिणामवाचक विशेषण–जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के माप-तोल की विशेषता का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–दस किलो गेहूँ तौलने के बाद पैसे लूँगा।

(ङ) मूलावस्था उत्तरावस्था तथा उत्तावस्था विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) एक से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों की तुलना के लिए प्रयोग किए जाने वाले विशेषण शब्द तुलनात्मक विशेषण कहलाते हैं। तुलना की अवस्थाएँ तीन होती हैं–

1. **मूलावस्था**–मूलावस्था में तुलना नहीं होती–पीला गुलाब, विद्वान आदमी।
2. **उत्तरावस्था**–दो वस्तुओं की तुलना करके जब एक को अच्छा या बुरा कहा जाता है, तब उत्तरावस्था होती है, जैसे–गुलाब, गेंदे से अधिक सुंदर लगता है।
   यह कमरा उससे बड़ा है। शीला स्नेह की अपेक्षा समझदार है।
3. **उत्तमावस्था**–उत्तमावस्था में अनेक व्यक्तियों, वस्तुओं की तुलना में किसी एक को सबसे श्रेष्ठ या निकृष्ट कहा जाता है; जैसे–विश्व-साहित्य में ऋग्वेद प्राचीनतम ग्रंथ है।

(ख) **विशेषण के भेद**

गुणवाचक संज्ञावाचक परिमाणवाचक सार्वनामिक विशेषण

गुणवाचक विशेषण–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोष आदि का बोध कराते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–गुण-दोष, रंग, ऊँचा-नीचा, परिश्रमी-आलसी, बुद्धिमान, दुष्ट, लंबा, मोटा-पतला, मीठा-कड़वा इत्यादि। वे सब गुणवाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेषण–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे–दुगना, पचास, दूसरा आदि।

परिणामवाचक विशेषण–जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के माप-तोल की विशेषता का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–दस किलो गेहूँ तौलने के बाद पैसे लूँगा।

सार्वनामिक विशेषण–जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आकर उसकी ओर संकेत करते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे–यह लड़का, मेरी कमीज इत्यादि। सार्वनामिक विशेषण प्रायः संज्ञा पदों से पहले आते हैं और उनकी ओर संकेत या निर्देश करते हैं। इसलिए इन्हें संकेतवाचक या निर्देशक भी कहते हैं। वे सर्वनाम शब्द होकर भी विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं, इसलिए सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

(ग) **विशेषणों की रचना**–हिंदी में मूल विशेषण शब्दों की संख्या कम है। अधिकतर विशेषण शब्द संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया अथवा अव्यय शब्दों से बनते हैं। ऐसे विशेषणों को व्युत्पन्न विशेषण कहा जाता है। जैसे–

संज्ञा	**विशेषण**
प्रेम	प्रेमी

(घ) जो शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताते हें, वे प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे–बहुत कम लोग, खूब चमकदार कपड़ा, अत्यंत सुंदर, लगभग दस-बारह इत्यादि।

विधेय विशेषण–जो विशेषण शब्द विशेष्य के बाद क्रिया से पहले आते हैं, वे विधेय विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

1. गुलाब सुंदर लग रहा है। 2. दीवार टेढ़ी बनी है।

(ङ) जब किसी शब्द का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है, तो वह सर्वनाम होता है, परंतु जब शब्द का प्रयोग संज्ञा के साथ होता है, तो वह सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है।

(च) **विशेष्य**–विशेषण शब्द जिस व्यक्तिवस्तु या स्थान की विशेषता बताते हैं, उसे विशेष्य कहा जाता है।

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) यह पत्रिका **मासिक** है।

(ख) आम **रसीला** फल है।

(ग) सचिन **भारतीय** खिलाड़ी है।

(घ) हिमालय की चोटी **बर्फीली** सफेद है।

(ङ) मैंने कल एक **भयानक** फिल्म देखी।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✗)

5. निम्नलिखित वाक्यों में सार्वनामिक विशेषणों का प्रयोग कीजिए–

(क) **ये सब परिवार के** लोग उपस्थित हैं।

(ख) सामना **जहाँ** हो, उठाकर ले जाए।

(ग) मत भूलो कि **यह** देश हमारा है।

(घ) **यह** कमीज पुरानी है।

(ङ) **तुम** बच्चों पर तो दया करो।

6. विशेषण बनाइए–

परिश्रम – **परिश्रमी**	गुलाब – **गुलाबी**	नोंक – **नुकीला**
हँसना – **हँसी**	राष्ट्र – **राष्ट्रीय**	व्यापार – **व्यापारी**
दिन – **दैनिक**	पंजाब – **पंजाबी**	सुंदर – **सौंदर्य**

7. रेखांकित शब्दों के लिए सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) परिमाणवाचक विशेषण

(ख) (1) गुणवाचक विशेषण

(ग) (2) गुणवाचक विशेषण

(घ) (1) गुणवाचक विशेषण

(ङ) (1) परिमाणवाचक विशेषण

10. कारक

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) कारक संज्ञा और सर्वनाम का संबंध अन्य शब्दों या क्रिया पदों के साथ प्रकट करता है।

(ख) कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल में नहीं लगती है।

(ग) के, पर, का, से, ने आदि कुछ कारक चिह्न हैं।

(घ) कारक आठ प्रकार के होते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साथ उनका संबंध प्रकट होता हो, उसे कारक कहते हैं। जैसे–दीपू के चाचा जी किसी काम से आगरा गए हैं।

(ख) हिंदी में कारक आठ प्रकार के होते हैं।

कर्ता कारक–कार्य करने वाले को कर्ता कहते हैं अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कार्य करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे–शिखा ने नृत्य किया।

कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' होती है।

(ग) करण कारक और अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है, परंतु करण कारक में 'से' विभक्ति-चिह्न साधन के अर्थ में और अपादन कारक में अलग होने के अर्थ में किया जाता है। जैसे–

राम ने पेंसिल से लिखा। (करण कारक)

राम पेड़ से गिर पडा। (अपादान कारक)

(घ) **संबोधन कारक–**जिस शब्द से किसी को पुकारे या बुलाए जाने का ज्ञान हो; उसे संबोधन कारक कहते हैं।

संबोधन कारक की विभक्ति हे, रे, अरे, ओ होती है; जैसे–

(क) हे कृष्ण! (ख) अरे! यह क्या कर रहे हो?

(ङ) जब क्रिया के आधार, समय, स्थान आदि के बारे में बात होती है, तो अधिकरण कारक का प्रयोग किया जाता है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थन भरिए–

(क) काम करने वाले को **कर्ता** कारक कहते हैं।

(ख) जिस व्यक्ति के लिए कार्य किए जाए, उसे **संप्रदान** कारक कहते हैं।

(ग) 'से' का प्रयोग **साथ** के अर्थ में भी होता है।

(घ) दो संज्ञा शब्दों के बीच का संबंध बताने वाले शब्दों को **संबंध** कारक कहते हैं।

(ङ) कारक **आठ** प्रकार के होते हैं।

4. निम्नलिखित विभक्तियों से वाक्य बनाइए–

(क) का – अजय **का** मित्र राजेश है।

(ख) में – गंगा **में** स्नान करना पुण्य का काम है।

(ग) के लिए – कविराज **के लिए** पुरस्कार की घोषणा हुई।

(घ) द्वारा – जिलाधीश **द्वारा** रमा को नियुक्ति पत्र मिला।

(ङ) पर – पेड़ **पर** कोयल बैठी है।

5. निम्नलिखित विभक्तियों का उनके उचित कारक से मिलान कीजिए–

- ने
- को
- द्वारा
- के
- से
- का
- में
- अरे!

- कर्म
- संप्रदान
- संबंध
- लिए कत्र
- अधिकरण
- संबोधन
- करण
- अपादान

6. सही विकल्प के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) हिमालय से
(ख) (3) कर्म कारक
(ग) (2) करण कारक
(घ) (3) संबंध कारक
(ङ) (1) संबोधन कारक

7. निम्नलिखित कारकों की विभक्ति बताइए–

(क) कर्म कारक – **को**।
(ख) अधिकरण कारक – **में, पर**।
(ग) संबोधन कारक – **हे, अरे, रे आदि**।
(घ) करण कारक – **से, के द्वारा**।
(ङ) अपादान कारक– **से**।

11. सर्वनाम

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है–सर्व + नाम, अर्थात् वह नाम जो सबके लिए हो।
(ख) सर्वनाम के छः भेद होते हैं–पुरुषवाचक निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक संबंधवाचक प्रश्नवाचक निजवाचक।
(ग) **उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष में अंतर**
उत्तम पुरुष–बोलने वाला अपने नाम के स्थान पर जिस सर्वनाम शब्द का उपयोग करता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–एकवचन में–मैं, मेरा, मुझे, मैंने तथा बहुवचन में–हम, हमारा, हमें, हमने इत्यादि।
मध्यम पुरुष–सुनने वाले के नाम के स्थान पर जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं; जैसे–तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपका।
(घ) 'कोई' और 'कुछ' शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम के लिए प्रयोग होता है।
(ङ) संज्ञा के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
सर्वनाम के छः भेद होते हैं–पुरुषवाचक निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक संबंधवाचक प्रश्नवाचक निजवाचक।
(ख) **पुरुषवाचक सर्वनाम**–वे सर्वनाम जो किसी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होते हैं, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–मैं, हम, तू, तुम, यह, वह इत्यादि। पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–(क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष (ग) अन्य पुरुष।
(ग) **निश्चयवाचक सर्वनाम**–जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–यह, वह आदि। अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम ही प्रसंग के अनुसार निश्चयवाचक बन जाते हैं। जबकि **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**–जिस सर्वनाम शब्द से निशिचत व्यक्ति, वस्तु आदि का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–कोई, कुछ, किसी, कहीं इत्यादि।

(घ) **संबंधवाचक सर्वनाम**–जिस सर्वनाम शब्द से किसी एक व्यक्ति, वस्तु या घटना इत्यादि का दूसरे व्यक्ति, वस्तु या घटना से संबंध का बोध हो, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है; जैसे–जो, सो, जिसे, उसे, जिसको, जिसकी इत्यादि।

(ङ) **निजवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम शब्द स्वयं के लिए प्रयोग किए जाते हैं, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–अपने आप, स्वयं, आप ही, खुद, स्वतः, आप आदि।

3. बॉक्स में दिए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, उसे **निश्चयवाचक** सर्वनाम कहते हैं।

(ख) संज्ञा के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं।

(ग) जिसके विषय में बात हो रही हो, उसके लिए **अन्य पुरुष** का प्रयोग करते हैं।

(घ) जो सर्वनाम शब्द स्वयं के लिए प्रयोग किए जाते हैं, वे **निजवाचक** कहलाते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓)

5. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए–

(क) में अपना कार्य स्वयं करता हूँ।
(ख) वह मेरा विद्यालय है।
(ग) कक्षा में प्रथम वही आएगा।
(घ) हम बाजार गए थे।
(ङ) इसका खाना किसने खाया?
(च) तुम सब कहाँ जा रहे हो?
(छ) आप घर चले जाना।

6. निश्चयवाचक सर्वनाम का प्रयोग करके पाँच वाक्य लिखिए–

(क) यह सड़क मेरठ को जाती है।
(ख) वह खेत अजय का नहीं है।
(ग) इस गाँव में ही आम के बाग हैं।
(घ) ये दुनिया नश्वर है।
(ङ) वे यात्री अब तक चले गए होंगे।

7. निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए–

मेरे – मेरे घर के सामने एक मंदिर है।
मैं – में प्रतिदिन जिम जाता हूँ।
वह – वह रोज यहाँ आती है।
आप – आप जलपान ग्रहण कीजिए।
कौन – कौन है दरवाजे पर?
किनसे – आपने यह बात किनसे सुनी?
तुम – तुम आ गए।

8. रेखांकित शब्दों के लिए सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (3) निजवाचक
(ख) (2) पुरुषवाचक
(ग) (1) प्रश्नवाचक
(घ) (1) पुरुषवाचक सर्वनाम
(ङ) (2) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नांकित चित्र को देखिए तथा सर्वनामों की सहायता से हमारे जीवन में पुस्तकालय की आवश्यकता को दर्शाने वाले वाक्य बनाइए–**

  यह पुस्तकालय है। मैं यहाँ प्रतिदिन अध्ययन करने आता हूँ। हमें अध्ययन और ज्ञानवर्धन के लिए पुस्तकालय की आवश्यकता होती है। कुछ लोग पुस्तकें क्रय नहीं कर सकते हें, ऐसे लोगों के लिए पुस्तकालय बहुत आवश्यक होता है। हमें पुस्तकालय में व्यर्थ समय नहीं गँवाना चाहिए। हमें ज्यादा से ज्यादा पुस्तकालयों की स्थापना करनी चाहिए।

12. क्रिया

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) **कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य**

1. कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति लगाकर वर्तमान काल की क्रिया को भूतकाल में बदल दिया जाता है–
   अमन पत्र लिखता है। अमन ने पत्र लिखा।
2. अपूर्ण वर्तमान काल की क्रिया होनेपर कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' विभक्ति लगाकर क्रिया का लिंग कर्म के अनूरूप परिवर्तित कर दिया जाता है–
   कशिश आम खा रही है। कशिश के द्वारा आम खाया गया।
   कविता गीत गा रही है। कविता से गीत गाया जा रहा है।
3. कर्म के साथ लगी विभक्ति को हटाकर कर्ता के साथ 'द्वारा' लगा दिया जाता है–
   छंद की रचना सूरदास जी ने की है। छंद सूरदास जी द्वारा रचित हैं/सूरदास जी द्वारा रचित दोहे हैं।

(ख) भविष्यत् काल–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं–1. सामान्य भविश्यत् काल 2. संभाव्य भविष्यत् काल।

(ग) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जिस क्रिया के द्वारा यह बोध हो कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता, कर्म तथा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य तीन भेद होते हैं–कर्तृवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य

कर्तृवाच्य–जिन वाक्यों में क्रिया का मुख्य विषय कर्ता होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। कर्तृवाच्य में अकर्मक और सकर्मक, दोनों में से कोई भी क्रिया हो सकती है। क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुरूप होता है; जैसे–सुरेश पुस्तक पढ़ता है। चंचल चित्र बना रही है।

कर्मवाच्य–जिन वाक्यों में क्रिया का मुख्य विषय कर्म होता है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। कर्मवाच्य में सकर्मक क्रिया होती है। क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुरूप होता है; जैसे–सूरज ने पुस्तक पढ़ी थी। चंचल ने चित्र बनाया था।

भाववाच्य–जिन वाक्यों में क्रिया का मुख्य विषय भाव होता है, उसे भाववाच्य कहते हैं। भाववाच्य में सदा अकर्मक क्रिया होती है। क्रिया सदा पुल्लिग, अन्य पुरुष और एकवचन में होती है; जैसे–पत्र भेज दिया गया था। कैदियों को छोड़ दिया जाएगा।

(ख) **पूर्ण भूतकाल**–क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के पूरे हो जाने का बोध हो, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे–मैंने खाना खा लिया था। ईशा विद्यालय चली गई थी।

अपूर्ण भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से बीते समय में क्रिया की समाप्ति का बोध न हो, उसे अपूर्ण भूतकाल कहा जाता है; जैसे–वर्षा हो रही थी। बच्चे खेल रहे थे।

(ग) क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। जैसे–वह सुबह से गया हुआ है।

3. निम्नलिखित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता, कर्म तथा भाव है, उसे **वाच्य** कहते हैं।

(ख) क्रिया के जिस रूप से कुछ ही समय पहले क्रिया के होने का बोध हो, उसे **आसन्न भूतकाल** कहते हैं।

(ग) क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का बोध हो, उसे **काल** कहते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों में अकर्मक अथवा सकर्मक क्रिया में से कौन-सी क्रिया का प्रयोग हुआ है–

(क) बच्चा पार्क में खेल रहा है। **सकर्मक**

(ख) वह अभी तक पढ़ रहा है। **अकर्मक**

(ग) रुचि ने निबंध लिखा है। **सकर्मक**

5. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया का काल पहचानकर लिखिए–

(क) हम नये-नये कपड़े लेंगे। **भविष्यत् काल**

(ख) हम रोज सुबह सैर पर जाते हैं। **वर्तमान काल**

(ग) कल हमने क्रिकेट मैच देखा था। **भूतकाल**

6. निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य से निर्देशानुसार कर्मवाच्य अथवा भाववाच्य में बदलिए–

(क) मैं अधिक दौड़ नहीं सकता।

भाववाच्य **मुझसे अधिक दौड़ा नहीं जाता।**

(ख) उमाकांत गृह-कार्य कर रहा है।

भाववाच्य **उमाकांत से गृह-कार्य हो रहा है।**

(ग) रमाकांत नहीं पढ़ता।

कर्मवाच्य **रमाकांत से नहीं पढ़ा जाता।**

7. निम्नलिखित वाक्य को भूतकाल के सभी रूपों में लिखिए–

(क) संदिग्ध भूतकाल – **अनवर खेला होगा।**

(ख) आसन्न भूतकाल – **अनवर खेला है।**

(ग) पूर्ण भूतकाल – **अनवर खेलता था।**

8. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓)

9. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (1) सकर्मक क्रिया (ख) (1) अकर्मक क्रिया

13. क्रियाविशेषण (अव्यय)

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं–1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण 2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण 3. कालवाचक क्रियाविशेषण 4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण।

(ख) **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**–जिस अव्यय शब्द से क्रिया की मात्रा का ज्ञान हो, उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–बेटा, थोड़ा-सा खाना खा लो।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) क्रियाविशेषण का अर्थ है–क्रिया + विशेषण अर्थात् क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाला। अतः वे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए–

1. वह धीरे-धीरे चलता है। 2. श्रेया अंदर बैठी पढ़ रही है।
3. दादा जी प्रतिदिन घूमने जाते हैं। 4. रोहन दिन-भर सोता रहा।

उपर्युक्त वाक्यों में धीरे-धीरे, दिन-भर, अंदर तथा प्रतिदिन शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं, अतः ये शब्द क्रियाविशेषण हैं।

(ख) **रीतिवाचक क्रियाविशेषण**–जिस शब्द से किसी क्रिया के होने की रीति का बोध होता है, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–योगेश ने मन लगाकर पढ़ाई की थी।

(ग) **स्थानवाचक क्रियाविशेषण**–जिस शब्द से किसी क्रिया के होने के स्थान अथवा दिशा का बोध होता है, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–सर्वेष पीछे बैठा है।

(घ) **कालवाचक क्रियाविशेषण**–जिस शब्द से किसी क्रिया के होने का समय पता चले, उसे कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–पुनीत हैदराबाद से आज आया है।

3. उचित क्रियाविशेषण शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) मेरा जन्मदिन **कल** था।

(ख) राम लाल **लगातार** खाँसता रहता है।

(ग) दादा जी **प्रतिदिन** गीता पढ़ते हैं।

(घ) शिव मंदिर के **बाएँ** तरफ मनीष का घर है।

(ङ) वाणी **बहुत** बोलती है।

4. नीचे लिखे क्रियाविशेषण शब्दों के भेद बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) बार – **(स्थानवाचक)** राम दो घंटे से **बाहर** खड़ा है।

(ख) ध्यानपूर्वक – **(रीतिवाचक)** यह कार्य **ध्यानपूर्वक** करना।

(ग) कई – **(परिमाणवाचक) कई** बच्चे यहाँ खेलते हैं।

(घ) प्रतिदिन – **(कालवाचक)** राम **प्रतिदिन** योग करता है।

(ङ) थोड़ा – **(परिमाणवाचक) थोड़ा** दूध बिल्ली को दे दीजिए।
(च) तेज – **(रीतिवाचक)** चीता बहुत **तेज** दौड़ता है।
(छ) रात – **(कालवाचक)** कविता **रात** को दिल्ली जाएगी।
(ज) चारों ओर **(स्थानवाचक)** मेरे घर के **चारों ओर** खेत है।

5. नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाविशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनका भेद लिखिए–
(क) शिवम् आज ही आया है। **कालवाचक क्रियाविशेषण**
(ख) तीन बजे छुट्टी होगी। **कालवाचक क्रियाविशेषण**
(ग) सुरभि बहुत बोलती है। **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**
(घ) घर के आस-पास गंदगी मत फैलाओ। **स्थानवाचक क्रियाविशेषण**
(ङ) दिन-भर खेलते रहते हो, थोड़ी पढ़ाई भी किया करो। **कालवाचक क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**
(च) शायद आज वर्षा होगी। **कालवाचक क्रियाविशेषण**
(छ) जल्दी-जल्दी चलो वरना रेलगाड़ी छूट जाएगी। **रीतिवाचक क्रियाविशेषण**

6. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–
(क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✗) (ङ) (✗)

7. रेखांकित शब्दों के लिए सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–
(क) (2) रीतिवाचक
(ख) (1) स्थानवाचक
(ग) (1) कालवाचक
(घ) (1) रीतिवाचक
(ङ) (2) कालवाचक

14. संबंधबोधक (अव्यय)

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–
(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के पशचात प्रयुक्त होकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।
(ख) संबंधबोधक शब्दों को विभक्ति के अनुसार विभाजित किया जाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–
(क) कई ऐसे शब्द होते हैं जो क्रियाविशेषण भी हैं और संबंधबोधक भी; जैसे–यहाँ, पहले आदि।
जब इनका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के साथ होता है, तब ये संबंधबोधक होते हैं और जब ये क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, तब क्रियाविशेषण।
उदाहरण–रमेश यहाँ रहता है। (क्रियाविशेषण)
में अपने मामा के यहाँ रहता हूँ। (संबंधबोधक)
(ख) के कारण, के पास, के पीछे, के नीचे, के द्वारा।
(ग) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के पशचात प्रयुक्त होकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।
(घ) संबंधबोधक का शाब्दिक अर्थ है–संबंध + बोधक अर्थात् संबंध का बोध कराने वाला।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) पेड़ के ऊपर पक्षी बैठे हैं।

(ख) केवल स्वप्न देखने **से अच्छा** है कि कुछ करो।

(ग) विद्या **के बिना** जीवन व्यर्थ है।

(घ) विद्यालय **के बराबर में** पुस्तकालय है।

(ङ) सोचने **से कुछ नहीं होता** कुछ करना चाहिए।

(च) नाना जी **मेरे लिए** मिठाई लाए।

4. निम्नलिखित संबंधबोधक शब्दों से वाक्य बनाइए–

(क) के पहले – रमेश **के पहले** विजय यहाँ काम करता था।

(ख) के लिए – बबीता श्याम **के लिए** सेब लाई।

(ग) की ओर – लक्ष्य **की ओर** ही ध्यान लगाना चाहिए।

(घ) के पश्चात् – खाना खाने **के पश्चात** मुझे टहलना पसंद है।

(ङ) के योग्य – इस नौकरी **के योग्य** सिर्फ मीना है।

(च) की तरफ – मेरे घर **की तरफ** कोई पार्क नहीं है।

(छ) के साथ – राजू **के साथ** जय भी बाहर घूम रहा है।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) दो (ख) (iii) ताकि

15. समुच्चयबोधक (अव्यय)

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक एक ही जाति या स्थिति के वाक्यों को जोड़ता है।

(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को मुख्य वाक्य से मिलाते हैं।

(ग) समुच्चयबोधक योजक भी कहा जाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) ऐसे शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को आपस में जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अथवा योजक कहते हैं।

समुच्चयबोधक के दो भेद हैं–1. मसनाधिकरण समुच्चयबोधक 2. व्याधिकरण समुच्चयबोधक

समनाधिकरण समुच्चयबोधक–जो समुच्चयबोधक शब्द एक ही जाति या स्थिति के वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे–और, या, एवं, अतः, तथा इत्यादि।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक–जो समुच्चयबोधक एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को मुख्य वाक्य से मिलाते हें, उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे–शायद वह सावधानी बरतता तो दुर्घटना नहीं होती।

(ख) **समनाधिकरण समुच्चयबोधक**–जो समुच्चयबोधक शब्द एक ही जाति या स्थिति के वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे–और, या, एवं, अतः, तथा इत्यादि।

समनाधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद हैं–

1. **संयोजक**–जो समुच्चयबोधक दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने के अर्थ में आते हैं उन्हें संयोजक कहते हें; जैसे–प्रतिभा और सुकृति प्रतिदिन विद्यालय जाती हैं।
2. **विकल्पक**–जो समुच्चयबोधक शब्दों, वाक्यांशों अथव वाक्यों के बीच विकल्प का बोध कराते हैं, उन्हें विकल्पक या विकल्पसूचक कहते हैं; जैसे–परिश्रम करो अन्यथा फेल हो जाओगे।
3. **विरोधक**–जो शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को भेद प्रकट करते हुए मिलाते हें, उन्हें विरोधक कहते हैं; जैसे–मोहनीश निर्धन है किंतु ईमानदार है।
4. **परिमाणक**–जो समुच्चयबोधक पहले कहे गए कथन का परिणाम बताने के पूर्व प्रयुक्त होते हैं, उन्हें परिणामक कहते हैं; जैसे–अनिल बीमार था इसलिए यहाँ न आ सका।

(ग) व्यधिकरण समुच्चयबोधक के प्रमुख उदाहरण हैं–शायद, जो, अर्थात्, चूँकि आदि।

3. बॉक्स में दिए गए उचित समुच्चयबोधक शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) निधि बीमार है **इसलिए** विद्यालय नहीं गई।
(ख) चंचल ने पढ़ाई की थी **लेकिन** अच्छे अंक नहीं मिले।
(ग) वरुण सबका प्यार है **तथा** वह सभी को मान देता है।
(घ) राधा **और** काजल कक्षा की मॉनीटर हैं।
(ङ) अंकुर निर्धन है **किंतु** ईमानदार है।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से समुच्चयबोधक शब्दों को छाँटकर लिखिए–

(क) और (ख) क्योंकि (ग) कि (घ) मानो (ङ) या (च) अन्यथा।

5. निम्नलिखित समुच्चयबोधक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) वरन् पढ़ाई पर ध्यान दो **वरन्** अनुत्तीर्ण हो जाओगे।
(ख) तथापि वह सुंदर **तथापि** मूर्ख है।
(ग) यद्यपि खेत सूख गए **यद्यपि** वर्षा ठीक हुई थी।
(घ) बल्कि विजय काम नहीं करता **बल्कि** सोता रहता है।
(ङ) ताकि आप अभी निकल जाइए **ताकि** समय से पहुँच सकें।
(च) अर्थात् आप नहीं गए **अर्थात्** वहाँ अव्यवस्था हो गई होगी।

6. सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

(क) (i) दो शब्दों को (ख) (i) हर्षसूचक

16. विस्मयादिबोधक (अव्यय)

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) विस्मयादिबोधक शब्द वाक्यों के प्रारंभ में ही आते हैं।

विस्मयादिबोधक शब्दों के साथ विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग करना चाहिए।

(ख) हाय!, ओह!

(ग) अहा!, वाह!, खूब!, सावधान!, खबरदार!, हटो!, हे राम!, हाय! ओह!, हाँ-हाँ!, ठीक!, अवश्य!, हे! अरे! अहो!

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जो शब्द हर्ष, शोक, घृणा, भय, आश्चर्य आदि भावों को प्रकट करते हें, वे विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं।

(ख) अहा!, वहा!, खूब!, उत्तम!, सुंदर!

(ग) विस्मयादिबोधक शब्द वाक्यों में प्रारंभ में ही आते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए वाक्यों में उचित विस्मयादिबोधक शब्द लिखिए–

(क) **हाय!** मैं लुट गया।

(ख) **शाबास!** ऐसे ही अंक सदा लाया करो।

(ग) **आप!** तम अच्छा लेखे।

(घ) **ओह!** हमारी रक्षा करो।

(ङ) **क्या** आप यहाँ रहते हैं।

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) वाह! **– वाह!** कितनी सुंदर नदी है।

(ख) भागो! **– भागो!** कुत्ता का झुंड यहीं आ रहा है।

(ग) जिओ! **– जिओ!** ऐसे ही सफलता प्राप्त करो।

(घ) अरे! ओ! **– अरे!** उधर घर में कहाँ घुसे जा रहे हो।

5. सही मिलान कीजिए–

• भागो!	• संबोधन
• हटो!	• संबोधन
• ओह!	• हर्ष
• अरे!	• स्वीकृति
• जी!	• चेतावनी
• अहा!	• शोक

17. वाक्य-विचार

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) (ख) (ग) (घ) (ङ)

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) **विधेय**–वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। 'लड़की गाना गा रही थी' वाक्य में 'गाना गा रही थी' विधेय है।

(ख) **उद्देश्य**–वाक्य का वह अंश जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उद्देश्य कहलाता है; जैसे–लड़की गाना गा रही थी।

(ग) **सरल वाक्य**–इस वाक्य में एक ही क्रिया अथवा विधेय होता है; जैसे–अनुराग तो चला गया। आप हैदराबाद कब आ रहे हैं?

(घ) **मिश्र वाक्य**–एक स्वतंत्र उपवाक्य जब अन्य आश्रित उपवाक्यों से मिलकर एक वाक्य बन जाता है तो वह मिश्र वाक्य कहलाता है।
मिश्र वाक्य में एक वाक्य प्रधान वाक्य होता है एवं शेष वाक्य उस पर आश्रित होते हैं; जैसे–वह लड़की मिल गई जो मेले में खो गई थी।

(ङ) **विस्मयादिबोधक वाक्य**–जिन वाक्यों में आशचर्य, हर्ष, शोक, प्रशंसा, प्रेम तथा घृणा के मनोभाव या उद्‌गार व्यक्त होते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक अथवा उद्‌गारवाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे–धन्य हो प्रभु! आपने तो मेरे सारे कष्ट मिटा दिए।

(च) सार्थक शब्दों का वह क्रमबद्‌ध समूह जिसका कोई अर्थ निकलता हो, वाक्य कहलाता है।

(छ) अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) शब्दों के सार्थक समूह को **वाक्य** कहते हैं।

(ख) वाक्य के **दो** अंग होते हैं।

(ग) जिन वाक्यों में क्रिया के न होने का पता चले, उन्हें **अकर्मक** कहते हैं।

(घ) **इच्छावाचक वाक्य** के द्‌वारा बोलने वो की इच्छा, शुभकामना, आशीर्वाद आदि का बोध होता है।

(ङ) सरल वाक्य में एक विधेय और एक **उद्‌देश्य** होता है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का निशान लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✗)

5. निम्नलिखित वाक्यों के उचित भेद पर सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (1) विधानवाचक (ख) (2) आज्ञावाचक

(ग) (2) विस्मयादिबोधक (घ) (1) प्रश्नवाचक

6. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्‌देश्य और विधेय को अलग-अलग करके लिखिए–

	उद्‌देश्य	**विधेय**
(क)	**माली**	**ने पौधे लगाए।**
(ख)	**शास्त्री जी**	**ने ईमानदारी से काम किया।**
(ग)	**नेताजी सुभाषचंद्र बोस**	**ने देश के लिए बलिदान किया।**
(घ)	**रामचरितमानस**	**तुलसीदास जी की रचना है।**
(ङ)	**राजा दशरथ ने**	**श्रवण कुमार को मारा।**

7. सरल वाक्यों में बदलिए–

(क) जब धर्म की हानि होती है तब भगवान का अवतार होता है।

(ख) मीटिंग में देरी के करण मैं समय पर नहीं पहुँच सका।

(ग) मैं दिल्ली जाऊँगा तो उनसे मिलूँगा।

(घ) मुझे आपकी भेजी पुस्तक मिल गई।

(ङ) कविता ने कहा कि वह सविता से मिलेगी।

8. निम्नलिखित वाक्यों में से उप-वाक्य एवं आश्रित वाक्य अलग करके लिखिए–

(क) **प्रधान उपवाक्य**–जो व्यक्ति कटुभाषी होता है।
आश्रिम उपवाक्य–उसे कोई नहीं चाहता।

(ख) **प्रधान उपवाक्य**–ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया था।
आश्रिम उपवाक्य–सब जानते हैं।

(ग) **प्रधान उपवाक्य**–कर्म मनुष्य के अधिकार में है।
आश्रिम उपवाक्य–गीता में कहा गया है।

(घ) **प्रधान उपवाक्य**–जो व्यक्ति मधुरभाषी होता है।
आश्रिम उपवाक्य–उसे सभी चाहते हैं।

(ङ) **प्रधान उपवाक्य**–वे मुझे पसंद नहीं।
आश्रित उपवाक्य–जो लोग ईर्ष्या करते हैं।

9. निम्नलिखित प्रत्येक भेद का उदाहरण लिखिए–

(क) संदेहवाचक वाक्य – शायद राजू घर चला गय है।

(ख) इच्छावाचक वाक्य – आशा है आप स्वस्थ होंगे।

(ग) आज्ञावाचक वाक्य – तुरंत जाकर नहाओ।

(घ) प्रश्नवाचक वाक्य – क्या तम अभी भी मेरठ में रहते हो?

(ङ) संयुक्त वाक्य–जल्दी स्टेशन जाओ अन्यथा ट्रेन छूट जाएगी।

10. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) संदेहवाचक
(ख) (1) इच्छावाचक
(ग) (3) प्रश्नवाचक
(घ) (2) इच्छावाचक
(ङ) (3) आज्ञावाचक

18. विराम-चिह्न

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) लिखित भाषा में विराम को प्रदर्शित करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग होता है, उन्हें विराम-चिह्न कहा जाता है।

(ख) इस वाक्य में विस्मयादिबोधक और पूर्ण विराम का प्रयोग हुआ है।

(ग) इस वाक्य में प्रश्नवाचक चिह्न लगा है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) विराम का अर्थ है–रुकना।

जब हम अपने विचारों या मनोभावों को किसी के समक्ष व्यक्त करते हैं तो उसे प्रभावशाली ढंग से कहने के लिए कहीं-कहीं रुकते हैं। भाषा में इन्हीं भावों को व्यक्त करने के लिए लिखित रूप में विशेष चिह्न निर्धारित किए गए हैं, जिन्हें विराम चिह्न कहते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में स्पष्टता आती है। उदाहरण–रोको मत, जाने दो, यहाँ पर इस वाक्य से कोई भी भाव स्पष्ट नहीं हो रहा है। यदि इसे लिखा जाए रोका, मत जाने दो, तो इससे स्पष्ट होता है कि रुकने का संकेत किया गया है। इस प्रकार विराम-

चिह्न से भाषा में स्पष्टता आती है।

(ख) **प्रश्नसूचक (?)**–जिस वाक्य के द्वारा प्रश्न पूछा जाता है, उसके अंत में पूर्ण विराम के स्थान पर प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–किससे मिलना है? तुम कब आए?

(ग) **विस्मयसूचक (!)**–इसका प्रयोग हर्ष, शोक, घृणा तथा विस्मय आदि भावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों अथवा शब्दों के पश्चात् किया जाता है। संबोधन के लिए भी यही चिह्न संकेत देता है; जैसे–अरे वाह! आपने तो गाड़ी भी खरीद ली।

(घ) **अल्प विराम (,)**–'अल्प' का अर्थ है बहुत थोड़ा अर्थात् वाक्यों के बीच में जहाँ अर्ध विराम से भी कम समय रुकना होता है, वहाँ अल्प विराम चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे–प्रवीण, प्रदीप और प्रमोद तीनों दोस्त थे।

अर्ध विराम (;)–वाक्य के बीच में एक बात पूर्ण हो जाने पर जहाँ थोड़ा रुकना होता है, वहाँ अर्ध विराम चिह्न का प्रयोग होता है। इस चिह्न के संकेत पर पूर्ण विराम से आधी अवधि तक रुका जाता है। जैसे–गाड़ी का ब्रेक खराब है; अब मत चलाना।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) किसी शब्द का संक्षिप्त रूप लिखते समय **लाघव** चिह्न का प्रयोग करते हैं।

(ख) किसी से प्रश्न पूछे जाने पर **प्रश्नवाचक** चिह्न लगाया जाता है।

(ग) हर्ष, शोक आदि भाषाों को प्रकट करने के लिए **विस्मयसूचक** लगाया जाता है।

(घ) दो शब्दों को जोड़ने के लिए **योजक** चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ङ) विराम चिह्न के प्रयोग से भाषा में **स्पष्टता** आती है।

4. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए–

(क) दादा जी बाजार से गेंद, गुड़िया, गुब्बारे आदि लाए।

(ख) महाराज! आपकी जो आज्ञा हो।

(ग) महातमा बुद्ध ने कहा, ''अहिंसा परम धर्म है।''

(घ) राजस्थान : एक सांस्कृतिक अध्ययन।

5. निम्नलिखित विराम चिह्नों का उनके उचित नाम से मिलान कीजिए–

(क) ।	कोष्ठक	(ख) ;	विस्मयादिबोधक
(ग) ?	त्रुटिपूरक	(घ) ()	कोष्ठक चिह्न
(ङ) 0	पूर्ण विराम	(च) ^	अर्ध विराम
(छ) !	प्रश्नवाचक	(ज) (), [] {}	लाघव

6. नीचे दिए गए विराम-चिह्नों के नाम लिखिए–

(क) ()	कोष्ठक	(ख) ,	अल्पविराम
(ग) ;	विवरण चिह्न	(घ) ;	अर्द्धविराम
(ङ) !	विस्मयादिबोधक	(च) ?	प्रश्नवाचक
(छ) '' ''	उद्धरण चिह्न	(ज) ^	त्रुटिपूरक
(झ) 0	लाघव चिह्न	(ञ) –	योजक

7. निम्नलिखित विराम-चिह्नों को प्रयोग करके वाक्य बनाइए–

(क) ; सर्दी बहुत है, कुछ पहन लो।

(ख) – सीता-गीता बहने हैं।
(ग) '' '' उसने कहा, ''मैं नहीं आऊँगी''।
(घ) ? यहाँ क्यों खड़े हो?
(ङ) () यह वक्त (समय) ठीक नहीं है।
(च) ! वाह! अति सुंदर।
(छ) ; गाड़ी खराब है; रुक जाओ।
(ज) , मैं, अजय, राजेश व रमेश आए हैं।
(झ) । वह जा चुका है।
(ञ) ^ आप कब आए?
(ट) आज हमारे विद्यालय में क्रिकेट मैच खेला गया। () एक बजे जब मैच का जलपान काल चल रहा थ तो कुछ विद्यार्थियों में झगड़ा हो गया। झगड़ा इतना बढ़ा कि बात प्रधानाचार्य जी तक पहुँच गए। () यह मैच डी० पी० एच० एवं आ० प० स्कूल की छठवीं कक्षा के मध्य था।
(ठ) (.....) – तूफानों की ओर बढ़ो दे .....

19. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) 'घर का भेदी लंका ढाए' का प्रयोग तब किया जाता है, जब अपना व्यक्ति ही भेद को शत्रु के सामने उजागर करके हमें हानि पहुँचाता है।
(ख) 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना' का अर्थ है अपनी तारीफ स्वयं करना।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है तो उसे मुहावरा कहते हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा रोचक, सरल तथा प्रभावशाली हो जाती है।
(ख) लोकोक्ति शब्द दो शब्दों के मेल से बना है–लोक + उक्ति, अर्थात् लोगों में प्रचलित कहावतें लोकोक्तियाँ कहलाती हैं। लोकोक्तियों के प्रयोग के प्रयोग से भाषा सुंदर, स्पष्ट, आकर्षक तथा प्रभावपूर्ण हो जाती है। जैसे–अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत–समय बीतने पर पछताना व्यर्थ है।
(ग) मुहावरे वाक्य का अंग होते हैं जबकि लोकोक्तियाँ स्वतंत्र वाक्य होती हैं। मुहावरे के अंत में क्रिया होती है जबकि लोकोक्तियों में ऐसा नहीं होता।
उदाहरण–'अंग-अंग ढीला होना' यह मुहावरा है।
'खोदा पहाड़ निकली चुहिया' यह एक लोकोक्ति है।

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए–

(क) घी के दीए जलाना – **(बहुत प्रसन्न होना)** बेटे के अफसर बनने पर माँ ने **घी के दीए जलाए**।
(ख) अगर-मगर करना – **(बहाना बनाना)** उधारी चुकानी के नाम पर वह **अगर-मगर करता है**।

(ग) चुल्लू भर पानी में डूब मरना – **(बहुत लज्जित होना)** अनुत्तीर्ण होने पर वह **चुल्लू भर पानी में डूब मरी**।

4. निम्नलिखित लोकोक्तियों को पूरा कीजिए–

(क) आगे कुआँ – **पीछे खाई**।

(ख) मान न मान – **मैं तेरा मेहमान**।

(ग) सौ सुनार की – **एक लुहार की**।

5. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए–

(क) दुर्जनों का साथ करने से सज्जन भी मुसीबत में पड़ जाते हैं।

(ख) चुगली करना।

(ग) बहुत कठिन आर्थिक स्थिति से जूझना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नलिखित वर्ग-पहेली में आए मुहावरों को छाँटिए और बताइए ये मुहावरे किन मूल्यों की ओर संकेत करते हैं।**

	मुहावरे	**मूल्य**
1.	नौ दो ग्यारह होना	भाम जाना
2.	नाक मुँह सिकोड़ना	अरूचि प्रकट करना
3.	नाको चने चबाना	बहुत कठिनाई आना
4.	अस्त हो जाना	असफल हो जाना
5.	आड़े हाथों लेना	सबक सिखाना

20. पत्र-लेखन

अभ्यास

1. विद्यालय में खेलकूद सामग्री उपलब्ध कराने के लिए अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य जी,

लाल बहादुर शास्त्री पब्लिक स्कूल,

पंजाबी मोहल्ला,

कानपुर।

दिनांक : 20 जुलाई, 20 .....।

विषय : विद्यालय में खेलकूद की सामग्री उपलब्ध कराने हेतु।

मान्यवर,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 6 का खेलकूद कप्तान हूँ; कुछ माह बाद अंतर जिला खेल-कूद प्रतियोगिता होनी है। हमारे पास आवश्यक खेल सामग्री का अभाव है, जिससे अभ्या करना संभव नहीं हे। आपे निवेदन है कि आप शीघ्र ही खेल सामग्री उपलब्ध कराएूं। हम आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

अनुभव चौधरी
कक्षा–छठी।

2. व्यायाम के लाभ बताते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,
क०ख०ग०
दिनांक : 10 अगस्त, 20.....
प्रिय अरुण,
प्रसन्न रहो।
मुझे पता चला है कि व्यायाम में कोई रुचि नहीं दिखाते। अधिकतर समय टी0वी0 देखने या किताबें ठीक व्यायाम से नहीं है। तुम्हें पढ़ाई के साथ-साथ व्यायाम पर अश्य ध्यान देना चाहिए।
व्यायाम से बहुत कुछ सीखा जाता है। संघर्ष, निर्णय, जोश आदि गुण व्यायाम से ही मिलते हैं। व्यायाम से सहयोग भावना का विकास होता है। सेहत भी अच्छी रहती है। अतः आज से ही व्यायाम में भाग लेना शुरू कर दो। परिवार में सभी तुम्हें बहुत परुार करते हैं।
तुम्हारा अग्रज
क०ख०ग०

3. कक्षा विभाग बदलवाने का आग्रह करते हुए अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखें।

सेवा में,
प्रधानाध्यापक महोदय,
जैन गुरुकुल,
पंचकुला (हरियाणा)
मानवीय महोदय,
निवेदन है कि मैं छठी कक्षा की 'क' विभाग में पढ़ता हूँ। मेरे गाँव के अधिकतर लड़के 'ख' विभाग में पढ़ते हैं। दोनों विभागों की पढ़ाई में बड़ा अंतर है। बीमारी के कारण मैं पढ़ाई में काफी पीछे रह गया थ। यदि आप मुझे 'क' विभाग से 'ख' विभाग में पढ़ने की आज्ञा दें, तेा मैं अपनी कमी पूरी कर सकता हूँ। 'ख' विभाग का मॉनीटर हमारे गाँव का है। वह पभी पढ़ाई में मेरी सहायता रक सकता हैं। आशा है आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

4. डाकिए की लापरवाही की ओर अधिकारियों का ध्यान एकत्रित कराने के लिए पत्र लिखिए।

सेवा में,
पोस्टमास्टर जी,
नगर डाक कार्यालय,
कानपुर
महोदय,
निवेदन है कि हमारे क्षेत्र का डाकिया चमन सिंह बड़ा ही आलसी व्यक्ति है। वह डाक ठीक समय पर नहीं बाँटता प्रायः देखने में आता है कि वह क्षेत्रवासियों की डाक इधर-उधर फेंक जाता है। हमारी डाक के साथ भी ऐसा ही होता रहता है।

अतः आपसे अनुरोध है कि अपने विभाग के इस कर्मचारी को चेतावनी दे दें कि वह भविष्य में सावधानी तथा सतर्कता में कार्य करे, जिसमें लोगों को इनकी डाक समय पर मिल सके।
धन्यवाद।
भवदीय
अभय प्रताप मिश्र
नेहरू नगर, कानपुर
दिनांक : .....

21. अपठित गद्यांश

1. सोचिए और बताइए–

(क) 'अपठित गद्यांश' का वास्तविक अर्थ है–ऐसा गद्यांश जिसका अध्ययन पहले कभी न किया हो।

(ख) अपठित गद्यांश के अभ्यास से रचनात्क क्षमता में वृद्धि होती है। ऐसे गद्यांश जो पहले न पढ़ा हो, अपठित गद्यांश कहलाता है।

2. निम्नलिखित अपठित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(i) खेल-कूद का ..... विकास हो सके।

(क) खेल-कूद का हमारे जीवन में अपना एक महत्व है। खेल-कूद से स्वास्थ्य तो बनता ही है तथा साथ-ही-साथ मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी गुण भी सीखता है।

(ख) सहयोग से काम करना, विजय मिलने पर अभिशाप न करना, हार जाने पर साहस न छोड़ना, विशेष धेयय के भीतर नियमपूर्वक कार्य करना आदि गुण दोनों के द्वारा अनायास सीखे जा सकते हैं। खेल के मैदान में केवल स्वास्थ्य ही नहीं बनता, अपितं मनुश्य भी बनता है। खिलाड़ी वे बातें अनायास सीख जाता है, जो उसे आगे चलकर नागरिक जीवन को सुलझाने में सहायता देती है।

(ग) खेल-कूद है।

(घ) शीर्षक–'खेलों का महत्व।'

(ii) वर्तमान काल में ..... संकल्प लेना चाहिए।

(क) वर्तमान काल में शिक्षा से नारी जगत में क्रांति आ गई है। कल तक जो रुढ़िवादी माता-पिता अपनी कन्याओं को शिक्षा दिलाने का विरोध करते थे, आज वे स्वयं अपनी कन्याओं को शिक्षा दिलाने के लिए आतुर रहते हैं। कन्या विद्यालयों की कमी को पूरा करने के लिए सहशिक्षा आरंभ की गई।

(ख) आज हम जिस शिक्षित नारी की छवि देखते हैं वह प्राचीन नारी से सर्वथा भिन्न है। आज की नारी पुरुष के समान जीवन के हर क्षेत्र में पदार्पण कर चुकी है।

(ग) आज की भारतीय नारी को अपने प्राचीन आदर्शों को न भूलकर, फैशन और आधुनिकता की चकाचौंध से दूर रहकर अपने पावन कर्तव्यों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए।

(घ) शीर्षक–'आधुनिक भारतीय नारी।'

(iii) आजकल मानव ..... कम हो जाती है।

(क) आजकल मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों को काटता जा रहा हे जिसके कारण जलवायु में परिवर्तन आया है, जमीन बंजर होने लगी है तथा प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है।

(ख) पौधे मिट्टी से खनिज लवण और पानी लेते हैं। मिट्टी पौधों की वृद्धि के लिए अति आवश्यक है। पौधों की जड़ें मिट्टी के कणों को जकड़े रहती हैं और उसे बह जाने से रोके रखती हैं। जमीन पर गिरे हुए पत्ते भी ऊपर की मिट्टी को पानी के साथ बहा ले जाते हैं। इसे मिट्टी का कटाव कहते हैं।

(ग) मिट्टी के कटाव से महत्वपूर्ण जैविक पदार्थ खो जाते हैं तथा भूमि बंजर हो जाती है।

(घ) शीर्षक–'वनों का विनाश।'

(iv) हमारे देश में ..... अलग-अलग तरीके हैं।

(क) हमारे देश में त्योहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाए जा रहे हों या नए वर्ष के आने की खुशी में, फसल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में हो या महापुरुषों की याद में, सभी अपनी विशेषताओं एवं क्षेत्रीय प्रभाव से युक्त हो के साथ ही देश की राट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता को मजबूती प्रदान करते हैं।

(ख) पूर्व जहाँ जनमानस में उल्लास, उमंग और ताजगी भर देते हें, वहीं कुछ पर्व हमारे अंदर देशभक्ति एवं गौरव की भावना के साथ-साथ विशव-बंधुत्व एवं संवय की भावना को बढ़ावा देते हैं।

(ग) कुछ पर्व हमारे अंदर देशभक्ति एवं गौरव की भावना के साथ-साथ विश्व-बंधुत्व एवं समंवय की भावना को बढ़ावा देते हैं। इसके माध्यम से महापुरुषों के उपदेश हमें हर वक्त इस बाल की याद दिलाते हैं कि सद्विचार और सद्भावना द्वारा ही हम प्रगति की ओर बढ़ सकते हैं।

(घ) इन त्योहारों के माध्यम से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि वास्तव में सभी धर्मों का मूल लक्ष्य एक ही है। सभी धम्रों के लिए उस लक्ष्य को पाने के अलग-अलग तरीके हैं।

22. निबंध-लेखन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) निबंध लेखन एक कला है, जिसके द्वारा लेखक अपने विचारों को अपनी भाषा-शैली में प्रकट करता है। निबंध का अर्थ है–भली-भाँति बाँधा हुआ।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) स्वयं कीजिए।

2. निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए–

(क) सत्संगति

अच्छे आचरण और व्यवहार वाले लोगों के साथ रहना ही सत्संगति है। मनुष्य का

जीवन अपने आस-पास के वातावरण से प्रभावित होता है। यदि उसे अच्छा वातावरण मिलता है, तो वह कल्याण के मार्ग पर चलता हे। दि वह दूषित वातावरण में रहता है, तो उसके कार्य भी उसे प्रभावित होते हैं।

'अच्छी संगति'। वास्तव में सत्संगति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है–'सत' और 'संगति' अच्छी संगति। सत्संगति का अर्थ है, ऐसे सत्पुरुषों के साथ निवास जिसके विचार अच्छी दिशा की ओर ले जाएँ।

सत्संगति के अनेक लाभ हैं। सत्संगति मनुष्य को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करती हैं। इससे दुष्ट व्यक्ति भी श्रेष्ठ बन जाते हें। पापी पुण्यात्मा ओर सज्जन दुराचारी हो जाते हैं। ऋषियों की संगति के प्रभाव से ही वाल्मीकि जैसे भयानक डाकू हान कवि बन गए। सज्जनों के पास शुद्ध मन तथा ज्ञान का विशाल भंडार होता है। उनके अनुभवों को प्राप्त करके मर्ख भी सुधार जाते हैं। सत्पुरुषों की संगति से मनुष्य के दुर्गुण दूर होकर, उनमें सदगुणों का विकास होता है।

जो विद्यार्थी अच्छे संस्कार वाले छात्रों की संगति में रहते हैं, उनका चरित्र श्रेष्ठ होता है एवं उनके सभी कार्य उत्तम होते हैं।

कुसंगति से लाभ की आशा करना व्यर्थ है। कुसंगति से पुरुष का विनाश निश्चित है। कुसंगति के प्रभाव से मनस्वी पुरुष भी अच्छे कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं। जो छात्र कुसंगति में फँस जाते हैं, वे अनेक व्यसन सीख जाते हें। जिनका उनके जीवन में बुरा प्रभाव पड़ता है।

उनका मस्तिष्क अच्छे-बुरे का भेद करने में असमर्थ हो जाता है। गलत दृष्टिकोण रखने के कारण ऐसे छात्र पतन के गर्त में गिर जाते हैं। पं0 रामचंद्र शुक्ल ने ठीक ही कहा है–

''कुसंगति का ज्वर सबसे भयानक होता है। यदि किसी युवापुरुष की संगति बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, उसे दिन-रात अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी, तो सहारा देने वाले बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की उठाती जाएगी।''

अतः मानव जीवन की सर्वांगीण उन्नति के लिए सत्संगति आवश्यक हे। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। केवल धार्मिक क्षेत्र क्षेत्र में सत्संगति नहीं है। सत्संगति जीवन के दूर क्षेत्र में भी संभव है। सत्संगति अच्छे-बुरे का विवेक प्रदान करती हे। इसके माध्यम से हम अपना लाभ कराने के साथ अपने देश के लिए भी एक उत्तरदायी तथा निष्ठावान नागरिक बन सकेंगे।

(ख) राष्ट्रीय एकता

हमारा देश महान है। यह ऐसा गौरवमय देश है जहाँ देवता भी जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं। हम अपनी मातृभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर मानते हैं। भारत की प्रशंसा में जयशंकर प्रसाद ने लिखा है–

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।

हमारे देश को पहले आर्यावर्त कहा जाता था। सिंधु नदी के कारण फारसी प्रभाव से इसे हिंदुस्तान तथा अंग्रेजी में इसे हिंदुस्तान तथा अंग्रेजी में इसे 'इंडिया' कहा जाने लगा।

भारत में अनेक विविधताएँ हैं। संसार में ऐसा कोई देश नहीं है जिसमें प्राकृतिक बनावअ, जलवायु, खान-पान, वेशभूषा तथा संसकृति की दृष्टि से इतनी विभिन्नताएँ हैं। भौगोलिक रचना के आधार पर हमारा देश मनमोहक हैं। इसके पर्वतीय प्रदेशों की हिम से ढकी पर्वतमालाएँ, दक्षिणी प्रदेशों के समुद्रतटीय नारियल के वृक्ष, गंगा-यमुना, सतलुज के मैदान में लहलहाते स्वर्ग बालियों से युक्त खेत तथा दक्षिण के पठारी प्रदेश प्रकृति की अनुपम देन हैं।

हमारे देश में अनेक राज्य हैं। हर राज्य में खान-पान, अलग-अलग पाया जाता है। यहाँ सभी धर्मों के लोग रहते हैं तथा सभी को अपने धर्म का पालन करने का पूर्ण अधिकार है। भारतीय बड़े उदार हैं। यहाँ 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना का सर्वत्र प्रसार मिलता है।

भाषा की दृष्टि से देश के विभिन्न प्रांतों की अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाएँ हैं, परंतु देश की राजभाषा हिंदी है, जिसे यहाँ की अधिकांश जनता समझती है।

देश के विभिन्न प्रांतों की लोक संस्कृति भी भिन्न है। प्रत्येक प्रांत की विविध सामाजिक परंपराएँ, लोक नृत्य व लोकगीत हैं। इनमें पूर्वोत्तर प्रदेशों के बाँस नृत्य, ब्रज का महारास, केरल के कथकली, हरियाणा के नृत्य, पंजाब के भाँगड़ा व गिद्दा, उड़ीसा के ओड़िसी तथा गुजरात के गरबा नृत्य सुप्रसिद्ध है।

इसके सबके बावजूद सभी देशवासियों में भारतीय संस्कृति के उच्च नैतिक मूल्य सन्निहित हैं। अपने-अपने धर्म को मानने के साथ-साथ सभी मानव धर्म को अपना मुख्य धर्म समझते हैं। परोपकार, त्याग के जितने सुंदर उदाहरण हमारे देश के महापुरुषों के मिलते हैं, शायद ही अन्यत्र मिलें। श्रीराम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, महर्शि दधीचि आज संपूर्ण मानव जाति के लिए आदरणीय एवं पूजनीय हैं। इनके अतिरिक्त, बड़े-बड़े प्रतापी सम्राट, विक्रमादित्य, चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, अकबर तथा महाराणा प्रताप, सम्राट शिवाजी जेसे महान वीर और रानी लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे, सरदार भगतसिंह, सुखदेव, अशफाक उल्लाह, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद जैसे महान स्वाधीनता सेनानी हमारे देश में पैदा हुए हैं।

भारत की संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है जिनके कारण हम विशव को ज्ञान दे सके और जगद्गुरु कहलाए। यहाँ की संस्कृति लंबी गुलामी के बाद भी जीवित है। इकबाल ने कहा भी है–

यूनान मिस्र रोमां, सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

इतनी विविधताओं के बावजूद हमारा देश एक है। यहाँ के लोगों ने जाति, वर्ग, धर्म, प्रांत, भाषा आदि के भेद को भुलाकर एक साथ आजादी की लड़ाई लड़ी और 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हआ। देश ने कृषि, विज्ञान, शिक्षा, उद्योग–हर क्षेत्र में प्रगति की। आज हम विश्व की छह बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक हैं। हमारा देश परमाणु शक्ति संपन्न है तथा अंतरिक्ष में अग्रणी देश है। भारत विश्व में सुख-शांति का पक्षधर है। वह सर्वजन सुखाय व सर्वजन हिताय की भाना में दृढ़ विश्वास रखता है तथा मानव-मानव में सद्भाव व प्रेम संचार करने में प्राचीन काल से ही कार्यरत है।

(ग) पर्यावरण-प्रदूषण

वर्तमान काल में वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ प्रदूषण की समस्या अत्यंत विकराल रूप धारण करती जा रही है। आज विश्व के अधिकांश देश प्रदूषण की चपेट में हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए उत्पादन में वृद्धि करना अनिवार्य हो गया है। उत्पादन-वृद्धि के लिए नित्य नए कल-कारखाने स्थापित किए जा रहे हैं। नगरों का विकास अंधाधुंध और बिना योजना के हो रहा है। इसी के परिणामस्वरूप प्रदूषण की समस्या उठ खड़ी हुई है।

यह प्रदूषण कई रूपों में दिखाई दे रहा है। इसके वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण आदि अनेक रूप हमारे सामने हैं। इनमें से सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला रूप है–वायु प्रदूषण। इसके अनेक कारण हैं। कल-कारखानों का दूषित एवं विषैला धुआँ वायुमंडल को दूषित कर रहा है। इसके अतिरिक्त पुराने वाहनों से अत्यधिक धुआँ निकलता है। यह धुआँ वायु को साँस लेने योग्य नहीं रहने देता। वृक्ष हमारे पर्यावरण की रक्षा करते रहे हें। वृक्षों को अंधाधुंध काटने के परिणामस्वरूप ही वाय प्रदूषण फैल रहा है। प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है देश की बढ़ती जनसंख्या। सन् 1947 में देश की जनसंख्या 33 करोड़ थी, वह अब बढ़कर एक अरब के आँकड़े को पार कर गई है। इस बढ़ती जनसंख्या का पेट भरने के लिए जंगल को काटकर कृषि योग्य भूमि बनाई गई, बाग-बगीचे काटकर बस्तियाँ बसाई गईं। अधिक आवासीय भवन बनने से जल-मल की निकासी तथा सफाई की व्यवस्था चरम गई है। इसके फलस्वरूप गंदगी बढ़ती चली जा रही है। वायु प्रदूषण के फलस्वरूप साँस के रोग बढ़ते चले जा रहे हैं।

जल प्रदूषण इसी का एक रूप है। कल-कारखानों का गंदा पानी नदियों में गिर रहा है। यहाँ तक कि गंगा नदी भी प्रदूषण का शिकार हो गई है। देश में पीने की भारी कमी होती जा रही है। जल स्रोत सूखते जा रहे हैं। जमीन के नीचे पानी लगातार कम होता जा रहा है। गरमियाँ आते ही पानी की समस्या बढ़ जाती है। जल प्रदूषण के कारण पेट की बीमारियाँ निरंतर बढ़ती चली जा रही हैं। इस पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। कल-कारखानों के गंदे पानी को नदियों में डालने से रोका जाए तथा नदियों की सफाई की व्यवस्था की जाए।

ध्वनि प्रदूषण से बहरेपन का खतरा उत्पन्न हो गया है। इससे हमारे मन-मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शहर की सड़कों पर दिन-रात दौड़ते वाहनों तथा कल-कारखानों का शोर ध्वनि प्रदूषण फैला रहा है। इससे दिल की बीमारियाँ आदि को बढ़ावा मिलता है। प्रदूषण आज की सबसे विकट समस्या है। इस पर नियंत्रण पाने के लिए प्रभावी कदम उठाने होंगे। अतः हम अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं।

(घ) दशहरा

त्योहार हमारे प्राचीन गौरव के प्रतीक हैं। इन्हीं त्योहारों के कारण हम अपनी परंपराओं, धार्मिक विश्वासों तथा संस्कृति से जुड़े रहते हैं। ये त्योहार हमारे अंदर नव-स्फूर्ति, नव-उल्लास तथा नव-उत्साह का संचार करते हैं। दशहरा उत्तर भारत में मनाया जाने वाला एक विशेष त्योहार है। इसे विजयदशमी भी कहा जाता है।

दशहरा या विजयदशमी का पर्व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से नवरात्रों का आरंभ होता है। नवरात्रों के दिनों में लोग उपवास रखते हैं।

दशहरे से श्रीराम की कथा जुड़ी हे। धार्मिक मान्यता के अनुसार इसी दिन अयोध्यापति दशरथ के पुत्र श्रीराम ने लंका के महाप्रतापी दैत्यराज रावण का वध किया था। श्रीराम की यह विजय अर्ध पर धर्म की विजय थी। इसी घटना की याद में दशहरे का आयोजन किया जाता है। बंगाल में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है।

उत्तर भारत में स्थान-स्थान पर श्रीरामकथा तथा रामलीलाओं का मंचन किया जाता है, जिन्हें देखने अपार जनसमूह उमड़ पड़ता हे। श्रद्धालु लोग नवरात्रों में उपवास रखते हैं तथा नौ दिनों तक भगवती दुर्गा की पूजा-अर्चना करते हैं। बंगल में दुर्गा पूजा का पर्व विशेष उल्लास से मनाया जाता है। वहाँ नौ दिनों तक पूजा के बाद स्थापित की गई दुर्गा की प्रतिमा को विजयदशमी के दिन समुद्र या नदी में विसर्जित कर दिया जाता है।

दशहरे के दिन श्रीराम, लक्ष्मण, सीता तथा वानर दल की झाँकियूं निकाली जाती हैं। इस शोभा यात्रा की सुंदरता देखते ही बनती है। एक बड़े मैदान में रावण, मेघनाद तथा कुंभकरण के विशालकाय पुतले जलाए जाते हें जिसमें श्रीराम-रावा युद्ध के प्रदर्शन के बाद आग लगाई जाती है। इन पुतलों में पटाखे तथा आतिशबाजी भरी रहती है, जे पुतलों में आग लगते ही बज उठते हैं। अपार जन समूह इस दृश्य को देखने उमड़ पड़ता है।

विजयदशमी का पर्व अधर्म पर धर्म की तथा असत्य पर सत्य की विजय का संदेश देता है तथा संदेश देता है कि अन्याय कभी न्याय से नहीं जीत सकता। अंत में न्याय, धर्म एवं सत्य की ही विजय होती है। हमें इस पर्व से प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम भी जीवन में श्रीराम के गुणों को अपनाने का प्रयास करें।

व्याकरण-7

खंड 'क' : व्याकरण

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) **मौखिक तथा लिखित भाषा में अंतर**

1. मौखिक भाषा आसानी से सीख सकते हैं, किंतु लिखित भाषा अभ्यास द्वारा ही आती है।
2. मौखिक भाषा में ध्वनियों को बोलकर मनुष्य अपने मनोभावों तथा विचारों को प्रकट करता है, किंतु लिखित भाषा में उन ध्वनि चिह्नों को लिखकर अपने मनोभावों तथा विचारों को प्रकट करता है।

(ख) **शब्द विचार**–इसके अंतर्गत शब्द-रचना तथा शब्दों के प्रकार के विषय में विचार किया जाता है।

(ग) हिंदी– **देवनारी**, अंग्रेजी – **रोमन**, पंजाबी – **गुरुमुखी**, बंगाली – **बंगाल**, कोंकणी – **देवनागरी**।

(घ) स्वयं कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करता है। भाषा के तीन रूप होते हैं–1. मौखिक भाषा, 2. लिखित भाषा।

(ख) किसी भाषा की मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप में प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों को लिपि कहते हैं।

(ग) व्याकरण वह शास्त्र है जिसके माध्यम से हम भाषा को शुद्ध रूप से बोलना तथा लिखना सीखते हैं। व्याकरण के तीन रूप होते हैं–1. वर्ण-विचर, 2. शब्द-विचार, 3. वाक्य-विचार।

(घ) प्रत्येक भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्याकरण का गहन अध्ययन करना आवश्यक है। व्याकरण के बिना भाषा का शुद्ध प्रयोग कर पाना असंभव है। व्याकरण से ही किसी भाषा में स्थिरता, शुद्धता तथा मानकता आती है।

(ङ) **मौखिक भाषा**–भाषा के जिस रूप से हम अपने मन के भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान बोलकर या सुनकर करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) भाषा केवल बातचीत का ही नहीं बल्कि ज्ञान-विज्ञान के **प्रचार** और **प्रसार** का भी साधन है।

(ख) मौखिक तथा लिखित भाषा के अलावा एक अन्य भाषा भी है–**सांकेतिक** भाषा।

(ग) नेपाली भाषा की लिपि **देवनागरी** है।

(घ) व्याकरण के माध्यम से हम भाषा को शुद्ध रूप से **लिखना** तथा **बोलना** सीखते हैं।

(ङ) **वर्ण-विचार** के अंतर्गत वर्णों के आकार, उच्चारण तथा व्यवस्था के बारे में विचार किया जाता है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

5. सही मिलान कीजिए–

भाषा	लिपि
• कश्मीरी	• रोमन
• हिंदी	• फारसी
• उर्दू	• बांग्ला
• पंजाबी	• देवनागरी
• बंगाली	• गुरुमुखी
• अंग्रेजी	• शारदा

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) मौखिक भाषा (ख) (i) लिखित भाषा (ग) (ii) मौखिक भाषा

(घ) (ii) मौखिक भाषा (ङ) (ii) मौखिक भाषा

7. दिए गए चित्रों को देखकर उनके नीचे लिखिए कि वे भाषा का कौन-सा रूप हैं?

1. मौखिक भाषा

2. मौखिक भाषा

3. मौखिक भाषा

4. मौखिक भाषा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **दी गई वर्ग-पहेली में लिपियों, विदेशी भाषाओं, भारतीय भाषाओं एवं बोलियों के नाम छुपे हैं। वर्ग-पहेली नामों को पूरा करके पहेली को हल कीजिए–**

अ	व	धी	म	
गु	वां		रा	व
रू	ग	सी	ठी	
मु	ला	उ	र्दू	ग
खी	मै	थि	लि	

अवधी
गुरुमुखी
बांग्ला
मैथिली
उर्दू
मराठी

2. वर्ण-विचार

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) दीर्घ स्वर में उच्चारण के लिए ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है।

(ख) हिंदी में 11 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं।

(ग) य्, र्, ल्, व् अंतःस्थ व्यंजन कहलाते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं।

(ख) जिन वर्णों का उच्चारण अन्य ध्वनियों की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से होता है, उन्हें 'स्वर' कहते हैं। स्वर के तीन भेद होते हैं–1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर

(ग) **अनुस्वार (ं)**–जिन वर्णों का उच्चारण करने में हवा केवल 'नाक' से निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। यह अपने प्रथम वर्ण पर बिंदी (ं) रूप में आता है। जैसे–हंस, मंद आदि।

अनुनासिक (ँ)–जिन वर्णों का उच्चारण करने में हवा 'नाक' और 'मुख' दोनों से निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। इन ध्वनियों के लिए चंद्रबिंदु (ँ) प्रयुक्त होता है। ये ध्वनियाँ अनुस्वार की अपेक्षा कोमल होती है; जैसे–आँखें, मुँह इत्यादि।

(घ) वर्णों के व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) वर्णों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

(ख) क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र **संयुक्त** व्यंजन होते हैं।

(ग) जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं।

(घ) स्वर **तीन** प्रकार के होते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) वर्णों की माला को (ख) (ii) तीन

(ग) (ii) तीन गुना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **अपने अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित पूर्ण कीजिए–**

स्वर	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
मात्रा-चिह्न	–, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ
मात्रा-प्रयोग	क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ
उदाहरण	कर, काम, किसान, कील, कुछ, कूप, गृह, केला, कैसा, कोयल, कौन

3. शब्द-विचार

अभ्यास

1. सोचिए, और बताइए–

(क) देशज शब्द का अर्थ है देश में उत्पन्न।

(ख) स्कूल का हिंदी शब्द विद्यालय है।

(ग) क्रियाविशेषण, संबंधबोधक और समुच्चयबोधक अविकारी शब्द कहलाते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) दो या दो से अधिक वर्णों के क्रमबद्ध और सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। **उदाहरण–**अजगर, इमारत आदि।

(ख) जो शब्द सार्थक अर्थ प्रदान करते हैं, इन्हें शब्द कहते हैं। जबकि जब शब्द का प्रयोग वाक्य में व्याकरण के नियमों के अनुसार होता है, तब वह पद कहलाता है।

(ग) **तत्सम शब्द–**वे शब्द जो संस्कृत भाषा के समान ही हिंदी में बिना किसी परिवर्तन के मूल रूप में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे–अग्नि, गुरु, पत्र, चंद्र आदि।

तद्भव शब्द–तद्भव अर्थात् 'उससे उत्पन्न'। संस्कृत के वे शब्द जिनका हिंदी में आते-आते रूप बदल जाता है, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–खेत, गाँव, पत्ता, चाँद इत्यादि।

(घ) **विकारी शब्द–**जिन शब्दों का रूप, वाक्य में प्रयोग के समय लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण बदलता रहता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हें। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया पदों को विकारी शब्द कते हैं।

अविकारी शब्द–जो शब्द वाक्य में प्रयोग करने पर लिंग,वचन, कारक और पुरुष के अनुसार नहीं बदलते हैं, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक शब्दों को अविकारी शब्द कहते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थान भरिए–

(क) जो शब्द लिंग, वचन काल के अनुसार बदलते हैं, उन्हें **विकारी** कहते हैं।

(ख) संस्कृत भाषा में ज्यों के त्यों हिंदी में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को **तत्सम** कहते हैं।

(ग) देशी बोलियों से हिंदी में आए शब्द **देशज** कहलाते हैं।

(घ) एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्दों को **अनेकार्थी** शब्द कहते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) वर्णों का सार्थक समूह (ख) (i) चार

(ग) (iii) तीन

6. निम्नलिखित के तीन-तीन उदाहरण लिखिए–

(क) रूढ़ – **जल, कल, आम**

(ख) यौगिक – **पाठशाला, विद्यालय, देवालय**

(ग) योगरूढ़ – **दशानन, रामानुज, हिमालय**

(घ) विदेशी – **किताब, तूफान, तलाक**

7. इन चित्रों को देखकर उनके तत्सम और तदभव रूप लिखिए–

बकरी/अजा

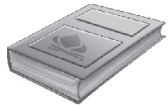

किताब/पुस्तक

आँख/नेत्र

कबूतर/कपूत

पेड़/पादप

भैंस/महिषी

घोड़ा/अश्व

बैल/वृष

8. तद्भव शब्द का तत्मस शब्द से मिलान कीजिए–

तद्भव	तत्सम
• माता/माँ	• कर्म
• माथा	• अंबा
• काम	• दुग्ध
• दूध	• मस्तक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नांकित वर्ग-पहेली में शब्दों और उनके पर्यायवाची शब्दों पर घेरा बनाकर लिखिए–**

शब्द	पर्यायवाची
शिव	महादेव
वानर	मर्कट
मानव	मनुष्य
नदी	सरिता
लड़ाई	युद्ध
अश्व	तुरंग
प्रकाश	आलोक
दिन	दिवस

म	हा	दे	व		म	अ	शि
म	र्क	ट	मा	प्र	नु	श	व
रो	ष		न	का	ष्य	व	
न	दी		व	श		क्रो	ध
	ल	ड़ा	ई		स	रि	ता
तु	रं	ग		यु	द्	ध	
	आ	लो	क		दि	व	स
दि	न			वा	न	र	

4. संज्ञा

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) स्वयं करें।

(ख) स्वयं करें।

(ग) हाँ, अच्छाई भाववाचक संज्ञा है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम को बोध कराते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के तीन भेद होते हैं–व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा भाववाचक संज्ञा।

(ख) जातिवाचक संपूर्ण जाति का बोध कराती है जबकि व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी विशेष व्यक्ति, स्थान आदि का बोध कराती है।

(ग) **जातिवाचक संज्ञा**–जो संज्ञा शब्द किसी संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–गाँव में विकास आवश्यक है। बच्चे गमले में पौधा लगा रहे हैं।

(घ) भाववाचक संज्ञाएँ पँच प्रकार के शब्दों से बनाई जाती हैं–1. जातिवाचक संज्ञा से 2. सर्वनाम से 3. विशेषण से 4. क्रिया से 5. अव्यय से।

(ङ) **जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना–**

इंसान – इंसानियत व्यक्ति – व्यतित्व कवि – कवित्व देव – देवत्व नेता – नेतृत्व

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थान भरिए–

(क) किसी वस्तु **व्यक्ति**, स्थान और **भाव** के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(ख) नींबू के रस में **खट्टास** होती है।

(ग) **गंगा** नदी सबसे पवित्र नदी है।

(घ) हमारी कक्षा में तीस **लड़के** और बीस लड़कियाँ हैं।

(ङ) हाथियों का **झुंड** नदी से पानी पी रहा था।

4. सही शब्दों पर सही (✓) तथा गलत शब्दों पर गलत (✗) क चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) जातिवाचक (ख) (iii) द्रव्यवाचक

(ग) (ii) जातिवाचक (घ) (ii) व्यक्तिवाचक

6. निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा का भेद लिखिए–

(क) लिखावट – **भाववाचक** (ख) कोलकाता – **व्यक्तिवाचक**

(ग) गरीबी – **भाववाचक** (घ) शेर – **जातिवाचक**

(ङ) सूर्य – **व्यक्तिवाचक** (च) परिवार – **समुदायवाचक**

(छ) दूध – **द्रव्यवाचक** (ज) चम्मच – **जातिवाचक**

(झ) पेड़ – **जातिवाचक** (ञ) कड़ाई – **भावाचक**

7. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए–

(क) सत्री – **स्त्रीत्व** (ख) लिख – **लिखावट**

(ग) पहरदार – **पहरेदारी** (घ) पीला – **पीलापन**

(ङ) नेता – **नेतृत्व** (च) युवा – **यौवन**

(छ) ब्राह्मण – **ब्राह्मणत्व** (ज) व्यक्ति – **व्यक्तित्व**

(झ) मनुष्य – **मनुष्यता** (ञ) प्रभु – **प्रभुता**

8. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए–

(क) अपना – **अपना** कार्य स्यं करना चाहिए।

(ख) बंगाली – **बंगाली** भाषा का साहित्य समृद्ध है।

(ग) विद्यालय – हमें प्रतिदिन **विद्यालय** जाना चाहिए।

(घ) तुलसीदास – **तुलसीदास** एक महान संत थे।

(ङ) कोलकाता – **कोलकाता** भारत का एक बड़ा महानगर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नलिखित कविता में संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए–**

देश को स्वस्थ बनाओ

सर ने पूछा,

''बोलो बबलू मास्टर,
नेता बनोगे या बनोगे डॉक्टर?''
सुनकर बबलू चकराया फिर सोच-समझकर मुसकाया
शासन से बोला, ''बनूँगा डॉक्टर, नेताओं
का इलाज करूँगा डाँटकर
कहूंगा अपनी तोंद घटाओ
आम आदमी के चेहरे पर
मुसकानों की लाली लाओ
कार नहीं लो, पैदल जाओ
प्रदूषण मुक्त सरकार चलाओ,
और देश को स्वस्थ बनाओ।''
प्रहला श्रीमाली–

5. शब्द-भंडार

1. सोचिए और बताइए–

(क) उपस्थित का विलोम है अनुपस्थित।

(ख) राज का अर्थ है–राज करना।
राज का अर्थ है–रहस्य।

(ग) अर्थ–मतलब, धन, कारण, प्रयोजन।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो भिन्न-भिन्न होते भी समान अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। इन्हें समानार्थी शब्द भी कहते हैं। जैसे–घर–गृह, सदन, भवन।

(ख) हिंदी भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, ऐसे शब्द अनेकार्थी कहलाते हैं। जैसे–जल-पानी, जलना।
जल ही जीवन है। आग में सब कुछ जल गया।

(ग) ऐसे शब्द जो अर्थ की दृष्टि से लगभग समान प्रतीत होते हैं, परंतु इन शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म अंतर होता है। भव तथा स्थिति के अनुसार इन्हें एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता है। ऐसे शब्दों को एकार्थक शब्द कहते हैं। जैसे–पत्नी–किसी व्यक्ति की विवाहिता स्त्री
स्त्री – कोई भी नारी।

(घ) परिणाम – फल पानी – जल प्राणम – नमस्ते पाणि – हाथ

(ङ) जो शब्द एक-दूसरे के उलटे अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) सर्दी में लकड़ियाँ इकट्ठी करके हमने **पावक** जलाई।

(ख) मोहन ने अपनी **तनया** का विवाह धूमधाम से किया।

(ग) मरते हुए व्यक्ति के मुँह में **भागीरथी** जल डाला गया।

(घ) सप्ताह में सात **वासर** होते हैं।

4. सही मिलान कीजिए–

• अन्न	• पवित्र
• आदी	• वायु
• अनिल	• अनाज
• जलज	• कमल
• दीन	• महादेव
• पावन	• अभ्यस्त
• सुत	• गरीब
• हर	• पुत्र

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) हस्त

(ख) (ii) अस्त

(ग) (iii) समान अवस्था वालों के लिए

(घ) (ii) स्वयं से बड़ों के अभिवादन के लिए

6. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) पुत्री – **तनया, बेटी**

(ख) निर्धन – **गरीब, दीन**

(ग) नारी – **महिला, अबला**

(घ) तलवार – **खडग, शमशीर**

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) वरदान – **अभिशाप**

(ख) कीर्ति – **अपकीर्ति**

(ग) ज्ञानी – **अज्ञानी**

(घ) उपस्थित – **अनुपस्थित**

8. निम्नलिखित शब्दों में से एकार्थक और अनेकार्थक शब्द चुनकर लिखिए–

एकार्थक – अध्यापक, रेडियो, संसद, इतिहास

अनेकार्थक – हार, उत्तर, अंक, आम

6. संधि

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) संधि का अर्थ है–मेल या जोड़ना।

(ख) विसर्ग संधि संस्कृत में ही प्रयुक्त होती है, हिंदी में नहीं।

(ग) यदि विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हो और उसके बाद क, ख, ट, ठ, प, फ हो तो विसर्ग ष् बन जाता है; जैसे–निः + कपट = निष्कपट।

(घ) संधि का खंडन संधि-विच्छेद कहलाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संधि का सामान्य अर्थ है–मेल या जोड़ना। जब दो शब्द पास आते हैं तो पहले शब्द की आखिरी ध्वनि और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि परस्पर मिल जाती हैं। इससे जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे–शिवालय = शिव + आलय = शिवालय।

(ख) संधि के तीन भेद हैं–1. स्वर-संधि 2. व्यंजन-संधि 3. विसर्ग-संधि।

(ग) **दीर्घ संधि–**भाव + अर्थ = भावार्थ, सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
वृद्धि संधि–एक + एक = एकैक, मत + ऐक्य = मतैक्य

(घ) विच्छेद का अर्थ है–अलग करना। जब किसी संधिस्थ शब्द को अलग-अलग किया जाता है अर्थात् संधि को खंडित किया जाता है, उसे संधि-विच्छेद कहते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) पहले शब्द के अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द के पहले वर्ण के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे **संधि** कहते हैं।

(ख) विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग** संधि कहते हैं।

(ग) दो स्वरों के मिलने से होने वाला विकार या बदलाव **स्वर संधि** कहलाता है।

(घ) संधि युक्त शब्दों को अलग-अलग करना **संधि विच्छेद** कहलाता है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

5. निम्नलिखित संधिस्थ शब्दों के उचित संधि-विच्छेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) महेंद्र = महा + इंद्र
(ख) निराशा = निः + आशा
(ग) संतोष = सम् + तोष
(घ) सन्मार्ग = सत् + मार्ग
(ङ) स्वच्छ = सु + अच्छ

6. नीचे दिए गए शब्दों में संधि कीजिए तथा संधि का नाम (स्वर संधि, व्यंजन संधि या विसर्ग संधि) भी बताइए–

(क) मनः + योग = **मनोयोग, विसर्ग संधि**
(ख) इति + आदि = **इत्यादि, स्वर संधि**
(ग) सम् + चय = **संचय, व्यंजन संधि**
(घ) भाव + अर्थ = **भावार्थ, स्वर संधि**

7. नीचे लिखे शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

(क) हरीच्छा = **हरि + इच्छा**
(ख) महर्षि = **महा + ऋषि**
(ग) सूक्ति = **सु + उक्ति**
(घ) स्वागत = **सु + आगत**
(ङ) प्रधानाचार्य = **प्रधान + आचार्य**
(च) दयानंद = **दया + आनंद**
(छ) लघूत्तर = **लघु + उत्तर**
(ज) धर्मार्थ = **धर्म + अर्थ**

8. संधि कीजिए–

(क) विद्या + आलय = **विद्यालय**
(ख) हिम + आलय = **हिमालय**
(ग) निः + संदेह = **निस्संदेह**
(घ) धर्म + आत्मा = **धर्मात्मा**
(ङ) जगत + नाथ = **जगन्नाथ**
(च) सहा + एक = **सहायक**
(छ) तपः + लाभ = **तपोलाभ**
(ज) सु + अच्छ = **स्वच्छ**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नलिखित कहानी को पढ़कर किन्हीं पाँच शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए–**

1. रामेशवर = राम + ईश्वर
2. देवालय = देव + आलय
3. महात्मा = महा + आत्मा
4. परमातमा = परम + आत्मा
5. संबंध = सम् + बंध।

7. समास

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) समस्त पद के पहले पद को पूर्व पद तथा दूसरे पद को उत्तर पद कहते हैं।

(ख) तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है।

(ग) 'से' तथा 'के द्वारा' विभक्ति का प्रयोग तत्पुरुष समास में किया जाता है।

(घ) समस्त पद में दो शब्द समास द्वारा जुड़े होते हैं, जबकि समास विग्रह में समस्त पद में जुड़े दोनों शब्दों को अलग-अलग किया जाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) समास का अर्थ है 'संक्षेप'। अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों के मेल द्वारा निर्मित नये शब्द को समास कहते हैं।

समास के मुख्यतः छः भेद हैं–

1. अव्ययीभाव समास– **उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
आजीवन	जीवन भर

2. तत्पुरुष समास– **उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
ग्रामगत	ग्राम को गया

3. द्वंद्व समास–**उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
अन्न-जल	अन्न और जल

4. बहुव्रीहि समास–**उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
गजानन	गज है आनन जिसका अर्थात् गणेश

5. कर्मधारय समास–**उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
नीलकमल	नीला है जो कमल

6. द्विगु समास–उदाहरण–

समस्त पद	**विग्रह**
चौराहा	चार राहों का समूह

(ख) कारक के अनुसार तत्पुरुष समास के छः भेद हैं–

कर्म तत्पुरुष–**उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
धनप्राप्त	धन को प्राप्त

करण तत्पुरुष– **उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
जन्मांध	जन्म से अंधा

संप्रदान तत्पुरुष–**उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
जेबखर्च	जेब के लिए खर्च

अपादान तत्पुरुष– **उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
धनहीन	धन से हीन

संबंध तत्पुरुष– **उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
कर्मशिक्षा	कर्म की शिक्षा

अधिकरण तत्पुरुष– **उदाहरण–**

समस्त पद	**विग्रह**
आत्मविश्वास	आत्मा पर विश्वास

(ग) **द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर**

द्विगु समास	**बहुव्रीहि समास**
द्विगु समास का पहला पद संख्याचक होता है और पहला पद दूसरे पद की संख्य बताता है।	
उदाहरण–त्रिलोचन तीन लोचनों का समूह	
	बहुव्रीहि समास में भी कई पहले पद संख्यावाचक होते हैं परंतु ये पद दूसरे पद से मिलकर तीसर विशेष पद की ओर संकेत करते हैं।
	उदाहरण–त्रिलोचन तीन है लोचन जिसके अर्थात् शिव।

(घ) **तत्पुरुष और कर्मधारय समास में अंतर**

तत्पुरुष समास	**कर्मधारय समास**
तत्पुरुष समास में दूसरा शब्द (पद) प्रधान होता है व विभक्ति का लोप हो जाता है।	कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य और उपमेय-उपमान का संबंध होता है।
उदाहरण–शरण को आया शरणागत	**उदाहरण–**घनश्याम–घन के समान श्याम।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) कम-से-कम शब्दों में संपूर्ण अर्थ प्रकट करना **समास** का मुख्य उद्देश्य है।

(ख) सामासिक शब्दों के संबंध को स्पष्ट करना **समास विग्रह** कहलाता है।

(ग) जिन समस्त पदों के दोनों पद प्रधान होते हैं और विग्रह करने पर 'और', 'तथा', 'एव', 'अथवा', 'या' आदि समुच्चयबोधकों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **द्वंद्व** समास कहते हैं।

(घ) तत्पुरुष समास में **दूसरा** पद प्रधान होता है।

(ङ) द्विगु समास का **पहला** पद संख्यावाचक होता है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) सर्वप्रिय (ख) (i) हंसवाहिनी

(ग) (ii) नीलकमल

6. निम्नलिखित विग्रहों के समस्त पद बनाइए–

	विग्रह	समस्त पद		विग्रह	समस्त पद
(क)	नरों में सिंह के समान	**नरसिंह**	(ख)	रूप और गुण	**रूप-गुण**
(ग)	रात और दिन	**रात-दिन**	(घ)	कम रूपी नयन	**कमलनयन**
(ङ)	देश के लिए भक्ति	**देशभक्ति**	(च)	दही में डूबा वड़ा	**दहीवड़ा**
(छ)	सात दिनों वाला	**साप्ताहिक**	(ज)	दश हैं आगन जिसके	**दशानन**
(झ)	स्वर्ग को प्राप्त	**स्वर्गीय**	(ञ)	चक्र को धारण करने वाला	**चक्रधर**

7. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए–

	समस्त पद	विग्रह	समास
(क)	गृहप्रवेश	**गृह में प्रवेश**	**तत्पुरुष समास**
(ख)	दाल-भात	**दाल और भत**	**द्वंद्व समास**
(ग)	अकालपीड़ित	**अकाल से पीड़ित**	**तत्पुरुष समास**
(घ)	त्रिलोक	**तीन लोकों का समूह**	**द्विगु समास**
(ङ)	चंद्रशेखर	चंद्रमा है **शिखर पर जिसके (शिव)**	**बहुव्रीहि समास**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **दिए गए चित्रों के लिए समस्तपद लिखिए और उनका विग्रह कीजिए। तत्पशचात उनके समास के नाम के खाने में हरा रंग तथा शेष खानों में लाल रंग भरिए–**

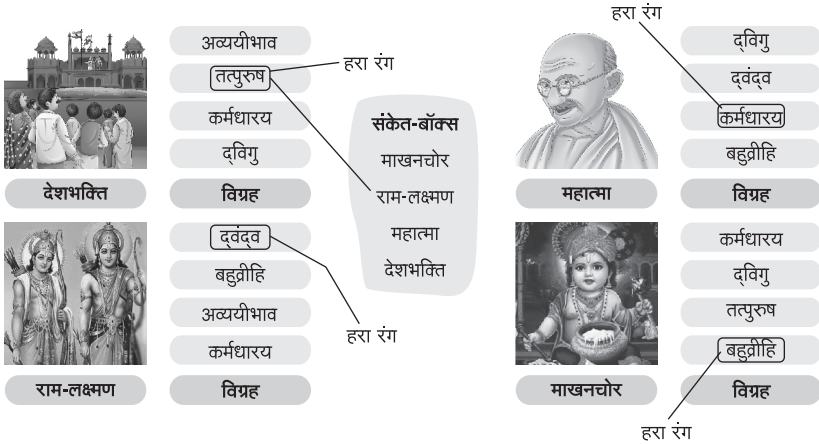

देशभक्ति देश के लिए भक्ति तत्पुरुष

महात्मा महान है जो कर्मधारण

राम-लक्ष्मण राम और लक्ष्मण द्वंद्व

माखनचोर माखन को चुराने वाला बहुव्रीहि

8. उपसर्ग

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) हिंदी भाषा में उपसर्ग का प्रयोग चार प्रकार से होता है।

(ख) उपसर्ग के चार भेद हैं।

(ग) अभि – अभिमान, अभिप्राय
बे – बेघर, बेकसूर

(घ) 'बा' उर्दू भाषा का उपसर्ग है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) ऐसे शब्द या शब्दांश जो किसी शब्द के प्रारंभ में जुड़कर या लगकर, उस शब्द के अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।
उदाहरण–कुरूप = कु + रूप अवशेष = अव + शेष
उपरोक्त सभी शब्द वाक्यों से जुड़कर बने हैं; जैसे–कु, अ, अव, उप में क्रमशः रूप, ज्ञान, शेष, योग जुड़कर अर्थ में परिवर्तन आ गया है। ऐसे शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं।

(ख) हिंदी भाषा में उपसर्ग के चार भेद हैं–
1. संस्कृत के उपसर्ग 2. हिंदी के उपसर्ग 3. उर्दू के उपसर्ग 4. उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होने वाले अव्यय
उदाहरण–
1. संस्कृत के उपसर्ग – उपमंत्री, उपजाति, उपहास, उपचार, उपवन।
2. हिंदी के उपसर्ग – अछूत, अनाथ, अपरिचित।
3. उर्दू के उपसर्ग – दरमियान, दरअसल, दरकिनार, दरकार।
4. उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होने वाले अव्यय – बहिरंग, बहिर्गमन, बहिर्मुख।

(ग) उपसर्ग शब्द 'उप' तथा 'सर्ग' दो शब्दों के सार्थक मेल से बना है।

(घ) दर, हम, कम, वे, बा, गैर आदि उर्दू के कुछ उपसर्ग है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) **अपकार** संतों का गुण है।

(ख) **प्रतिकूल** परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

(ग) आजकल देश में शिक्षा का काफी **प्रचार** हो रहा है।

(घ) जीवन में सदा **उन्नति** के मार्ग पर बढ़ते रहो।

(ङ) अनेक वर्षों के संघर्ष के पश्चात् देश **स्वतंत्र** हुआ।

(च) उपसर्ग शब्द या **शब्दांश** होते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓) (च) (✗)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) संस्कृत भाषा का
(ख) (iii) संस्कृत भाषा का
(ग) (ii) अंग्रेजी भाषा का
(घ) (i) शब्दांश है
(ङ) (i) शब्द से पहले लगता है

6. निम्नलिखित शब्दों में से शब्द और उपसर्ग अलग कीजिए–

		मूल शब्द	उपसर्ग
(क) पुनर्निर्माण	=	**निर्माण**	**पुनर्**
(ख) बहिर्मुख	=	**मुख**	**बहिर्**
(ग) प्रतिनिधि	=	**निधि**	**प्रति**
(घ) अधिपति	=	**पति**	**अधि**
(ङ) दुर्गुण	=	**गुण**	**दुर्**
(च) सुनीति	=	**नीति**	**सु**
(छ) परिक्रमा	=	**क्रमा**	**परि**
(ज) सज्जन	=	**जन**	**सत्**
(झ) गैर सरकारी	=	**सरकारी**	**गैर**
(ञ) अंतर्राष्ट्रीय	=	**राष्ट्रीय**	**अंतर्**

7. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए–

(क) अप = **अपमन, अपकार**
(ख) दुर् = **दुर्गुण, दुर्मुख**
(ग) सह = **सहर, सहयात्री**
(घ) उप = **उपमंत्री, उपकार**
(ङ) खुश = **खुशहाल, खुशबू**
(च) सम् = **संतोष, संचय**
(छ) ना = **नामुराद, नामहरम**
(ज) अति = **अत्यधिक, अत्याचार**
(झ) अन = **अनबन, अनजान**
(ञ) अब = **अबतक, अबसार**

8. निम्नलिखित शब्दों में दो भिन्न उपसर्गों का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए–

(क) जन = **सहजन, सज्जन**
(ख) यश = **अपयश, सुयश**
(ग) मान = **अपमान, कमान**
(घ) योग = **सुयोग, वियोग**
(ङ) चार = **लाचार, आचार**
(च) गुण = **दुर्गुण, सगुण**
(छ) देश = **विदेश, स्वदेश**
(ज) अध = **अधपका, अधखिला**

9. प्रत्यय

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) प्रत्यय और उपसर्ग दोनों ही शब्दांश हैं जो शब्द के साथ जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं। परंतु प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़ते हैं और उपसर्ग शब्द के प्रारंभ में।

(ख) **तद्धित प्रत्यय–**जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण इत्यादि के अंत में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

(ग) प्रत्यय हमेशा शब्दों के जुड़ते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं या नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

उदाहरण–टहल + ना = टहलना, तैर + आक = तैराक, दुकान + दार = दुकानदार, लेख + अक = लेखक

उपरोक्त शब्दों में 'ना', 'आक', 'दार' तथा 'अक' शब्दांशों के जुड़ने से नए शब्दों के निर्माण के साथ अर्थ में भी परिवर्तन हुआ है।

(ख) प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय।

1. **कृत् प्रत्यय**–ऐसे शब्दांश जो क्रिया के मूल रूप अर्थात् धातु के साथ लगकर संज्ञा और विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्दों को कृदंत कहते हैं; जैसे–मिल + आवट = मिलावट, चाल + आक = चालाक, सेठ + आनी = सेठानी, पढ़ + आई = पढ़ाई आदि।
2. **तद्धित प्रत्यय**–जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण इत्यादि के अंत में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–मित्र + ता = मित्रता, गरीब + ई = गरीबी, बूढ़ा + पा = बुढ़ापा इत्यादि।

(ग) **उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का साथ-साथ प्रयोग**

उदहारण–

उपसर्ग		**मूल शब्द**		**प्रत्यय**		**व्युत्पन्न शब्द**
अ	+	लिख	+	इत	=	अलिखित
अ	+	धर्म	+	इक	=	अधार्मिक
अ	+	समाज	+	इक	=	असामाजिक
उप	+	कार	+	ई	=	उपकारी
प्र	+	चल	+	इति	=	प्रचलित

(घ) **कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय में अंतर**

क्रिया-धातु के अंत में अक्षर/शब्दांश लगाकर जब शब्द बनाया जाता है तो वह अक्षर या शब्दांश कृत् प्रत्यय कहलाता है; जैसे–लिख + आवट = लिखावट। 'आवट' कृत् प्रत्यय है। जो शब्दांश संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण आदि शब्दों के अंत में लगकर नया शब्द बनाता है, वह तद्धित प्रत्यय कहलाता है; जैसे–चतुर + आई = चतुराई, आई तद्धित प्रत्यय है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) इस मंदिर का **पुजारी** कहीं गया है, इसलिए **पुजारिन** बैठी है।
(ख) सीता गा रही थी, मगर उसकी आवाज में **मिठास** नहीं थी।
(ग) राम बड़ा **पढ़ाकू** है, रात-दिन **पढ़ाई** में लगा रहता है।
(घ) प्रत्यय **दो** प्रकार के होते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✗)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) उपसर्ग
(ख) (ii) बाद में
(ग) (iii) तद्धित प्रत्यय
(घ) (iii) उपसर्ग-प्रत्यय दोनों के

6. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय अलग करके लिखिए–

		मूल शब्द	**प्रत्यय**
(क) सजावट	=	**सज**	**आवट**
(ख) थकान	=	**थक**	**आन**

(ग) चिकनाहट = **चिकना** **आहट**
(घ) बिकाऊ = **बिक** **आउ**
(ङ) दिखावा = **दिख** **आवा**
(च) चतुराई = **चतुर** **आई**

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नया शब्द बनाइए–

मूल शब्द		प्रत्यय	निर्मित
(क) लाहा	=	**आर**	**लुहार**
(ख) मुख	=	**इक**	**मौखिक**
(ग) नाच	=	**आ**	**नाचा**
(घ) प्यास	=	**ई**	**प्यासी**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **वर्ग-पहेली में खाली स्थान भरकर नए-नए शब्द बनाइए–**

प्रसार, निसार,
प्रखर, सार,
प्रजा, कुफल,
अन्य, मन,
अनुचर, नमन,
उपकार, फल,
नल

प्र	सा	र	अ	अ	नि
प्र	खा	र	प	प	सा
जा	अ	न	म	ना	र
अन्न	य	य	श	न	कु
अ	नु	च	र	म	फ
उ	प	का	र	न	ल

10. लिंग

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) नित्य पुल्लिग रहने वाले शब्दों का स्त्रीलिंग में परिवर्तन करने के लिए मादा शब्द को जोड़ा जाता है।
(ख) सब्जी – स्त्रीलिंग, चावल – पुल्लिग।
(ग) कोयल, पक्षी।
(घ) आगरा का ताजमहल पुल्लिग है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) लिंग शब्द का वास्तविक अर्थ है–पहचान।
संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

(ख) लिंग के दो भेद होते हैं–
पुल्लिग–जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन शब्दों को पुल्लिग कहते हैं; जैसे–शिक्षक, बेटा, माली, कवि, राजा, बैल, मोर आदि।
स्त्रीलिंग–जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं;

जैसे–शिक्षिका, बेटी, मालिन, कवयित्री, रानी, गाय, मोरनी आदि।

(ग) **पुल्लिंग**–शेर, सेठ, माता, लड़का, मोर।
स्त्रीलिंग–शेरनी, सेठानी, लड़की, मोरनी।

(घ) **लिंग परिवर्तन के नियम**
आ प्रत्यय – (अकारांत पुल्लिंग शब्दों में)
अध्यक्ष – अध्यक्षा आचार्या छात्र – छात्रा
आनी प्रत्यय – (अकारांत पुल्लिंग शब्दों में)
हिरन – हिरनी नौकर – नौकरानी सेठ – सेठानी

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थन भरिए–

(क) स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द **स्त्रीलिंग** कहलाते हैं।
(ख) पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द **पुल्लिंग** कहलाते हैं।
(ग) नदियों के नाम प्रायः **स्त्रीलिंग** कहे जाते हैं।
(घ) भाषाओं के नाम प्रायः **स्त्रीलिंग** कहे जाते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) स्त्रीलिंग (ख) (ii) पुल्लिंग
(ग) (ii) पुल्लिंग

6. नीचे लिखे वाक्यों के रेखांकित शब्दों का लिंग बदलकर फिर से वाक्य बनाइए–

(क) अध्यापिका छात्रों को पढ़ा रही हैं।
(ख) ग्वालिन दूध ले जा रही है।
(ग) फिल्म में अभिनेत्री का कार्य काफी अच्छा था।
(घ) मेरी माता कवयित्री हैं।

7. दिए गए प्रत्ययों को जोड़कर दो-दो स्त्रीलिंग शब्द बनाकर लिखिए–

(क) आ = **छात्रा, अध्यक्षा** (ख) इया = **चुहिया, चिड़िया**
(ग) ई = **मोटी, छोटी** (घ) आइन = **पंडिताइन, ठकुराइन**

8. निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिंग शब्दों पर गोला लगाइए–

(पंडित)	(छात्र)	बेगम
(बकरा)	(सम्राट)	(श्रीमान्)
(पति)	सास	(पाठक)
(गुड्डा)	देवरानी	(कवि)

9. नीचे लिखे रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) अध्यापिका छात्रों को पढ़ा रही हैं।
(ख) अध्यक्षा मंच पर भाषण दे रही हैं।
(ग) महिला किसान खेत में काम कर रही है।
(घ) कवयित्री ने एक कविता पढ़ी।

10. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

(क) बादशाह **मल्लिका**
(ख) गिलहरी = **नर गिलहरी**
(ग) कछुआ = **मादा कछुआ**
(घ) बिच्छू = **मादा बिच्छू**
(ङ) अध्यापक = **अध्यापिका**
(च) बेटा = **बेटी**
(छ) आत्मजा = **आत्मज**
(ज) गाय **बैल**

11. वचन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) बाल शब्द बहुवचन में प्रयोग होता है।

(ख) कुछ संज्ञा शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है; जैसे–प्राण, आँसू, समाचार, लोग, हस्ताक्षर, रोग इत्यादि।

(ग) ऋतुएँ शब्द बहुवचन में प्रयोग होता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) शब्दों के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

(ख) कुछ संज्ञा शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है; जैसे–प्राण, आँसू, समाचार, लोग, हस्ताक्षर, रोग इत्यादि।

(ग) एकवचन द्वारा केवल एक वस्तु या प्राणी का बोध होता है; जैसे–महिला, बेटा। बहुवचन द्वारा एक से अधिक वस्तु या प्राणियों का बोध होता है; जैसे–महिलाएँ, जूते आदि।

(घ) **एकवचन**–शब्द के जिस रूप से किसी रूप से किसी भी व्यक्ति या वस्तु के एक होने का बोध होता है; उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–बिल्ली कुर्सी लड़की कौआ।

बहुवचन–शब्द के जिस रूप से किसी भी व्यक्ति या वस्तु के एक से अधिक संख्या में होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–बिल्लियाँ, कुर्सियाँ, लड़कियाँ, कौए।

3. बॉक्स में दिए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) **पड़ोसी** को जल्दी बुलाओ, घर में चोर घुस आया है।

(ख) 'हे **कवि**! आप मंच पर पधारिए।'

(ग) इस देश को रखना मेरे **बच्चों**! सँभाल के।

(घ) **माता** और **बहन** हम आपका स्वागत करते हैं।

4. अधोलिखित शबदों के बहुवचन रूप लिखिए–

(क) प्रिय = **प्रियजन**
(ख) सैनिक = **सेना**
(ग) विद्यार्थी = **विद्यार्थीगण**
(घ) बुढ़िया = **बुढ़ियाँ**
(ङ) गाड़ी = **गाड़ियाँ**
(च) कर्मचारी = **कर्मचारी वर्ग**
(छ) गरीब = **गरीबजन**
(ज) साधु = **साधुवृंद**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) पुस्तक (ख) (ii) विद्यार्थीगण

(ग) (ii) आकाश

6. रंगीन शब्द को बहुवचन में बदलकर नीचे लिखे वाक्यों को दोबारा लिखिए–

(क) डॉक्टरों ने रोगी को दबाई दी। (ख) कुत्ते भौंक रहे हैं।

(ग) पेड़ पर चिड़ियाँ बैठी हैं। (घ) उसकी बेटियाँ खाना खा रही हैं।

7. अधोलिखित अंत वाले बहुवचन शब्द लिखिए–

ए	एँ	याँ	ए	एँ	याँ
लड़के	महिलाएँ	बुढ़ियाँ	कपड़े	व्यथाएँ	कुटियाँ
बेटे	कथाएँ	चिड़ियाँ	पत्ते	विधाएँ	डिबियाँ

8. निम्नलिखित शब्दों के सही बहुवचन रूप पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) प्रियजन (ख) गरीब लोग (ग) अलमारियाँ

(घ) दवातें (ङ) मताएँ (च) खिड़किों

(छ) गाएँ (ज) पुस्तकें

9. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर वचन तथा वचन की पहचान का आधार लिखिए–

	वचन	पहचान का आधार
(क) मोर नाच रहे हैं।	बहुवचन	क्रिया
(ख) वृद्धजन सम्मान के पात्र हैं।	बहुवचन	'जन' प्रत्यय
(ग) प्रधानाचार्य जी आ रहे हैं।	एकवचन	संज्ञा
(घ) शेर दहाड़ रहा है।	एकवचन	क्रिया

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **वर्ग-जाल में से एकवचन तथा उसके बहुवचन रूप को ढूँढ़कर लिखिए–**

एकवचन									बहुवचन
	क	मी	ज़ें	म	बा	ला	एँ	श	
कमीज	मी	ज्ञ	प	ग	ला	न	दि	याँ	कमीजें
बाला, गेंद	ज़	मी	नें	अ	स	दी	रू	फ	बालाएँ, गेंदें
डाली, गाथा	मी	च	क	प्र	जा	क्ष	गें	द	डलियाँ, गाथाएँ
जमीन	न	व	र	जा	उ	ख	दें	झ	जमीनें
प्रजा	डा	लि	याँ	ज	द	गा	था	एँ	प्रजाजन
नदी	ली	इ	थ	न	भ	था	ष	ऊ	नदियाँ

12. विशेषण

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) गहरा लाल रंग।

(ख) **गुणवाचक विशेषण**–जिस विशेषण शब्द से किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, आकार, रंग, स्वाद, स्पर्श, दशा जैसी विशेषताओं का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–सच्चे व्यक्तियों को सभी पसंद करते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

उत्तर प्रदेश भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है। यहाँ गंगा जैसी विशाल नदी बहती है। यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है। यहीं पर राम और कृष्ण का जन्म हुआ था।

(ख) विशेषण चार प्रकार के होते हैं–1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण।

1. **गुणवाचक विशेषण**–जिस विशेषण शब्द से किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, आकार, रंग, स्वाद, स्पर्श, दशा जैसी विशेषताओं का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–सच्चे व्यक्तियों को सभी पसंद करते हैं।
2. **संख्यावाचक विशेषण**–जिस विशेषण शब्द से किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–कुछ लोग बगीचे में टहल रहे हैं।
3. **परिमाणवाचक विशेषण**–संज्ञा/सर्वनाम शब्दों के माप-तोल या मात्रा का बोध कराने वाले विशेषणों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–पूजा दादी जी के लिए एक किलो आम लाई।
4. सार्वनामिक विशेषण–जब सर्वनाम शब्द विशेषण का काम करे तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। सामान्यतः ये किसी संज्ञा से पहले आकर उसकी ओर संकेत करते हैं, इसलिए इन्हें संकेतवाचक विशेषण भी कहा जाता है; जैसे–इन पुस्तकों को मेज पर रख दो।

(ग) **परिमाणवाचक विशेषण और संख्यावाचक विशेषण में अंतर**–संज्ञा/सर्वनाम शब्द दो प्रकार के होते हैं–(क) गणनीय, जिन्हें गिना जा सकता है और (ख) अगणनीय, जिन्हें हम गिन नहीं सकते। गणनीय संज्ञा/सर्वनाम का विशेषण संख्यावाचक होगा और अगणनीय का विशेषण परिमाणवाचक होगा; जैसे–

मेरे घर में पाँच कमरे हैं। (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)

दादा जी ने पाँच किलो सेब खरीदे। (परिमाणवाचक विशेषण)

(घ) **सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर**–सार्वनामिक विशेषण के बाद निश्चित रूप से किसी संज्ञा शब्द का प्रयोग होता है, तभी वह सार्वनामिक विशेषण बनता है। यदि सर्वनाम का प्रयोग किसी संज्ञा के बदले हुआ है और उसके बाद किसी संज्ञा शब्द का प्रयोग नहीं है तो वह सर्वनाम ही कहलाएगा; जैसे–वह लड़का क्यों दौड़ रहा है?

(ङ) विशेषण शब्द जिस संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उसे विशेष्य कहते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या के बारे में बताए, उन्हें **संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं।

(ख) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें **विशेषण** कहते हैं।

(ग) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण या माप-तोल के बारे में बताएँ, उन्हें **परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं।

(घ) वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा सेप हले आकर उसकी विशेषता बताएँ, उन्हें **सार्वनामिक विशेषण** कहते है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✗)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) दो (ख) (ii) निश्चित संख्यावचक

(ग) (ii) अनिश्चित परिमाणवाचक

6. निम्नलिखित में रंगीन शब्दों के विशेषण-भेद लिखिए–

वाक्य	विशेषण-भेद
(क) कुछ सित्रयाँ पनघट से पानी भरकर लौट रही थी।	**परिमाणवाचक विशेषण**
(ख) नेहा ने सुगंधित अगरबत्ती खरीदी।	**गुणवाचक विशेषण**
(ग) आकाश में चमकीले तरे अपनी छटा बिखेर रहे हैं।	**गुणवाचक विशेषण**
(घ) हरे-भरे पहाड़ पर बकरियाँ चर रही थी।	**गुणवाचक विशेषण**
(ङ) चालाक लोमड़ी ने कहा कि अंगूर खट्टे हैं।	**गुणवाचक विशेषण**

7. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए–

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
(क) परिवार	**पारिवारिक**	(ख) धन	**धनी**
(ग) इतिहास	**ऐतिहासिक**	(घ) अर्थ	**अर्थवान**
(ङ) वर्ष	**वार्षिक**	(च) नमक	**नमकीन**
(छ) ज्ञान	**ज्ञानी**	(ज) मीठा	**मिठास**
(झ) उदास	**उदासी**	(ञ) भारत	**भारतीय**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नांकित चित्र को देखिए तथा उचित विशेषणों से इस पर आधारित गद्यांश को पूर्ण कीजिए–**

नगर के बाहर मेला लगा है। मेले में **कई** दुकानें हैं। उन पर **तरह-तरह** का सामान मिलता है। मेले में **बड़े-छोटे** झूले लगे हैं। झूलों पर **सब** बच्चे झूल रहे हैं। **सब** बच्चे **नए** कपड़े पहनकर अए हैं। मेले में **एक** सरकस भी लगा है। पिताजी ने बताया कि सरकस का जोकर **रंगीन** पोशाक पहनकर सब को हँसता है।

13. कारक

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) कारक संज्ञा और सर्वनाम का संबंध अन्य शब्दों या क्रिया पदों के साथ प्रकट करता है।

(ख) यदि क्रियापद अकर्मक हो व वाक्य भूतकाल में ना हो तो कर्ता कारक ही विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है।

(ग) संबोधन कारक।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद होते हैं–कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

(ग) **करण कारक व अपादान कारक में अंतर**–करण कारक और अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'में' है, परंतु करण कारक में 'से' विभक्ति-चिह्न साधन के अर्थ में और अपादान कारक में अलग होने के अर्थ में प्रयोग किया जाता है; जैसे–
रमा ने पेंसिल से लिखा (साधन, करण कारक)
रमा पेड़ से गिर पड़ी। (अलग होना, अपादान कारक)

(घ) **अधिकरण कारक**–जो संज्ञा/सर्वनाम पद क्रिया क होने का आधार, स्थान या समय आदि का बोध कराता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं; जैसे–मैदान में लड़के खेल रहे हैं।

(ङ) **संबंध कारक**–एक संज्ञा/सर्वनाम पद का किसी दूसरे संज्ञा/सर्वनाम के साथ संबंध बताने वाला संबंध कारक कहलाता है। संबंध कारक का वाक्य की क्रिया के साथ सीधा संबंध नहीं होता। संबंध कारक के परसर्ग हैं–का, के, की, रा, रे, री, ना, नी, ने इत्यादि; जैसे–मेरा बेटा कॉलेज गया है।

(च) **संबोधन कारक**–संबोधन का भी सीधा संबंध वाक्य की क्रिया के साथ नहीं होता। जिस शब्द का प्रयोग किसी को बुलाने या सावधान करने के लिए किया जाता है, उसे संबोधन कहते हैं। संबोधन का कोई परसर्ग नहीं होता। इसके पहले हे, रे, अरे, भाई इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया जाता है या जिसे संबोधित किया जा रहा है, उसके नाम के स्वर को खींचकर बोला जाता है। जैसे–अरे भाई! कहाँ चले जा रहे हो?

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) बच्चे बस **में** विद्यालय जाते हैं।

(ख) श्याम पिता जी **से** पढ़ता है।

(ग) बच्चों ने मम्मी-पापा **के लिए** उपहार खरीदा।

(घ) दिव्या **की** बहन बीमार है।

(ङ) पक्षी आकाश **में** उड़ रहे हैं।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) कर्म कारक
(ख) (i) कर्ता कारक
(ग) (i) संबोधन कारक
(घ) (ii) संबंध कारक
(ङ) (ii) करण कारक

5. नीचे लिखे अनुच्छेद के खाली स्थानों को सही परसर्गों से भरिए–

कुछ ही दिनों **में** राजकमल **की** दुकान चल निकली और उस **ने** कई नौकर रख लिए। अब उस दुकान **पर** जाना उसने कम कर दिया। राजकमल **ने** सारा काम नौकरों **पर** छोड़ दिया। उस **की** इस लापरवाही **से** दुकान को धक्का लगा और व्यापार घटने लगा। अंततः खेती **की** तरह दुकान **से** भी उसका गुजारा होना मुश्किल हो गया और व्यापार ठप्प हो गया।

6. निम्नलिखित कारकों के सामने उनके विभक्ति चिह्न लिखकर और अभिषेक शब्द के सभी कारकों में एकवचन रूप लिखिए–

कर्ता	**ने**	**अभिषेक**
कर्म	**को**	**अभिषेक को**
करण	**से, के द्वारा**	**अभिषेक के द्वारा**
संप्रदान	**के लिए, को**	**अभिषेक को**
अपादान	**से**	**अभिषेक से**
संबंध	**का, के, की**	**अभिषेक का**
अधिकरण	**में, पर**	**अभिषेक पर**

7. नीचे लिखे वाक्यों के रेखांकित शब्दों के कारक बताइए–

(क) मोहन तो कार से स्कूल जाता है।	**करण कारक**
(ख) हे भगवान! कृपा कीजिए।	**संबोधन कारक**
(ग) यह खबर सुनते ही उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे।	**अपादान कारक**
(घ) मैदान में बच्चे खेल रहे हैं।	**अधिकरण कारक**
(ङ) मेरा बेटा आज स्कूल नहीं गया।	**संबंध कारक**

8. निम्नलिखित कारक चिह्नों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए–

(क) ने	मयूर **ने** खाना बनाया है।
(ख) से	बाजार **से** ब्रेड ले आओ।
(ग) से (अलग)	पेड़ **से** जामुन गिर रहे हैं।
(घ) की	रमा **की** बहन सुनीता है।
(ङ) पर	तुम **पर** मेरे पैसे उधार हैं।
(च) में	कुएँ **में** मेंढक है।

14. सर्वनाम

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) 'मैं' का बहुवचन 'हम' तथा 'मुझे' का बहुवचन 'हमें' होगा।

(ग) 'आप' शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम और निजवाचक सर्वनाम दोनों में प्रयोग होता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

नीचे दिए अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए एवं समझिए–

एक था लड़का निशांत। वह बहुत ही होनहार था, लेकिन दुर्भाग्य से वह गलत लोगों की संगत में पड़ गया उसने पढ़ना-लिखना तथा स्कूल जाना बिल्कुल ही छोड़ दिया। उसके माता-पिता उससे बहुत परेशान रहने लगे। उन्होंने उसे समझाया, लेकिन समस्या हल नहीं हुई कहते हें, जैसा करोगे वैसा ही भरोगे। निशांत अपनी वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ। अब उसकी आँखें खुल गईं। उसने अपने माता-पिता से क्षमा माँगते हुए कहा, ''अब मैं मन लगाकर पढ़ूँगा और भविष्य में कुछ ऐसा करूँगा कि जिससे आपका नाम रोशन हो।''

उपरोक्त अनुच्छेद में निशांत (संज्ञा-शब्द) के स्थान पर 'वह', 'उसने', 'उसे', 'उसके', 'उसकी', 'मैं' आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। निशांत के माता-पिता (संज्ञा शब्दों) के स्थान पर 'उन्होंने' का प्रयोग किया गया है। इन शब्दों को 'सर्वनाम' कहा जाता है।

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–

(क) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम (ख) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

(ग) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम।

(ग) **संबंधवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम शब्द प्रधान वाक्य के आश्रित वाक्य से संबंध जोड़ते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–जैसा-वैसा, जिसे-उसे, जिसने-उसने इत्यादि। **उदाहरण**–जो चोरी करेगा वही दंड का भागी होगा।

(घ) **निश्चयवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम पास या दूर की वस्तु, घटना या व्यक्ति की तरफ निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–यह, वह इत्यादि। **उदाहरण**–तुम्हारी पुस्तक यह नहीं वह है।

(ङ) **प्रश्नवाचक सर्वनाम**–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के विषय में प्रश्न पूछने के लिए होता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–कौन, क्या, किसे, किसने इत्यादि। उदाहरण–यह चित्र किसने बनाया है?

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग हों, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं।

(ख) जो सर्वनाम किसी निशिचत व्यक्ति, वस्तु या निशिचत घटना की तरफ संकेत नहीं करते, उन्हें **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

(ग) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हे, उन्हें **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

(घ) जो सर्वनाम शब्द, कर्ता अपने लिए (स्वयं, खुद, आप, अपने, आप) प्रयोग करता है, उसे **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

5. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन लिखे संज्ञा शब्दों के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग करके वाक्य पुनः लिखिए–

(क) सभी छात्र अपनी परीक्षा में तल्लीन है।

(ख) कविता अपनी सहेली के साथ पढ़ने जाती है।

(ग) श्याम ने विवेक से कहा कि उसके पिता आ गए हैं और उसे को बुला रहे हैं।

(घ) ललिता को न जाने क्या हो गया है? आजकल वह स्वयं स ही बातें करती रहती है।

(ङ) विकास ने शुभम की शिक्षिका से उसकी पुस्तिका माँगी।

(च) ओउम् ने अपने मित्रों से कहा उसे उसकी गेंद चाहिए।

(छ) नीता ने अपनी कार में अपनी और अपने बच्चों की पसंद का स्टरियो लगवाया।

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) सर्वनाम (ख) (ii) छः

(ग) (i) पुरुषवाचक (घ) (iii) मध्यम पुरुष

(ङ) (ii) निजवाचक

15. क्रिया

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं–प्रेरणार्थक क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, सामान्य क्रिया और पूर्वकालिक क्रिया।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या किए जान का, किसी व्यक्ति या वस्तु की स्थिति का या घटना के घटित होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।
क्रिया के दो भेद होते हैं–1. अकर्मक क्रिया, 2. सकर्मक क्रिया।

(ख) सकर्मक क्रिया के भेद–सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं–(क) एककर्मक क्रिया, (ख) द्विकर्मक क्रिया।

(ग) धातु–क्रिया का मूल रूप 'धातु' कहलाता है। जैसे–पढ़, दौड़, लिख, उठ, खा, खेल, हँस इत्यादि।

(घ) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**–जब कर्ता स्वयं कार्य करने में सम्मिलित हो, तो उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–माँ सब के लिए खाना बनाती हैं।
द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–शिक्षक विद्यार्थियों से अभ्यास करवाते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने की स्थिति का बोध हो, उसे **क्रिया** कहते हैं।

(ख) जब क्रिया का प्रभाव किसी अन्य पर न पड़कर स्वयं कर्ता पर पड़े उसे **अकर्मक क्रिया** कहते हैं।

(ग) जब क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पडकर कर्म पर पड़े तथा जिसके प्रयोग से कर्म को अनिवार्यता बनी रहे, उसे **सकर्मक क्रिया** कहते हैं।

(घ) जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरों से काम करवाता है, ऐसे वाक्य में **प्रेरणार्थक क्रिया** प्रयुक्त होती है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✓)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) अकर्मक क्रिया (ख) (ii) सकर्मक क्रिया

(ग) (iii) सकर्मक क्रिया (घ) (ii) प्रेरणार्थक क्रिया

6. अधोलिखित क्रिया शब्दों में से अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया छाँटिए–

अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया	अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया
हँसना	घिसना	टूटना	पीसना
बैठना	धोना	गिरना	
पढ़ना	तोड़ना	रुलाना	

7. अधोलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के भेद लिखिए–

(क) सकर्मक क्रिया
(ख) अकर्मक क्रिया
(ग) प्रेरणार्थक क्रिया
(घ) सामान्य क्रिया
(ङ) प्रेरणार्थक क्रिया।

16. काल

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चले, उसे काल कहते है।
(ख) स्वयं कीजिए।
(ग) स्वयं कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया किस समय हुई है, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद होते हैं–1. वर्तमान काल 2. भूतकाल, 3. भविष्यत् काल।
(ख) वर्तमान काल–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य अभी चल रहे समय में हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–वह टेलीजिवन देख रही है।
(ग) भविष्यत् काल द्वारा कार्य के आने वाले समय में होने का बोध होता है तथा भूतकाल द्वारा बीते हुए समय में हुए कार्य का बोध होता है।
(घ) इस वाक्य में भविष्यत् काल है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया किस समय हुई, उसे **काल** कहते हैं।
(ख) क्रिया के जिस रूपसे यह पता चल कि कार्य चल रहा है, **वर्तमान काल** कहलाता है।
(ग) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया बीते हुए समय में पूर्ण हो चुकी है, **भूतकाल** कहलाता है।
(घ) क्रिया के जिस रूप से भविष्य में उसके होने का ज्ञान हो, उसे **भविष्यत् काल** कहा जाता है।

4. सही कथन पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) तीन
(ख) (iii) चल हरे सम का
(ग) (ii) बीते हुए समय का
(घ) (ii) भविष्यत् काल का
(ङ) (iii) भूतकाल का

5. नीचे लिखे वाक्यों के क्रिया पदों को कोष्ठक में लिखे काल में बदलिए–

(क) प्रधानाचार्य सबको समझाते हैं।
(ख) शिल्पी इतिहास पढ़ती थी।
(ग) मीना भूगोल पढ़ेंगी।
(घ) सौरभ कल दिल्ली गया था।
(ङ) सनिधि गाना गाती है।

6. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया पदों को रेखांकित कर उनके सामने उनके काल का नाम लिखिए–

वाक्य	काल-भेद
(क) ज्योति विद्यालय गई।	**भूतकाल**
(ख) अरुण को मेरे जन्म-दिवस का निमंत्रण-पत्र मिल गया होगा।	**भविष्यत् काल**
(ग) किसान हल जोत रहा था।	**भूतकाल**
(घ) हम खेल रहे हैं।	**वर्तमान काल**
(ङ) वे परीक्षा दे चुके थे।	**भूतकाल**
(च) हम छुट्टियों में नैनीताल जाएँगे।	**भविष्त् काल**

7. नीचे लिखी धातुओं को तीनों कालों के एकवचन लिखिए–

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
(क) पढ़	**पढ़ता**	**पढ़ा**	**पढ़ेगा**
(ख) दे	**देता**	**दिया**	**देगा**
(ग) आ	**आता**	**आया**	**आएगा**
(घ) खेल	**खेलता**	**खेला**	**खेलेगा**
(ङ) लिख	**लिखता**	**लिखा**	**लिखेगा**
(च) जा	**जाता**	**गया**	**जाएगा**

17. वाक्य-विचार

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) **सरल वाक्य–**जिन वाक्यों में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं; जैसे–मोनू रो रहा है।

मिश्रित वाक्य–जिन वाक्यों में एक से अधिक उपवाक्य होते हैं, उनमें से एक प्रधान तथा अन्य गौरवपूर्ण होता है, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं; जैसे–रणजीत ने कहा कि वह कल झाँसी जाएगा।

(ख) **सरल वाक्य–**जिन वाक्यों में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं; जैसे–मोनू रो रहा है।

संयुक्त वाक्य–जहाँ दो या दो से अधिक सरल वाक्य किसी संयोजक से जुड़े होते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं; जैसे–उसने खाना खाया और वह सो गया।

(ग) वाक्यों का वर्गीकरण दो आधारों पर हाता है–1. अर्थ के आधार पर, 2. रचना के आधार पर।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) पूर्ण अर्थ देने वाले शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

(ख) अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं–1. विधानवाचक 2. निषेधवाचक 3. प्रश्नवाचक 4. विस्मयादिवाचक 5. आज्ञावचक 6. इच्छावाचक 7. संदेहवाचक 8. संकेतवाचक।

(ग) **आज्ञावाचक वाक्य**–जिन वाक्यों में आज्ञा, आदेश या अनुमति का बोध हो, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–विवेक, बाजार से मिठाई लाओ।

इच्छावचक वाक्य–जिन वाक्यों से वक्ता की इच्छा या आशीर्वाद का बोध होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–आपकी यात्रा मंगलमय हो।

(घ) **उद्देश्य**–वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जा रहा है, उस ही वाक्य का उद्देश्य कहते हैं। वाक्य का कर्ता और कर्ता के विशेषण वाक्य के उद्देश्य कहलाते हैं; जैसे–लाल फ्रॉक वाली बालिका खेल रही है।

विधेय–उद्देश्य के बारे में जो कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं; जैसे–हिमालय को भारत का रक्षक कहा जाता है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) पदों (शब्दों) का वह व्यवस्थित समूह जो पूर्ण अर्थ देने की क्षमता रखता है, **वाक्य** कहलाता है।

(ख) रचना के आधार पर वाक्य के **तीन** भेद होते हैं।

(ग) जिन वाक्यों में प्रश्न किया जाता है, उन्हें **प्रश्नवाचक** वाक्य कहते हैं।

(घ) जिस वाक्य में किसी कार्य के करने या होने की संभावना हो, उन्हें **संदेहवाचक** वाक्य कहते हैं।

(ङ) पूर्ण अर्थ देने वाले सार्थक शब्दों के समह को **वाक्य-विचार** कहते है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) विधानवाचक
(ख) (ii) इच्छावाचक
(ग) (i) प्रश्नवाचक
(घ) (ii) निषेधवाचक
(ङ) (ii) संदेहवाचक

5. निम्नलिखित वाक्यों में रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए–

वाक्य	भेद
(क) गौरव पैर में चप्पल डालकर चुपके से निकल जाता है।	**सरल वाक्य**
(ख) हरी खेत रोप रहा है और उसका रोम-रोम पुलकित हो रहा है।	**संयुक्त वाक्य**
(ग) मेरे एक मित्र ने माटी के गमले खरीदे।	**सरल वाक्य**
(घ) बकरी मर जारू गई, परंतु भेड़िए को घायल करके मरी।	**संयुक्त वाक्य**
(ङ) उस समय जैसा राजा वैसी प्रजा थी।	**मिश्रित वाक्य**

6. निम्नलिखित वाक्यों में अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए–

वाक्य	भेद
(क) मीनाक्षी गुप्ता ने पुस्तक खरीदी।	**विधानवाचक वाक्य**
(ख) परमात्मा तुम्हें लम्बी आयु दे।	**इच्छावाचक वाक्य**
(ग) आप क्या काम करते हैं?	**प्रश्नवाचक वाक्य**
(घ) मुझसे कुछ नहीं सूझ रहा है।	**निषेधवाचक वाक्य**
(ङ) अहा! कितना मनमोहक दृश्य है।	**विस्मयादिबोधक वाक्य**
(च) यदि आप भी हमारे साथ सिनेमा चलते, तो हमें बहुत आनंद आता।	**संकेतवाचक वाक्य**

(छ) शायद उसे मेरा पत्र मिल गया होगा। **संदेहवाचक वाक्य**

(ज) सभी अपना पाठ याद कर लो। **संदेहवाचक वाक्य**

(झ) रानी को कंप्यूटर नहीं आता। **निषेधवाचक वाक्य**

18. विराम-चिह्न

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) **कोष्ठक**–किसी बात का स्पष्टीकरण या भेद आदि बताने के लिए कोष्ठक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ख) **योजक**–इसका प्रयोग उन दो शब्दों के मध्य किया जाता है जो किसी संबंध के कारण एक साथ आते हैं। समस्त पदों (समास से युक्त पदों), युग्म शब्दों तथा उपमेय-उपमानों के मध्य आपसी संबंध दर्शाने के लिए योजक चिह्न लगता है; जैसे–पाप-पुय, माता-पिता, भाई-बहन, उठते-बैठते आदि।

(ग) **विस्मयादिबोधक**–इस प्रयोग हर्ष, शोक, घृणा तथा विस्मय आदि भावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों अथवा शब्दों के पश्चात् किया जाता है। संबोधन के लिए भी यही चिह्न संकेत देता है; जैसे–हाय! मैं बर्बाद हो गया।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) लिखित भाषा में विराम को प्रदर्शित करनेके लिए लगाए गए चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

(ख) **अल्प विराम**–वाक्य के मध्य में अर्ध विराम की अपेक्षा कम रकना हो तब इसका प्रयोग होता है। इसका प्रयोग अनेक स्थानों पर किया जाता है; जैसे–नूपुर, निधि और शिखा आज मेरे घर आएँगी।

अर्ध-विराम–वाक्य के मध्य में एक बात पूर्ण हो जाने पर जहाँ थोड़ा रुकना हो, वहाँ अर्ध विराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इस चिह्न के संकेत पर पूर्ण विराम से आधी अवधि तक रुक जाता है; जैसे–विद्या धन अनमोल है; खर्च करने से बढ़ता है।

(ग) **निर्देशक**–यह चिह्न योजक से थोड़ा लंबा होता है। इसका प्रयोग संवाद बोलने वालों के नाम के बाद, किसी की व्याख्या स्पष्ट करते समय या उदाहरण देते समय होता है; जैसे–संज्ञा के तीन भेद हैं–

(घ) **प्रश्नवाचक**–जिस वाक्य के द्वारा प्रश्न पूछा जाता है, उसके अंत में पूर्ण विराम के स्थान पर प्रश्नवचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–तुम कब आए?

(ङ) **पूर्ण विराम**–इस विराम चिह्न का प्रयोग प्रायः सभी वाक्यों के अंत में होता है। इसका प्रयोग प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों क अंत में नहीं होता है; जैसे–मेरा भाई बहुत अच्छा है।

3. निम्नलिखित वाक्यों में सही विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

(क) राजीव, निशा, मनोज और शवेता स्कूल जा रहे हैं।

(ख) आपकी माता जी किस स्कूल में पढ़ाती हैं?

(ग) रामधारीसिंह 'दिनकर' जैसी कविता कोई नहीं लिख पाता।

(घ) ठहरिए! कृपया प्रतीक्षा कीजिए।
(ङ) नरेंद्र मोदी; भारत के प्रधानमंत्री एक विदेशी यात्रा पर गए।

4. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) । पूर्ण विराम चिह्न है। (ख) प्रश्नवाचक चिह्न ? है।
(ग) ; अर्ध विराम चिह्न है। (घ) – योजक चिह्न है।
(ङ) विस्मयादिबोधक चिह्न ! है। (च) () कोष्ठक चिह्न है।

5. निम्नलिखित विराम-चिह्नों के सामने उनके नाम लिखिए–

(क) " " **उद्धरण चिह्न** (ख) ! **विस्मयादिबोधक चिह्न**
(ग) । **पूर्ण विराम** (घ) , **अल्प विराम**
(ङ) 0 **लाघव चिह्न** (च) (^) **त्रुटिपूरक चिह्न**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) प्रश्न के अंत में (ख) (i) वाक्य के मध्य में
(ग) (iii) वाक्य के अंत में (घ) (ii) वाक्य के शुरू में
(ङ) (i) वाक्य में कोई विशेष शब्द लिखना हो

7. सही मिलान कीजिए–

• ?	• प्रश्नवाचक
• !	• विस्मयादिबोधक
• -	• योजक
• 0	• लाघव
• " "	• उद्धरण

8. निम्नलिखित अनुच्छेद में सही विराम-चिह्न लगाइए–

सोने का मृग देखकर सीता ने कहा, "स्वामी मुझे यह मृग चाहिए। आप मेरे लिए ला दीजिए।" सीता की बात सुनकर श्रीराम ने उत्साह भर स्वर में कहा, "यह मृग लेकर ही लौटूँगा। लक्ष्मण, यह वन अनेक राक्षसों का घर है; सीता का ध्यान रखना। मैं शीघ्र ही लौटने की कोशिश करूँगा। जब तक मैं लौट न आऊँ; सीता को छोड़कर कहीं मत जाना। लक्ष्मण बोले, "आप चिंता मत कीजिए। मैं पूरा ध्यान रखूँगा। कौन जानता था? यह घटना सीता हरण का कारण बनेगी। जिस सीता ने सदा राम-लक्ष्मण की बात मानी थी; होनी के वस में होकर उसने लक्ष्मण-रेखा को भी लाँघ दिया।

19. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) मुहावरे का अर्थ है–बहुत प्रयत्न करना।
(ख) लोकोक्ति का अर्थ है कि कारण को ही समाप्त कर देना।
(ग) मुहावरों का प्रयोग वाक्यों में स्वतंत्र रूप से नहीं होता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जो वाक्यांश अपना साधारण अर्थ न देकर विशेष अर्थ देते हैं, वे मुहावरे कहलाते हैं।

जैसे–आसमान सिर पर उठाना (बहुत शोर मचाना)–शिक्षक के कक्षा से बाहर जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

(ख) लोकोक्ति शब्द दो शब्दों के योग से बना है–लोक + उक्ति, जिसका अर्थ है–लोक-प्रसिद्ध बात या लोक में प्रचलित बात इन्हें कावतें भी कहते हैं।
लोकोक्तियाँ लोक-जीवन के अनुभवों को सामान्य शब्दों के माध्यम से व्यक्त करती हैं।

(ग) **मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर**

मुहावरे	**लोकोक्तियाँ**
1. मुहावरों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता। वे वाक्य के अंदर ही प्रयोग किए जाते हैं।	1. लोकोक्ति का स्वतंत्र होता है।
2. मुहावरों में व्यंग्य प्रधान होता है।	2. लोकोक्ति में कोई-न-कोई अनुभव सिद्ध कथन होता है।
3. मुहावरे वाक्य नहीं वाक्यांश होते हैं।	3. लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं।
4. मुहावरों में शब्दों के प्रचलित एवं सामान्य अर्थ के स्थान पर विशेष अर्थ लगते हैं।	4. लोकोक्ति में शब्दों के प्रायः सामान्य और प्रचलित अर्थ लगते हैं।

(घ) जो गरजते हैं वे बरसतें नहीं, लोकोक्ति का अर्थ है कि जो डींग मारते हैं वे काम नहीं करते।

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) मुहावरों में व्यंग्य **प्रधान** होता है।

(ख) **लोकोक्तियाँ** अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं।

(ग) लोकोक्ति का **स्वतंत्र** प्रयोग होता है।

(घ) जो वाक्यांश अपना साधारण अर्थ न देकर एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करते हैं, उन्हें **मुहावरे** कहते हैं।

(ङ) 'आग में घी डालना' मुहावरे का सही अर्थ **क्रोध को भड़काना** है।

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ बताइए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) लाल-पीला होना **(क्रोधित होना)**–बच्चों कोा देख अध्यापक **लाल-पीले हो गए**।

(ख) छठी का दूध याद आना **(सबक सीखाना)**–पहाड़ों पर चढ़कर उसे **छठी का दूध याद आ गया**।

(ग) आसमान सिर पर उठाना **(बहुत शोर मचाना)**–माँ के बाहर जाने पर बच्चों ने **आसमान सिर पर उठा लिया**।

(घ) दाँत खट्टे करना **(हरा देना)**–मैच में हमने उनके **दाँत खट्टे कर दिए**।

(ङ) ऊँट के मुँह में जीरा **(आवश्यकता से कम मिलना)**–पहलवान को एक गिलास दूध देना तो **ऊँट के मुँह में चीरे के समान है**।

5. निम्नलिखित लोकोक्तियों के प्रयोग द्वारा उपयुक्त वाक्य बनाइए–

(क) संतराम मस्त आदमी है। न सावन हरे न भादो सूखे।

(ख) एक तो मेरी गाड़ी में टक्कर मार दी; ऊपर से लडे रहे हो। वाह! उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

(ग) पूरे दिन पढ़ाई की परंतु परीक्षा में आए केवल 33 नंबर। खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
(घ) सीमा को खाना-वाना बनाना नहीं आता। बस बहाने करती है कि तबियत खराब है। नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
(ङ) इस बार तुम बिना पढ़े जैसे-तैसे उत्तीर्ण हो गए। लेकिन काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) मुहावरा
(ख) (ii) घी के दिए जलाए
(ग) (ii) दो टूक जवाब
(घ) (ii) घुटने न टेके

7. निर्देश वाक्यों को उपयुक्त मुहावरों अथवा लोकोक्ति द्वारा पूरा कीजिए–

(क) रामू को पुस्तक देने का क्या फायदा उसके लिए तो काला अक्षर **भैंस बराबर है**।
(ख) इस बार अगर तुमने मुझे हाथ भी लगाया तो ईंट का **जवाब पत्थर से दूँगा**।
(ग) यहाँ किस पर विशवास किया जाए, छोटे-बड़े सब एक ही **थाली के चट्टे-बट्टे हैं**।
(घ) अध्यापक ने मोहित की ऐसी पिटाई की कि उसे नानी याद आ गई।

20. पत्र-लेखन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) पत्र दो प्रकार के होते हैं–औपचारिक तथा अनौपचारिक।
(ख) प्रधानाचार्य, अध्यापक, अधिकारियों तथा व्यवसाय से संबंधित लोगों को लिखे जाने वाले पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं।
(ग) पत्र लिखते समय सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
(घ) पत्र लिखते समय कुछ स्मरणीय बातें–

- पत्र की भाषा सरल एवं विषय स्पष्ट हो।
- पत्र संक्षिप्त हो, अनावश्यक विस्तार न हो।
- पत्र में मूल बातों पर विशेष बल देना चाहिए।

2. निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए–

(क) खेल-सामग्री मँगवान हेतु खेल-सामग्री विक्रेता को पत्र लिखिए।

प्रबंधक
एस० जी० स्पोर्ट्स,
सूरजकुंड, मेरठ।
विषय – खेल-सामग्री मँगवाने के संबंध में।
महोदय,
हम अपने विद्यालय हेतु आपके संस्थान द्वारा निर्मित खेल-सामग्री खरीदने के इच्छुक हैं। कृपया उचित कमीशन काटकर इन्हें वी0पी0पी0 से भेजने का कष्ट करें। सभी सामग्री नवीनतम हो तथा टूटी-फूटी न हो।
भुगतान खेल-सामग्री प्राप्त होने के बाद किया जाएगा। कृपया सामग्री शीघ्र भेजने का कष्ट करें। खेल-सामग्री की सूची निम्नलिखित है–

1. क्रिकेट बैट – चालीस
2. क्रिकेट गेंद – पचास
3. टेनिस रैकेट – तीस
4. शटल कॉं – तीस डिब्बे

धन्यवाद।
क०ख०ग०
खेल-कूद शिक्षक
विवेकानंद पब्लिक स्कूल, दिल्ली।
दिनांक : 20 जनवरी, 20XX

(ख) विद्यालय की पत्रिका में आपकी कहानी छपी है, इसकी सूचना देते हुए अपने मामा जी को एक पत्र लिखिए।

230/ए, आजाद नगर
वाराणसी।
3 जून, 20.....
आदरणीय मामा जी,
सादर चरण-स्पर्श।
आशा है कि आप पूर्णतः स्वस्थ और आनंद से होंगे। मैंने यह पत्र आपको अपनी एक उपलब्धि बताने के लिए लिखा हे। हमारे विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'तरंग' में मेरी लिखी कहानी 'जादूगर' प्रकाशित हुई है। आपन ही मुपे लिखने के लिए प्रोत्साहित किया था। आशा है आपको यह सुनकर अत्यंत प्रसन्नता हुई होगी।
मामी जी और नानी जी को मेरा प्रणाम कहना।
शेष सब कुशल।
आपका भाजा
वैभव सिंह

(ग) कुछ आवश्यक कार्य हेतु रुपये मँगवाने के लिए अपने पिता जी को पत्र लिखिए।

छात्रावास,
सावन पब्लिक स्कूल,
नई दिल्ली।
दिनांक : 26 अक्टूबर, 20XX
आदरणीय पिता जी,
सादर चरण स्पर्श।
आपका पत्र मिला तथा कुशलता आदि जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आपके आशीर्वाद से मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ।
आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैंने त्रैमासिक परीक्षा में 89 प्रतिशत अंक लाकर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मुझे पुस्तकें, कापियाँ तथा पढ़ाई का कुछ अन्य सामान खरीदना है, अतः आपसे अनुरोध है कि यथाशीघ्र डाक द्वारा तीन सौ रुपये भिजवाने का कष्ट करें।
पूज्या माता जी को चरण स्पर्श तथा चिंकू को प्यार।
आपका आज्ञाकारी पुत्र
हरीश

21. अपठित गद्यांश

1. सोचिए और बताइए–

(क) अपठित गद्यांश का वास्तविक अर्थ है–ऐसा गद्यांश जिसे हमने पहले कभी नहीं पढ़ा।

(ख) बीड़ी-सिगरेट के धुएँ में निकोटिन नामक पदार्थ होता है।

(ग) लोग फैशन के लिए धूम्रपान करते हैं फिर धीरे-धीरे उन्हें इसकी आदत पड़ जाती है।

2. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कुछ लोग ..... विकास हो सके।

1. कुछ लोग सोचते हैं कि खेलने-कूदने से समय नष्ट होता है तथा केवल स्वास्थ्य-रक्षा के लिए व्यायाम कर लेना ही काफी है। पर वे भूल जाते हैं कि खेल-कूद से स्वास्थ्य तो बनता ही है, साथ-ही-साथ मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी गुण भी सीखता है। सहयोग से काम करना, विजय मिलने पर अभिमान न करना, हार जाने पर साहस न छोड़ना, विशेष ध्येय के लिए नियमपूर्वक कार्य करना इत्यादि गुण खेलों के द्वारा अनयास सीखे जा सकते हैं।
2. कुछ लोग सोचते हैं कि खेलने-कूदने से समय नष्ट होता है तथा केवल स्वास्थ्य-रक्षा के लिए व्यायाम कर लेना ही काफी है।
3. शीर्षक–'खेल-कूद का महत्व।'

(ख) 'निंदा' बड़ा भारी ..... मिलता होगा।

1. अंध-विश्वासों को मान्यता प्राप्त होने का मुख्य कारण संभवतः सही जानकारी का अभाव तथा धर्म का प्रभाव है।
2. मानव-समाज में अनेक ऐसी मान्यताएँ और विश्वास प्रचलित हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, इन्हीं को अंध-विश्वास के नाम से जाना जाता है। इन्हीं अंध-विशवासों में किसी कार्य को प्रारंभ करते समय या घर से बाहर निकलते समय छींक देना, बिल्ली का रास्ता काट जाना, घर पर उल्लू का बोलना, टूटते तारे को देखना आदि प्रमुख हैं।
3. बच्चे के बीमार हो जाने पर लोग उसका इलाज करवाने की बजाय नजर लगने को बीमारी का कारण मानते हैं। नजर उतारने के लिए झाड़-फूँक करवाना एवं ताबीज आदि बाँधना कभी-कभी बच्चे के जीवन तक को खतरे में डाल देते हैं।
4. कुछ महिलाएँ अपने बच्चों को नजर लगने से बचाने के लिए उन्हें काटा टीका लगाती हैं।
5. शीर्षक–'अंधविश्वास।'

22. अपिठत पद्यांश

1. सोचिए और बताइए–

(क) जिस पद्यांश को पाठ्यपुस्तक में पढ़ा नहीं गया हो, उसे अपठित पद्यांश कहते हैं।

(ख) इसके अभ्यास से भाव ग्रहण करने की क्षमता का विकास होता है।

(ग) सटीक व सरल भाषा में होने चाहिए।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उनके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

पद्यांश संख्या-1

जीवन में ..... साज।।

(क) (ii) नदी-पहाड़ों से (ख) (iii) कल-कल

(ग) (i) अटल हरने की (घ) (ii) जीवन की सीख

23. निबंध-लेखन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) निबंध लेखन एक महत्वपूर्ण कला है। निबंध लिखना साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है जिसमें हमारे विचार गूँथे हुए और क्रम में होते हैं।

(ख) निबंध के तीन अंग होते हैं।

(ग) स्वयं कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भारत के राष्ट्रीय पर्व

होली, दीपावली, दशहरा, ईद, क्रिसमस, गुरुपर्व आदि। कुछ पर्व ऐसे भी होते हैं जिनका संबंध हमारे राष्ट्र से होता है। ऐसे पर्वों को ही हम राष्ट्रीय पर्व कहते हैं। हमारे देश के राष्ट्रीय पर्व हैं–गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती।

यह दिवस हमारे देश में प्रति वर्ष 26 जनवरी को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। 26 जनवरी 1950 को हमारे देश का संविधान लागू हुआ था। इसी दिन भारत को गणराज्य घोषित किया गया। इस दिन सारे देश में समारोह होते हैं। दिल्ली में राष्ट्रपति भवन से लालकिले तक एक भव्य परेड निकाली जाती है। इसमें सेना की विभिन्न टुकड़ियाँ, सैनिक अस्त्र-शस्त्र, टैंक, बैंड, एन0सी0सी0 के छात्र-छात्राएँ, लोकनर्तक एवं झाँकियों को सम्मिलित किया जाता है। विजय चौक पर बने एक विशेष मंच पर खड़े होकर राष्ट्रपति महोदय परेड की सलामी लेते हैं। इस परेड को दूरदर्शन पर सीधा प्रसारित किया जाता है।

यह प्रतिवर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है। हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को ही अंग्रेजों की दासता से ही स्वतंत्र हुआ था। स्वतंत्रता पाने के लिए अनेक देशभक्तों को अपना बलिदान देना पड़ा था। यह पर्व उन वीरों को स्मरण करने एवं देश रक्षा करने की प्रतिज्ञा करने का है। इस दिन विभिन्न स्थानों पर तिरंगा ध्वज फहराया जाता है। स्कूल-कॉलेजों में विशेष कार्यक्रम होते हैं। दिल्ली के लालकिले पर प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रध्वज फहराया जाता है। सेना के तीनों अंगों की टुकड़ियाँ सलामी देती हैं। इसके पश्चात प्रधानमंत्री राष्ट्र को संबोधित करते हैं।

गांधी जयंती 2 अक्टूबर को मनाई जाती है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई0 को हुआ था। उन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया। इस दिन भारतवासी उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

इन राष्ट्रीय पर्वों के मनाने से देश के नागरिकों में नई चेतना एवं उत्साह का संचार होता है। इससे राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना बढ़ती है।

(ख) आतंकवाद

आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बल प्रयोग में विशवस करती है। प्रायः विरोधी वर्ग के लोग दल या संघ बनाकर जाति, समाज और देश में अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए गैर कानूनी ढंग से हिंसात्मक साधनों का सहारा लेकर समुदाय या संप्रदाय को भयभीत करने और उस पर अपनी प्रभुता स्थापित करने की कोशिश करते हैं।

आजादी के बाद देश में अनेक आतंकवादी संगठनों द्वारा आतंकवादी हिंसा का प्रचार-प्रसार किया गया है। अनेक बड़े-बड़े सरकारी अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया गया है। फलस्वरूप अनेक अधिकारी अपने पदों पर बने रहने से कतरा रहे हैं। 1999 का कारगिल प्रकरण तथा विमान अपहरण की घटना तो आतंकवाद के सामान्य उदाहरण हैं जिसमें भारीय विमान का अपहरण कर आतंकवादी उसे कंधार ले गए थे और बंधक यात्रियों को छुड़ाने के लिए तीन आतंकवादियों को छोड़ना भारत की मजबूरी हो गई थी।

भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड, मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश और असम में भी अनेक बार आतंकवादी हिंसा फैली, किंतु अब वहाँ असम के बोडो आतंकवादियों को छोड़कर शेष सभी शांत हैं। बंगाल के नक्सलवाड़ी से जो नक्सलवादी आतंकवाद पनपा था, वह बंगाल से बाहर खूब फैला और बिहार आदि प्रांत उसकी भयंकर आग से झुलस रहे हैं।

स्वातंत्र्योत्तर आतंकवादी गतिविधियों में सबसे भयंकर है पंजाब और कश्मीर का आतंकवाद। यद्यपि पंजाब के आतंकवाद पर काबू पा लिया गया है, पर वहाँ आतंकवाद का आधार धर्म और राजनीति रहा हे।

कश्मीर घाटी में पाकिस्तानी तत्वों द्वारा आतंकवादी कार्यवाहियाँ जोर-शोर से की जा रही है। पाकिस्तान आतंकवादियों को प्रशिक्षण देकर भारत में धकेल देता है। ऐसे कई प्रमाण मिले हैं जिनमें यह पता चलता है कि कश्मीर घाटी के आतंकवादियों को पाकिस्तान का प्रश्रय मिला हुआ है। कई निष्पक्ष देशों ने तो पाकिस्तान को आतंकवादी राष्ट्र घोषित करवाने के लिए अपना मंतव्य प्रकट किया है।

11 सितंबर 2001 को विश्व के सबसे खतरनाक आतंकवादी ओसामा बिन लादेन ने विशव के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर को धराशायी कर दिया इसके अलावा विश्व की सबसे सुरक्षित इमारत समझी जाने वाली पेंटागमन पर भी अपहृत विमान को गिरा दिया। घटना में हजारों लोग मारे गए। घटना के बाद कई माह तक अमेरिका ओसामा बिन लादेन को ढूँढ़ता रहा लेकिन वह उसके हाथ नहीं चढ़ा। अब तक विश्व इतिहास में आतंकवाद की यह सबसे बड़ी घटना थी।

13 दिसंबर, 2001 को 11 बजकर 40 मिनट पर भारत के संसद भवन पर भी आतंकवादियों ने हमला किया। इसमें हालाँकि उन्हें सफलता नहीं मिल पाई और संसद भवन के सुरक्षाकर्मियों द्वारा मुठभेड़ में हमले को अंजाम देने आए आतंकवादियों का मार गिराया गया।

उसी प्रकार 26 नवंबर, 2008 को मुंबई में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों द्वारा आतंक का भयंकर रूप प्रकट किया गया। इन आतंकवादियों ने मुंबई के होटल ताज, होटल ऑबराय तथा नरीमन हाऊस में घुस कर खुलेआम गोलियाँ चलाई और वे तीन दिनों तक उस पर कब्जा जमाए रहे। अंत में ये कमांडो द्वारा मार दिए गए। परंतु इस आतंकी कार्यवाही में अनेक अधिकारी और सुरक्षाकर्मी तथा आम नागरिक गोलियों के शिकार हुए। इस घटना ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया।

आतंकवाद मानव-जाति के लिए कलंक है। भारत में विषमतम स्थिति तक पहुँचे आतंकवाद के समाधान पर संपूर्ण विचारकों और चिंतको ने अनेक सुझाव दिए हैं। भारत सरकार ने भी आतंकवादी गतिविधियों को बड़ी गंभीरता से लिया है और इसकी समाप्ति के लिए कई दृढ़ कदम उठाए हैं। भारतीय संसद ने आतंकवाद विरोधी विधेयक पारित किया है। जिसमें आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त रहने वाले लोगों के लिए कठोर से कठोर दंड देने की व्यवस्था की है, किंतु यह समस्या अभी सुलझी नहीं है।

इस समस्या का वास्तविक हल ढूँढ़ने के लिए सर्वप्रथम सरकार को अपनी गुप्तचर एजेंसियों को सशक्त और विशेष सक्रिय बनाना चाहिए। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि सीमा-पार से प्रशिक्षित आतंकवादियों के प्रवेश और वहाँ से भेजे जाने वाले हथियारों व विस्फोटक पदार्थों पर कड़ी चौकसी रखनी होगी। ऐसे घुसपैठियों को बख्शा नहीं जाना चाहिए। तीसरे, आतंकवाद को महिमामंडित करने वाली मानसिकता बदलने के लिए प्रयास करने होंगे। गुमराह के साथ सहृदयता व सदाशयतापूर्ण व्यवहार कर उनको राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। चौथे, सांप्रदायिक दंगों में पीड़ित लोगों के साथ आत्मीयता का व्यवहार किया जाना चाहिए। उनके संपत्ति संबंधी नुकसान की क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। उन्हें भरपूर मानसिक समर्थन भी दिया जाना चाहिए ताकि वे मानसिक पीड़ा को भूल सकें और उनके मन में बैर-विरोध की भावना न पनप सके।

(ग) क्रिकेट का बुखार

आज के युग में अनेक प्रकार के खेल खेले जाते हैं। इन खेलों में हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, टेनिस, बैडमिंटन, खो-खो, बास्केटबॉल, गोल्फ आदि के नाम गिनाए जा सकते हैं। सभी को अपनी-अपनी रुचि के अनुसार कोई-न-कोई खेल पसंद है। इन खेलों में मुझे क्रिकेट सर्वाधिक प्रिय है।

क्रिकेट का खेल इंग्लैंड की देन है। इस खेल का नियमों के अनुसार प्रदर्शन सन् 1850 में इंग्लैंड के गिलफोर्ड नामक विद्यालय में हुआ था। उन्नीसवीं शताब्दी में यह खेल भारत आया। भारत में अंग्रेज शासकों ने राजाओं और नवाबों को व्यस्त रखने के लिए इस खेल की शुरुआत की।

क्रिकेट के खेल में 11-11 खिलाड़ियों की दो-टीमें बनाई जाती हैं। एक विशाल मैदान के बीचों-बीच 2 गज की पिच होती है जिसके दोनों छोरों पर स्टंप गाड़े जाते हैं। एक छोर पर खड़े बल्लेबाज को दूसरे छोर से गेंदबाजी की जाती है। कौन-सी टीम पहले बॉलिंग करेगी या फील्डिंग, इसका निर्णय टॉस के आधार पर किया जाता है। टॉस जीतने वाले टीम पहले फील्डिंग करना या बल्लेबाजी करना चुन सकती है। एक पारी में दस बल्लेबाज आउट हो जाने पर जितने रन बनते हैं, उसे टीम का स्कोर कहा जाता है। एक

टीम के आउट होने पर दूसरी टीम बल्लेबाजी करने आती है। पहले पाँच दिवसीय मैच होते थे, पर आजकल एक दिवसीय मैच आयोजित किए जाते हैं, जो अधिक लोकप्रिय हैं। आजकल एक दिवसीय मैचों में 50-50 ओवरों के स्थान पर 20-20 ओवरों के मैच भी होने लगे हैं।

क्रिकेट का खेल भारत, वेस्टइंडीज, पाकिस्तान, न्यूज़ीलैंड, इंग्लैंड, श्रीलंका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका जैसे देशों में बहुत लोकप्रिय है। क्रिकेट का मैच आयोजित होने पर हजारों लोग इसे देखने स्टेडियम में जाते हैं या फिर अपने घर पर बैठकर दूरदर्शन पर देखते हें। गेंद और बल्ल का मुकाबला शुरू होते ही दर्शकों में भी उत्साह आ जाता है। किसी खिलाड़ी द्वारा 'चौक्का' या 'छक्का' लगाए जाने पर सारा स्टेडियम दर्शकों की तालियों और शोर से गूँज उठता है।

भारत में क्रिकेट बहुत लोकप्रिय है। यहाँ अनेक खिलाड़ियों ने विशव रिकार्ड बनाए हैं। गावस्कर, अजहरुद्दीन, कपिल देव, अनिल कुंबल, सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़, सौरव गांगुली, हरभजन सिंह, युवराज सिंह, महेंद्र सिंह धोनी जैसे अनेक खिलाड़ियों ने इस खेल में भारत का नाम रोशन किया है। दक्षिण अफ्रीका में आयोजित प्रथम 20-20 विश्व कप में भारत ने विजय प्राप्त की थी।

मैं भी बड़ा होकर क्रिकेट का खिलाड़ी बनना चाहता हूँ तथा अपने देश का नाम रोशन करना चाहता हूँ। इसके लिए मैं इस खेल का विधिवत प्रशिक्षण ले रहा हूँ।

(घ) भारत के गाँव

गाँव का जीवन शांति और पवित्रता का जीवन है। गाँव का सामाजिक जीवन एवं व्यवस्था आधुनिक समाज से थोड़ी भिन्न है। भारत की लगभग सत्तर प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति से पूर्व भारत के गाँवों की दशा बहुत ही दयनीय थी। उनमें सड़कों का अभाव था। चारों ओर गंदगी का साम्राज्य हुआ करता था और वहाँ शिक्षा, चिकित्सा तथा मनोरंजन के साधनों का अभाव था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार ने गाँव की तरफ ध्यान देना शुरू किया तथा पंचवर्षीय योजनाओं में ग्राम विकास की ओर अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की गईं। गाँवों में सड़कें बनाई गईं, उन्हें चिकित्सा की सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। अब गाँवों का जीवन पहले से कहीं ज्यादा सुंदर और आकर्षक लगने लगा है।

भारत के गाँवों में कृषि के पुराने तरीकों का प्रयोग कहीं-कहीं अभी भी होता है। गाँव में शुद्ध वायु तथा शुद्ध आहार के सेवन से मनुष्य स्वस्थ रहते हैं। प्रदूषण का वहाँ नाम नहीं होता। आज भी वहाँ सादगी और भाईचारे की भावना, सर्वधर्म-समभाव तथा एकता के दर्शन होते हैं। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में जीवन का अनंद ही कुछ और होता है।

आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए सहकारी बैंकों की शाखाएँ गाँव-गाँव में होनी चाहिए। सरकार ने किसानों को नए-नए तरीके बताए हैं। अच्छे किस्म की खाद, बीज तथा यंत्र भी उपलब्ध कराए हैं। आज किसान का अन्न सरकार ही निश्चित मूल्य पर खरीदकर सेठ-साहूकारों के शोषण से उसे बचाती है। ग्रामीण लोगों को कुटीर उद्योगों तथा विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण भी दिया जाने लगा है। गाँवों में बिजली, पीने का पानी तथा पक्की सड़कों का प्रबंध भी धीरे-धीरे होता जा रहा है। अब तो गाँवों में भी

घर-घर आधुनिक मनोरंजन के साधन तथा मोबाइल सेवा उपलब्ध हैं। गाँव की शोभा प्राकृतिक और शहर की शोभा कृत्रिम होती है। लगता है गाँव की रचना स्वयं ईश्वर ने की है।

(ङ) कश्मीर : स्वर्ग या नरक

''यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है; तो यहीं है, यहीं है, यहीं हैं।'' मुगल सम्राट जहाँगीर ने ये शब्द कश्मीर के सौंदर्य का बखान करने के लिए पर्याप्त हैं। अपनी बर्फ से ढकी पहाड़ियों, हरे-भरे मैदानों, फूलों और केसर की घाटियों, झीलों, तीर्थस्थानों आदि के कारण यह प्रदेश भारत माता के मुकुट के समान है। भारत के ठेठ उत्तर में स्थित यह केंद्रशासित प्रदेश (पूर्व में राज्य) अपने प्राकृतिक सौंदर्य और संस्कृति के लिए विशवभर में विख्यात है। यहाँ न केवल प्रकृति की अनुपम छटा देखने को मिलती है अपितु कई तीर्थस्थान जैसे–माता वैष्णों देवी, अमरनाथ, शारदा देवी मंदिर, हजरत बल मजार, मोईन-ए-मुकद्दस आदि के लिए भी यह काफी प्रसिद्ध है। अपने केसर और सेबों के लिए यह विश्वभर में जाना जाता है। यहाँ के लोग बहुतायत में इस्लाम को मानने वाले हैं, उसके बाद अल्पसंख्यक कश्मीरी हिंदू हैं। यहाँ कश्मीरी, उर्दू, डोगरी, हिंदी आदि भाषाएँ बोली जाती हैं। श्रीनगर यहँ की राजधानी है। अपनी इस अद्वितीय सुंदरता के बाद भी कश्मीर शापित है। शापित है, अलगावाद और आतंकवाद से। भारत की स्वतंत्रता के समय कश्मीर के महाराज हरि सिंह ने भारत में विलय से इंकार कर दिया। इसी दौरान नवनिर्मित पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। असहाय हरि सिंह ने आनन-फानन में भारत में विलय किया और भारीय सेना से सहायता माँगी। भारत ने कश्मीर के एक बड़े हिस्से को तो स्वतंत्र करा लिया, परंतु आज भी कश्मीर का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है। युद्ध में सफलता न मिलने पर पाकिस्तान न आतंकवाद की विषबेल बाई। कश्मीर की सफेद घाटियों को खून से लाल किया जाने लगा। अस्सी-नब्बे के दशक में कश्मीर में आतंकवाद ने किवराल रूप ले लिया। कश्मीर में हिंदुओं के खिलाफ भीषण हिंसा हुई, जिसके परिणामस्वरूप लाखों हिंदुओं ने कश्मीर को छोड़ दिया। कुछ वर्ष पहले भारत सरकार द्वारा कश्मीर से विवादित धारा 370 हटा दी गई और कश्मीर का लद्दाख और जम्मू-कश्मीर नाम के दो केंद्रशासित प्रदेशों में विभाजन कर दिया गया। इस बदलाव के बाद से कश्मीर में हिंसा की घटनाओं में कुछ कमी आई है। परंतु आज भी कश्मीरी हिंदू अपने घरों को नहीं लौट सके हैं, आज भी कश्मीर का एक हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक तरफ अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण कश्मीर एक स्वर्ग के समान है, वहीं आतंकवाद और हिंसा के कारण यह किसी नरक से कम नहीं है।

व्याकरण-8

खंड 'क' : व्याकरण

1. भाषा-बोली, लिपि और व्याकरण

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) भारतीय सविधान ने 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की है।

(ख) भारत में 1652 बोलियाँ प्रचलित हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम बोलकर, लिखकर, सुनकर अथवा पढ़कर अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। भाषा के तीन रूप होते हैं–1. मौखिक भाषा, 2. लिखित भाषा, 3. सांकेतिक भाषा।

(ख) **भाषा और बोली में अंतर**

- भाषा एक विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है, जबकि बोली का क्षेत्र छोटा होता है।
- भाषा का रूप मानक होता है, लेकिन बोली का प्रायः नहीं।
- मानक भाषा का लिखित रूप होता है, जबकि बोली सामान्यतः मौखिक होती है।
- भाषा का अपना साहित्य होता है, बोली प्रायः लोक साहित्य में मिलती है।

(ग) भाषा को लिखित रूप देने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाशा की अपनी एक लिपि होती है; जैसे–हिंदी और संस्कृत की लिपि देवनागरी है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) भाषा के तीन रूप होते हैं–**मौखिक भाषा, लिखित भाषा, सांकेतिक भाषा।**

(ख) भारतीय संविधान में **22** भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।

(ग) भारत में **1652** बोलियाँ प्रचलित हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **नीचे वर्ग-पहेली में भाषाओं और लिपियों के नाम हैं। भाषाओं के नामों में लाल रंग भरिए। लिपियों के नामों में हरा रंग भरिए। जिन भाषाओं की लिपियों के नाम एक ही हैं, उन्हें दिए गए स्थान में लिखिए–**

संस्कृत लाल
हिंदी हरा
गुजराती लाल
मराठी

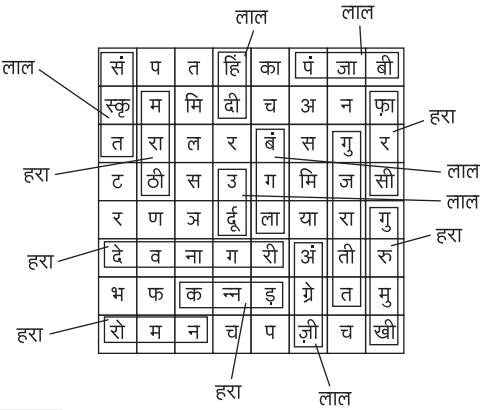

2. वर्ण-विचार

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।

(ख) द्वित्व व्यंजन के चार उदाहरण–सज्जन, भूट्ठा, चम्मच, गन्ना।

(ग) क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त अक्षर हैं।

क्ष = **क्षमा, अक्षय**, त्र = **त्रिभुज, त्रिशुल**, ज्ञ = **ज्ञान, ज्ञानी,** श्र = **श्री, श्रीमान**

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) हम अपने विचारों तथा मनोभाव को व्यक्त करने के लिए ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। इन उच्चारित ध्वनि-संकेतों को जब लिपिबद्ध किया जाता है, तो वे वर्ण का रूप धारण कर लेते हैं; वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते।

वर्ण के दो भेद हैं–स्वर और व्यंजन।

स्वर–स्वर स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में शवास वायु बिना किसी रुकावट के सीधी बाहर निकलती है।

हिंदी भाषा में 11 स्वर हैं जिन्हें स्वर माला भी कहा जाता है–अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ।

व्यंजन–स्वरों की सहायता से उच्चरित उन ध्वनियों को व्यंजन कहते हैं जिनके उच्चारण में शवास-वायु मुख के अलग-अलग भागों से टकराकर निकलती है। हिंदी में कुल 33 व्यंजन होते हैं परंतु संयुक्त तथा अन्य व्यंजन को मिलाकर इनकी संख्या 39 हो जाती है। जैसे–क, ख, ग, घ आदि।

(ख) **स्वर**–स्वर स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में शवास वायु बिना किसी रुकावट के सीधी बाहर निकलती है।

हिंदी भाषा में 11 स्वर हैं जिन्हें स्वर माला भी कहा जाता है–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वर के तीन भेद होते हैं–

(i) ह्रस्व स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है–अ इ उ ऋ। इन स्वरों को मूल स्वर भी कहते हैं।

(ii) दीर्घ स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। इन्हें गुरु स्वर भी कहा जाता है।

(iii) प्लुत स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी ज्यादा समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं; जैसे–ओ3म्। परंतु हिंदी में इसका आजकल प्रचलन समाप्त हो गया है।

(ग) **व्यंजन**–स्वरों की सहायता से उच्चरित उन ध्वनियों को व्यंजन कहते हैं जिनके उच्चारण में शवास-वायु मुख के अलग-अलग भागों से टकराकर निकलती है। हिंदी में कुल 33 व्यंजन होते हैं परंतु संयुक्त तथा अन्य व्यंजन को मिलाकर इनकी संख्या 39 हो जाती है। जैसे–क, ख, ग, घ आदि।

व्यंजनों को मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है–

(i) **स्पर्श व्यंजन**–स्पर्श का अर्थ है–छूना। 'क्' से 'म्' तक के वर्ण स्पर्श व्यंजन हैं। इनके उच्चारण के समय जिह्वा द्वारा मुख्य के अलग-अलग स्थानों को स्पर्श करने के कारण इन्हें स्पर्श व्यंजन कहा जाता है। प्रत्येक वर्ग में पाँच-पाँच व्यंजन होते हैं। हर वर्ण अपने वर्ग के पहले वर्ण के नाम से जाना जाता है; जैसे–कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग।

(ii) **अंतःस्थ व्यंजन**–अंतःस्थ का अर्थ है–मध्य में स्थित होना। जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख्य के विभिन्न भागों को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती तथा मध्य में स्थित रहती है, उन्हें अंतःस्थल व्यंजन कहते हैं; जैसे–य्, र्, ल्, व् चार अंतःस्थ व्यंजन हैं।

(iii) **ऊष्म व्यंजन**–ऊष्म का अर्थ है–गरम। जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय वायु रगड़ खाकर निकती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये चार हैं–श्, ष्, स्, ह्। इनका उच्चारण करते समय मुख में ऊष्मा (गर्मी) उत्पन्न होती है तथा शवास में तेजी आती है।

- **संयुक्त व्यंजन**–दो अथवा दो से अधिक वर्णों के संयोग से बनने वाले व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते हैं; जैसे–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।
- **द्वित्व व्यंजन**–एक जैसे दो व्यंजनों का एक साथ आना द्वित्व व्यंजन कहलाता है; जैसे–सज्जन, उद्देश्य, प्रसन्न, हिस्सा, गन्ना आदि।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) वर्णों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।
(ख) हिंदी वर्णमाला में **33** व्यंजन होते हैं।
(ग) हिंदी वर्णमाला में **चार** ह्रस्व स्वर होते हैं।
(घ) हिंदी वर्णमाला में **सात** दीर्घ स्वर होते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) सामाजिक (ख) (2) ह्रस्व स्वर (ग) (2) दीर्घ स्वर

3. शब्द-विचार

अभ्यास

1. सोचिए, और बताइए–

(क) **तत्सम शब्द**–दधि, मिष्ठान **तद्भव शब्द**–दही, मिठाई।
(ख) तोप, लाश।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) **1. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर**–इस आधार पर यह देखा जाता है कि भाषा के अंतर्गत किसी शब्द विशेष का उद्गम कहाँ से हुआ है? उत्पत्ति, स्रोत अथवा उद्गम की दृष्टि से शब्दों को पाँच भागों में बाँटा गया है–तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द, संकर शब्द।

2. अर्थ के आधार पर–अर्थ के आधार पर शब्द के छः प्रकार होते हैं–एकार्थी शब्द, अनेकार्थी शब्द, समानार्थी अथवा पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द, समरूपी/श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द।

3. **रचना के आधार पर**–रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं–रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगरूढ़ शब्द।
4. **प्रयोग के आधार पर**–प्रयोग के आधार पर शब्द के तीन प्रकार होते हैं–1. सामान्य शब्द, 2. तकनीकी शब्द, 3. अर्द्ध तकनीकी शब्द।
5. **व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर**–व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द दो प्रकर के होते हैं–विकारी शब्द अविकारी शब्द।

(ख) **यौगिक शब्द**–वे शब्द जो सार्थक खंडों के योग से बनाए जाते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे–विज्ञान (वि + ज्ञान) राजकुमार (राज + कुमार)
विद्यालय (विद्या + आलय) पीतांबर (पीत + अंबर)
योगरूढ़ शब्द–यौगिक होते हुए भी जो शब्द किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हें, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे–पंकज अर्थात् कमल, नीलकंठ अर्थात् शिव।

(ग) **विकारी शब्द**–जो शब्द अपना रूप, वाक्य के लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण बदलते रहते हैं, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्दों के चार भेद हैं–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया।
अविकारी शब्द–जो शब्द वाक्य प्रयोग के समय लिंग, वचन, काल आदि के कारण अपना रूप नहीं बदलते, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्दों के चार भेद हैं–क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थान भरिए–

(क) संस्कृत के वह शब्द जिन्हें संस्कृत के रूप में ही हिंदी में स्वीकार किया जाता है, उन्हें **तत्सम** कहते हैं।

(ख) जिन शब्दों का अर्थ सदा एक-सा रहता है, उन्हें **एकार्थी** शब्द कहते हैं।

(ग) ऐसे शब्द जो उच्चारण करने में एक जैसे लगे परंतु अर्थ अलग-अलग देते हों, वे **भिन्नार्थक** शब्द कहलाते हैं।

(घ) विकारी शब्द के चार भेद होते हैं–संज्ञा, **सर्वनाम, विशेषण** और क्रिया।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) पद (ख) (2) पाँच (ग) (2) भाई

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नलिखित में से शुद्ध प्रचलित शब्दों में हरा रंग भरिए। शुद्ध अप्रचलित (पुराने) में लाल रंग भरिए–**

गङ्गा (लाल)	गंगा (हरा)	शन्य (लाल)
शंख (हरा)	शंख (हरा)	शङ्ख (लाल)
भयञ्कर (लाल)	भयंकर (हरा)	दन्ड (लाल)
दण्ड (लाल)	दण्ड (लाल)	दंड (हरा)
चम्पा (हरा)	चम्पा (लाल)	हिन्दी (लाल)
हिन्दी (हरा)	हिन्दी (हरा)	हिंदी (हरा)
चन्चल (लाल)	चंचल (हरा)	कन्स (लाल)
कंस (हरा)	कंस (हरा)	कञ्स (लाल)

अंगूर (हरा)	अंग्गूर (लाल)	अन्य (हरा)
अंय (लाल)	अयं (लाल)	अंश (हरा)
अन्श (लाल)	कञ्ज (लाल)	कण्ठ (लाल)
कन्ठ (लाल)	कन्ठ (लाल)	कंठ (हरा)

4. संधि

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) जब संधियुक्त शब्दों को अलग-अलग किया जाता है तो उसे संधि-विच्छेद कहते हैं।

(ख) व्यंजन संधि में वर्ग के पहले वर्ण का अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तन होता है।

(ग) संधि शब्द का सामान्य अर्थ है–मेल या जोड़ना।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) दो ध्वनियों के परस्पर मेल से जो विकार अथवा परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।

जब दो शब्द या पद एक-दूसरे के पास होते हें तब उच्चारण की सुविधा और संक्षेपीकरण के लिए पहले शब्द की अंतिम और दूसरे शब्द की प्रारंभिक ध्वनियाँ एक-दूसरे से मिल जाती हैं। ध्वनियों के मिलने से विकार उत्पन्न होता है। यह विकार ही 'संधि' है।

संधि निम्नलिखित तीन प्रकार की होती हैं–स्वर संधि व्यंजन संधि विसर्ग संधि।

स्वर संधि–दो स्वरों के पारस्परिक मेल से उत्पन्न विकार या परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। जैसे–अ + अ = आ

अधिक + अधिक = अधिकांश

व्यंजन संधि–व्यंजन वर्ण के बाद किसी अन्य व्यंजन के समीप होने पर जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे–त् का द् = उत् + घाटन = उद्घाटन

विसर्ग संधि–विसर्ग (:) के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे–

निः + फल = निष्फल　　मनः + हर = मनोहर

(ख) **स्वर संधि**–दो स्वरों के पारस्परिक मेल से उत्पन्न विकार या परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है–1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि, 4. यण संधि 5. अयादि संधि।

1. दीर्घ संधि–जब ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' और 'आ', 'ई', 'ऊ' आपस में मिल जाते हैं तो वे दीर्घ स्वर 'आ', 'ई', 'ऊ' बन जाते हैं; जैसे–अ + आ = आ

   उदाहरण–अधिक + अंश = अधिकांश।　　सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

2. गुण संधि–जब अ, आ के बाद 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' या 'ऋ' आए तो दोनों मिलकर 'ए', 'ओ' या 'अर्' बन जाते हैं: जैसे–

   अ + इ = ए　　शुभ + इच्छा = शुभेच्छा

3. वृद्धि संधि–जब 'अ', 'आ' के बाद 'ए', 'ऐ' या 'ओ', 'औ' आए तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ऐ' एवं 'औ' बन जाते हैं; जैसे–

   अ + ए = ऐ लोक + एषण = लौकेषण

4. यण संधि–जब 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के बाद कोई असमान स्वर आए तो 'इ', 'ई' का 'य, 'उ', 'ऊ' का 'य', 'व्' और 'ऋ' का 'अर्' हो जाता है; जैसे–

   इ + अ = य यदि + अपि = यद्यपि

5. अयादि संधि–जब स्वर 'ए', 'ऐ', 'ओ' और 'औ' के आगे कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' को 'आय', 'ओ' का 'अव्' और 'औ' का 'आव्' हो जाता है; जैसे–

   ए + अ = अय शे + अन = शयन

(ग) जब विसर्ग से पहले 'अ' तथ बाद में 'अ' या किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण तथा 'य', 'र', 'ल', 'व' 'ह' में से कोई वर्ण आता है, तो विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है; जैसे–

मनः + बल = मनोबल मनः + योग = मनोयोग

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल मनः + कामना = मनोकामना

तपः + वन = तपोवन मनः + रथ = मनोरथ

(घ) **व्यंजन संधि**–व्यंजन वर्ण के बाद किसी अन्य व्यंजन के समीप होने पर जो विकार या परिवर्तन होता हे, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे–त् का द् = उत् + घाटन = उद्घाटन

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थान भरिए–

(क) संधि के **तीन** भेद होते हैं।

(ख) किसी भी व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो संधि होती है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं।

(ग) स्वर संधि के **पाँच** भेद होते हैं।

(घ) दो स्वरों के पारस्परिक मेल से उत्पन्न विकार या परिवर्तन **स्वर संधि** कहलाता है।

4. सही शब्दों पर सही (✓) तथा गलत शब्दों पर गलत (✗) क चिह्न लगाइए–

सू + उक्ति = सूक्ति **(✓)** मनः + रथ = मनोरथ **(✓)**

अधिक + अंश = अधिकांश **(✓)** साधु + उत्सव = साधूत्सव **(✓)**

रमा + इंद्र = रमेंद्र **(✓)** रजनी + ईश = रजनीश **(✓)**

भनु + उदय = भानुदय **(✗)** भानु वीरो + उचित = वीरोचित **(✓)**

5. निम्नलिखित का संधि-विच्छेद करते हुए संधि का नाम भी लिखिए–

यद्यपि = **यदि + अपि = स्वर संधि** प्रत्येक = **प्रति + एक = स्वर संधि**

सज्जन = **सत् + जन = व्यंजन संधि** जगदीश = **जगत् + ईश = व्यजन संधि**

मनोहर = **मनः + हर = विसर्ग संधि** रामायण = **राम + अयन = स्वर संधि**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) तीन (ख) (3) विसर्ग संधि

(ग) (1) नमः + कार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नांकित प्रवाह सचित्र 'संधि' के भेदों की जानकारी देता है। इसे पूर्ण कीजिए–**

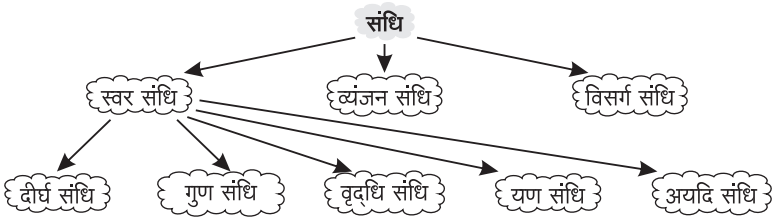

5. समास

1. सोचिए और बताइए–

(क) परम है जो आत्मा।

(ख) तत्पुरुष समास के छः भेद होते हैं–

कर्म तत्पुरुष–जिन समासों के पूर्वपद में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो, उन्हें कर्म तत्पुरुष कहते हैं: जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
ग्रंथकार	ग्रंथ को करने वाला

करण तत्पुरुष–जिन समासों के पूर्व पद में करण कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो, उन्हें 'करण तत्पुरुष' कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
शोकाकुल	शोक से आकुल

संप्रदान तत्पुरुष–जिन समासों के पूर्व पद में संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो, उन्हें 'संप्रदान तत्पुरुष' कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
हथकड़ी	हाथों के लिए कड़ी

अपादान तत्पुरुष–जिन समासों के पूर्व पद में अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो, उन्हें 'अपादान तत्पुरुष' कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
आकाशवाणी	आकाश से आगतवाणी

संबंध तत्पुरुष–जिन समासों के पूर्व पद में संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'के' तथा 'की' का लोप हो, उन्हें संबंध तत्पुरुष कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
गुणहीन	गुण से हीन

अधिकरण तत्पुरुष–जिन समासों में अधिकरण कारक की विभक्ति 'में' या 'पर' का लोप हो, उन्हें 'अधिकरण तत्पुरुष' कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
घुड़सवार	घोड़ों पर सवार

(ग) बहुव्रीहि समास–जिन समासों में पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पद प्रधान न हों और कोई अन्य पद प्रधान हो जाए, उन्हें बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समस्त पदविग्रह

त्रिनेत्र तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)

द्विगु, कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

द्विगु–द्विगु समास में पूर्व पद संख्यावाचक होता है।

उदाहरण के आधार पर अंतर–

त्रिलोचन–तीन लोचनों का समूह

कर्मधारय–कर्मधार समास में पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य या उपमेय तथा दूसरा उपमान होता है।

त्रिलोचन–तीन हैं जो लोचन।

बहुव्रीहि–बहुव्रीहि समास में पूर्व पद तथा उत्तर पद दोनों ही प्रधान न हों और कोई अन्य पद प्रधान होता है।

त्रिलोचन–तीन लोचन हैं जिसके (शिव)।

(घ) राजा का पुत्र।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) समास का अर्थ है 'संक्षेप'। दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों के मेल से शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।

समास के मुख्यतः छः भेद हैं–1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. कर्मधारय समास, 4. द्विगु समास, 5. द्वंद्व समास, 6. बहुव्रीहि समास।

1. **अव्ययीभाव समास**–जिस समस्त पद का पूर्व पद प्रधान होने के साथ अव्यय भी हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस प्रक्रिया से बना सामासिक पद भी अव्यय की भाँति कार्य करता है। कभी-कभी संज्ञा शब्दों की आवृति से भी अव्ययीभाव समास बनता है; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार

2. **तत्पुरुष समास**–जिन समस्त पद में उत्तर पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर कारक के विभक्ति चिह्न आएँ, उन्हें तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
भुखमरा	भूख से मरा

3. **कर्मधारय समास**–जिन समासों के समस्त पद में पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य अथवा उपमेय या दूसरा उपमान हो, उन्हें कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
महादेव	महान है जो देव

4. **द्विगु समास**–जिन समासों में पूर्व पद संख्यावाचक हो तथा समस्त पद समूह का बोध कराए तो उन्हें द्विगु समास कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
शताब्दी	सौ वर्षों का समूह

5. **द्वंद्व समास**–जिन समासों में पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पद प्रधान होते हैं, उन्हें द्वंद्व समास कहते हैं। समस्त पद का विग्रह करते समय योजक शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
आशा-निराशा	आशा और निराशा

6. **बहुव्रीहि समास**–जिन समासों में पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पद प्रधान न हों ओर कोई अन्य पद प्रधान हो जाए, उन्हें बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
त्रिदेव	तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)।

(ख) **बहुव्रीहि समास**–जिन समासों में पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पद प्रधान न हों ओर कोई अन्य पद प्रधान हो जाए, उन्हें बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
त्रिदेव	तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)।

(ग) **संधि और समास में अंतर**

संधि	**समास**
दो ध्वनियों के पास होने पर, उनके मेल से जो विकार अथवा परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।	दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक मेल से जब एक नया शब्द बनाया जाता है, उसे समास कहते हैं।
संधि के तीन भेद होते हैं–	समास के छः भेद होते हैं–
1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।	1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. कर्मधारय समास, 4. द्विगु समास, 5. द्वंद्व समास, 6. बहुव्रीहि समास।
उदाहरण–नेत्रहीन = नेत्र + हीन	**उदाहरण**–नेत्रहीन = नेत्र से हीन

(घ) **द्वंद्व समास**–जिन समासों में पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पद प्रधान होते हैं, उन्हें द्वंद्व समास कहते हैं। समस्त पद का विग्रह करते समय योजक शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**
आशा-निराशा	आशा और निराशा

3. **बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–**

(क) जिस समस्त पद का पूर्व पद प्रधान होने के साथ अव्यय भी हो, उसे **अव्ययीभाव** समास कहते हैं।

(ख) तत्पुरुष समास के **छः** भेद हैं।

(ग) जिन समासों में पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो तथा समस्त पद समूह का बोध कराए तो उन्हें **द्विगु** कहते हैं।

(घ) जिन समासों में दोनों पद प्रधान होते हैं और पदों के बीच आने वाले योजक जैसे 'और' अथवा का लोप हो जाता है, वहाँ **द्वंद्व** समास होता है।

(ङ) 'पीतांबर–पीला है अंबर जिसका (कृष्ण) **बहुव्रीहि** समास है।

4. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करके समास भेद लिखिए–

समस्त पद		**विग्रह**	**समास का नाम**
रोगमुक्त	=	**रोग से मुक्त**	**तत्पुरुष समास**
युधिष्ठिर	=	**युधि + सिरि**	**तत्पुरुष समास**
गृहप्रवेश	=	**गृह में प्रवेश**	**तत्पुरुष**
समास नीलकमल	=	**नीला है जो कमल**	**कर्मधारय समास**
प्रसंगानुसार	=	**प्रसंग के अनुसार**	**अव्यीभाव समास**
पाठशाला	=	**पाठ के लिए शाला**	**तत्पुरुष समास**
देवालय	=	**देव का आलय**	**तत्पुरुष**
समास धर्मभ्रष्ट	=	**धर्म में भ्रष्ट**	**तत्पुरुष समास**

5. निम्नलिखित पद समूह से समस्त पद बनाकर समास का नाम भी लिखिए–

		समस्त पद	**समास का नाम**
(क) कमल के समान नयन	=	**कमल नयन (विष्णु)**	**बहुव्रीहि समास**
(ख) राजा और प्रजा	=	**राजा-प्रजा**	**द्वंद्व समास**
(ग) नीला है कंठ जिसका	=	**नीलकंठ (शिव)**	**बहुव्रीहि समास**
(घ) गृह में प्रवेश	=	**गृहप्रवेश**	**तत्पुरुष समास**
(ङ) गुरु रूपी देव	=	**गुरुदेव**	**कर्मधारय समास**
(च) नव ग्रहों का समाहार	=	**नवग्रह**	**द्विगु समास**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) समास (ख) (2) छः

(ग) (2) अव्ययीभाव

6. उपसर्ग

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) डिप्टी, चीफ, बाइस, एडमिरल, सुप्रीम।

(ख) खुशनुमा, खुशबू।

(ग) उपसर्ग शब्दों के आगे जुड़ते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्दांश जो शब्दों के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

(ख) उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दों के साथ जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं; परंतु उपसर्ग शब्दों के आगे जुड़ते हें तथा प्रत्यय शब्दों के पीछे जुड़ते हैं।

(ग) उपसर्ग के पाँच भेद होते हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग – **उदाहरण–**

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
नि्	बिना, रहित	निर्बल, निर्धन, निरपराध, निर्भय, निर्गुण

2. हिंदी उपसर्ग – **उदाहरण–**

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
क/कु	बुरा	कुरीति, कुमार्ग, कुबुद्धि, कविचार, कुटिल, कुपुत्र, कुकर्म

3. अरबी-फारसी के उपसर्ग – **उदाहरण–**

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
गैर	अनुचित	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरजिम्मेदारी

4. उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त संस्कृत के अव्यय – **उदाहरण–**

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
स्व	अपना	स्वदेश, स्वतंत्र, स्वराज, स्वाभिमान, स्वार्थ

5. अंग्रेजी के उपसर्ग – **उदाहरण–**

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
डिप्टी	उप	डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी इंस्पेक्टर

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) वह शब्दांश जो शब्दों के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।

(ख) उपसर्ग **पाँच** प्रकार के होते हैं।

(ग) अभिमान, अभिशाप तथा अभिवादन शब्दों में **संस्कृत** उपसर्ग का प्रयोग किया गया है।

(घ) 'गैर' उपसर्ग **अरबी-फारसी** का उपसर्ग है।

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द छाँटकर लिखिए–

		उपसर्ग	**मूल शब्द**
(क) अतिरिक्त	–	**अति**	**रिक्त**
(ख) अभिषेक	–	**अभि**	**षेक**
(ग) सम्मुख	–	**सम्**	**मुख**
(घ) सुशिक्षित	–	**सु**	**शिक्षित**
(ङ) स्वाधीनता	–	**स्व**	**अधीनता**
(च) अपशब्द	–	**अप**	**शब्द**

5. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) पुनर् – **पुनरुद्धार, पुनर्जीवन** (ख) उन – **उननींद, उनका**

(ग) नि – **निशब्द, निजात** (घ) सह – **सहचर, सहपाठी**

(ङ) कु – **कुमार्ग, कुफल** (च) वाइस – **वाइस एडमिरल, वाइस प्रिंसिपल**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) उपसर्ग (ख) (2) संस्कृत

(ग) (2) हिंदी

7. प्रत्यय

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) प्रत्यय के दो भेद होते हैं–1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय।

कृत् प्रत्यय–जो प्रत्यय क्रिया धातु के रूप के बाद लगते हैं तथा संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्यय लगाकर बनने वाले शब्द कृदंत कहलाते हैं; जैसे–तैराक, कसौटी, लिखवट आदि।

तद्धित प्रत्यय–जो प्रत्यय धातु को छोड़कर अन्य संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और अव्यय के बाद लगाए जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–मास + इक = मासिक
धर्म + इक = धार्मिक।

(ख) प्रत्यय को शब्द के अंत में जोड़ा जाता है।

(ग) **तद्धित प्रत्यय**–जो प्रत्यय धातु को छोड़कर अन्य संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और अव्यय के बाद लगाए जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–मास + इक = मासिक
धर्म + इक = धार्मिक।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

नीचे दिए शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़ो एवं समझो–

मोर + नी = मोरनी सुन + आई = सनाई लेख + अक = लेखक

उपरोक्त शब्दों के अंत में क्रमशः 'नी', 'आई' तथा 'अक' का प्रयोग किया गया है। ये प्रत्यय कहलाते हैं। ये शब्दांश मूल शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

(ख) **कृत् प्रत्यय**–जो प्रत्यय क्रिया धातु के रूप के बाद लगते हैं तथा संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्यय लगाकर बनने वाले शब्द कृदंत कहलाते हैं; जैसे–तैराक, कसौटी, लिखवट आदि।

कृत् प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं–

1. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय, 2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय, 3. करणवाचक कृत् प्रत्यय, 4. भाववाचक कृत् प्रत्यय, 5. क्रियावाचक कृत् प्रत्यय

1. **कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय**–जिन धातुओं के अंत में प्रत्यय लगाकर बनाए गए नए शब्दों से कर्ता का बोध हो, उन्हें कर्तृवाच्य कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	**मूल शब्द**	**नए शब्द**
इया	चूहा, लोटा	चुहिया, लुटिया
आका	लड़, उड़	लड़का, उड़ाका

2. **कर्मवाचक कृत् प्रत्यय**–जिन धातुओं के अंत में प्रत्यय लगाकर बनाए गए नए शब्दों से कर्म का बोध हो, उन्हें कर्मवाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	मूल शब्द	नए शब्द
नी	ओढ़, सूँघ	ओढ़नी, सूँघनी
हुई	सुन, देख	सुनी हुई, देखी हुई

3. **करणवाचक कृत् प्रत्यय**–जिन धातुओं के अंत में प्रत्यय लगाकर बचाए गए नए शब्दों से क्रिया अर्थात् करण का बोध हो, उन्हें करणवाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	मूल शब्द	नए शब्द
आ	भूख, मेल	भूखा, मेला
नी	सूँघ, चट	सूँघनी, चटनी

4. **भाववाचक कृत् प्रत्यय**–जिन धातुओं के अंत में प्रत्यय लगाकर बनाए गए नए शब्दों से भाव का बोध हो, उन्हें भाववाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	मूल शब्द	नए शब्द
आन	चढ़, थक	चढ़ान, थकान
आई	लिख, पढ़	लिखाई, पढ़ाई

5. **क्रियावाचक कृत् प्रत्यय**–जिन धातुओं के अंत में प्रत्यय लगाकर बनाए गए नए शब्दों से क्रिया होने के भाव का बोध हो, उन्हें क्रियावाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	मूल शब्द	नए शब्द
कर	पढ़, खा	पढ़कर, खाकर
ते	हँस, बोल	हँसते, बोलते

(ग) तद्धित प्रत्यय–जो प्रत्यय धातु को छोड़कर अन्य संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और अव्यय के बाद लगाए जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–मास + इक = मासिक धर्म + इक = धार्मिक।

तद्धित प्रत्यय छः प्रकार के होते हैं–

1. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय, 2. क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय, 3. भाववाचक तद्धित प्रत्यय, 4. संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय, 5. लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय, 6. स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय

1. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–जिन तद्धित प्रत्ययों से कर्ता का बोध होता है, उन्हें कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	मूल शब्द	नए शब्द
आरी	पूजा, जुआ	पुजारी, जुआरी
क	बाल, चाल	बालक, चालक

2. क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय–जो प्रत्यय शब्दों के अंत में जुड़कर क्रम संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	मूल शब्द	नए शब्द

गुना	तीन, चार	तिगुना, चौगुना
ला	एक	पहला

3. भाववाचक तद्धित प्रत्यय–जो तद्धित प्रत्यय शब्दों के अंत में जुड़कर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण करते हैं, उन्हें भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	**मूल शब्द**	**नए शब्द**
त्व	लघु, मम	लघुत्व, ममत्व
आवट	लिख, बना	लिखावट

4. संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय–तो तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण शब्दों के अंत में जुड़कर बनाए गए नए शब्दों से संबंध का बोध कराते हैं, उन्हें संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	**मूल शब्द**	**नए शब्द**
एरा	मामा, फूफा	ममेरा, फूफेरा
इक	नीति, दिन	नैतिक, दैनिक

5. लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय–जो प्रत्यय शब्दों के अंत में जुड़कर लघुता का बोध कराते हैं, उन्हें लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	**मूल शब्द**	**नए शब्द**
ई	टोकरा, छोकरा	टोकरी, छोकरी
इया	डिब्बा, खाट	डिबिया, खटिया

6. स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय–जो प्रत्यय शब्दों के अंत में जुड़कर स्त्रीलिंग शब्द का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–

प्रत्यय	**मूल शब्द**	**नए शब्द**
आइन	पंडित, गुरु	पंडिताइन, गुरुआइन
नी	शेर, मोर	शेरनी, मोरनी

(घ) उपसर्ग और प्रत्यय में यह समानता है कि ये दोनों ही शब्दों के साथ जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर	**उपसर्ग प्रत्यय**
1. उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़ते हैं।	1. प्रत्यय शब्द के अंत में जड़ते हैं।
2. उपसर्ग के लगने से शब्द के अर्थ में पूरी तरह परिवर्तन आ जाता है।	2. प्रत्यय के लगने से शब्द के अर्थ में विशेष परिवर्तन नहीं होता।
3. उपसर्ग के पाँच भेद होते हैं।	3. प्रत्यय के दो भेद होते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) वे शब्दांश, जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं।

(ख) वे प्रत्यय, जो क्रिया के मूल रूप के साथ जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें **कृत् प्रत्यय** कहते हैं।

(ग) वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण के साथ मिलकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓)

5. निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

		मूल शब्द	प्रत्यय
(क) बुढ़ापा	=	**बूढ़ा**	**आपा**
(ख) पालनहार	=	**पालन**	**हार**
(ग) गाड़ीवाला	=	**गाड़ी**	**वाला**
(घ) घबराहट	=	**घबरा**	**आहट**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) प्रत्यय (ख) (3) पाँच

7. निम्नलिखित प्रत्ययों के योग से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) इक = **नैतिक, धार्मिक** (ख) आका = **लड़ाका, उड़ाका**

(ग) आस = **प्रभास, समास** (घ) आवट = **दिखावट, लिखावट**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **निम्नलिखित प्रत्ययों को उचित चित्रों से जोड़कर नए शब्द बनाइए–**

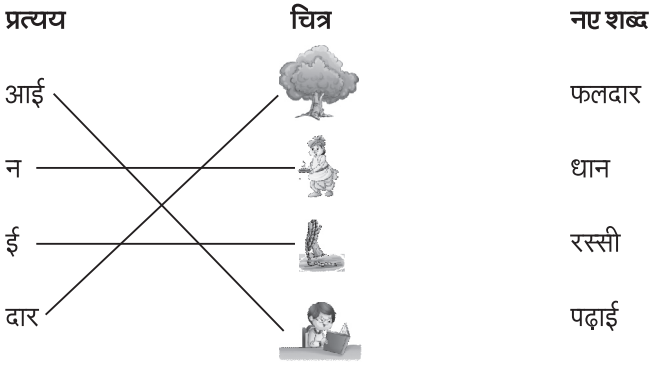

8. संज्ञा

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराती है।

(ख) पानी, लोहा।

(ग) हरा – हरियाली उपयोग – उपयोगिता।

(घ) इंसान – इंसानियत।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जो शब्द किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, भाव तथा स्थान का बोध कराएँ, उन्हें संज्ञा कहते हैं। जैसे–पेड़ पर चिड़िया बैठी है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में पेड़, चिड़िया, दिल्ली तथा कुतुबमीनार किसी वस्तु, व्यक्ति,

स्थान तथा भाव के नाम का बोध करा रहे हैं। यही संज्ञा शब्द कहलाते हैं।

(ख) संज्ञा के तीन भेद होते हैं–

व्यक्तिवाचक संज्ञा–वे शब्द जो किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान विशेष का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं: जैसे–

व्यक्ति – रोहित, तरुण, अभिषेक, कविता, हर्ष, प्रिया आदि।

वस्तु – गुरुग्रंथ, रामायण आदि।

स्थान – बिहार, हरिद्वार, जयपुर, राजस्थान आदि।

जातिवाचक संज्ञा–वे संज्ञा शब्द जो किसी समूह अथवा जाति विशेष का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–पर्वत, देश, नगर, पुरुष, लड़की आदि।

भाववाचक संज्ञा–वे संज्ञा शब्द जिनसे किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, भाव अथवा दशा आदि का बोध हो, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं: जैसे–मिठास, प्यास, हँसी, बचपन, माधुर्य आदि।

(ग) भाववाचक संज्ञा का निर्माण पाँच प्रकार से किया जाता है–

1. जातिवाचक संज्ञा से, 2. सर्वनाम से, 3. विशेषण से, 4. क्रिया से, 5. अव्यय से।

1. जातिवाचक संज्ञा से

जातिवाचक संज्ञा	**भाववाचक संज्ञा**
दास	दासता

2. सर्वनाम से

सर्वनाम	**भाववाचक संज्ञा**
स्व	स्वत्व

3. विशेषण से

विशेषण	**भाववाचक संज्ञा**
अरुण	अरुणिमा

4. क्रिया से

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**
हँसना	हँसी

5. अव्यय से

अव्यय	**भाववाचक संज्ञा**
एक	एकता

(घ) 1. द्रव्यवाचक संज्ञा–वे संज्ञा शब्द जिनसे पदार्थ अथवा द्रव्य का बोध होता हैं, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–पानी, लोहा, दूध, मिट्टी, सोना, चाँदी, लकड़ी, पीतल आदि।

2. समुदायवाचक संज्ञा–वे संज्ञा शब्द जिनसे किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–कक्षा, झुंड, भीड़, सेना आदि।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द **संज्ञा** कहलाते हैं।

(ख) जातिवाचक संज्ञा के **दो** भेद होते हैं।

(ग) 'बचपन' शब्द **भाववाचक** संज्ञा का बोध कराता है।

(घ) जिस संज्ञा शब्द से किसी **समूह** या **समुदाय** का बोध होता है, उसे समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓)

5. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों को उनके भेद के अनुसार अलग-अलग कीजिए–

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
महाभारत	विद्यालय, देश	बचपन
चंडीगढ़	नदी, घर	सुंदरता
हिमालय		

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) संज्ञा (ख) (2) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ग) (2) द्रव्यवाचक संज्ञा

7. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए–

अहं = **अहंकार**	सजाना = **सजावट**	निकट = **निकटता**
व्यक्ति = **व्यक्तित्व**	दूर = **दूरी**	वकील = **वकालत**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **नीचे दिए गए चित्र को देखिए और सही विकल्पों को चुनिए–**

1. सर्कस हमारे मनोरंजन का प्रमुख साधन है। (✗)
2. हमें सर्कस को बढ़ावा देना चाहिए। (✗)
3. सर्कस जंतुओं पर अत्याचार के समान है। (✓)
4. सर्कस के जंतुओं की प्रायः उचित देखभल नहीं की जाती। (✓)
5. पशुओं से जबरदस्ती काम कराना नैतिक और मानवीय दृष्टि से अनुचित नहीं है। (✗)

9. शब्द-भंडार

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) पर्वत – पहाड़, नग। (ख) तरुण – वृद्ध।

(ग) जंगल। (घ) गर्मी, धूप, ग्रीष्म।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो लगभग एक समान अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। जैसे–अश्व– घोड़ा, तुरंग, घोटक, हय।

(ख) वे शब्द जो एक-दूसरे का विपरीत (उलटा) अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थी शब्द कहते हैं। जैसे–अंदर – बाहर, उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण, आस्तिक – नास्तिक।

(ग) वे शब्द जो देखने में एक-दूसरे के पर्याय लगते हैं, परंतु उनके अर्थ में पर्याप्त अंतर होता है, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे–

अगम – जहाँ पहुँचा न जा सके। दुर्गम – जहाँ पहुँचना कठिन हो।

वे शब्द जो अनेक अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। जैसेताप – गरमी, धूप, ग्रीष्म।

(घ) वे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर अकेले ही प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) वे शब्द जिनका अर्थ लगभग समान हो, उन्हें **समानार्थी** शब्द कहते हैं।

(ख) जिन शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं, उन्हें **अनेकार्थी** शब्द कहते हैं।

(ग) वे शब्द जो एक-दूसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें **विलोम** शब्द कहते हैं।

(घ) वह शब्द जो पढ़ने व सुनने में समान प्रतीत होते हैं, उन्हें **समरूपी भिन्नार्थक** शब्द कहते हैं।

4. नीचे लिखे शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) अतिथि = **मेहमान, आगंतुक, पाहुना**

(ख) धनुष = **कमान, सारंग, चाप**

(ग) पथिक = **राही, बटोही, रहगुजर**

(घ) सरस्वती = **ब्रह्माणी, वीणावादिनी, हंसरूढ़ा**

(ङ) उद्देश्य = **लक्ष्य, मंजिल, लक्ष**

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) निंदा = **प्रशंसा**

(ख) अल्पायु = **दीर्घायु**

(ग) गृहस्थ = **ब्रह्मचारी**

(घ) परमार्थ = **सेवार्थ**

(ङ) सम्मान = **अपमान**

(च) आयात = **निर्यात**

10. लिंग

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) स्त्रीलिंग द्वारा स्त्री जाति का बोध होता है जबकि पुल्लिग द्वारा पुरुष जाति का बोध होता है।

(ख) प्रधानमंत्री, विधायक।

(ग) छाती, कमर, आँख, नाक, पलक, जीभ, मुँह आदि।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

उदाहरण–निशा खेल रही है। तरुण मेला देखने गया।

लड़की घूम रही है। शिक्षक पढ़ा रहा है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में निशा, लड़की, नानी जी स्त्री और तरुण, शिक्षक, नाना जी शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो रहा है।

(ख) पुल्लिग–पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिग कहते हैं; जैसे–घोड़ा, गुड्डा, बेटा आदि।

स्त्रीलिंग–स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–घोड़ी, गुड़िया, बेटी आदि।

(ग) पुल्लिग द्वारा पुरुष जाति का बोध होता है, जबकि स्त्रीलिंग द्वारा स्त्री जाति का बोध होता है।

(घ) **लिंग परिवर्तन के नियम**

'आइन' प्रत्यय जोड़कर–

1. बाबू – बबुआइन
2. पंडित – पंडिताइन
3. बनिया – बनियाइन
4. ठाकुर – ठकुराइन

'आनी' प्रत्यय जोड़कर–

1. राजा – रानी
2. सेठ – सेठानी
3. नौकर – नौकरानी
4. देवर – देवरानी

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थन भरिए–

(क) संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्रीजाति के होने का बोध हो, उसे **लिंग** कहते हैं।

(ख) पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को **पुल्लिग** कहते हैं।

(ग) मछली, तितली, कोयल, मैना, मक्खी, गिलहरी आदि शब्द सदैव **स्त्रीलिंग** होते हें।

(घ) कुछ पुल्लिग शब्दों के अंत में **प्रत्यय** जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं।

(ङ) कारक **आठ** प्रकार के होते हैं।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗)

5. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए–

भारत = **पुल्लिग**	फारसी = **स्त्रीलिंग**	आचार्य = **पुल्लिग**
हिंदी = **स्त्रीलिंग**	जेठ = **पुल्लिग**	रोटी = **स्त्रीलिंग**
यमुना = **स्त्रीलिंग**	पानी = **पुल्लिग**	

11. वचन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) बड़े आदमी अपन अधिकार प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग करते हैं।

(ख) पाठशालाएँ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़ो एवं समझो–

आज हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव मनया गया। सभी बच्चों ने अलग-अलग प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिखा। सभी विद्यार्थी समय पर विद्यालय आए। अंत में प्रधानाचार्य जी ने भाषण दिया और शिक्षकों ने अच्छा पढ़ने एवं आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

उपरोक्त अनुच्छेद में 'विद्यालय', 'विद्यार्थी' और 'प्रधानाचार्य' शब्द एकवचन का बोध

करा रहे हैं तथा 'विद्यालयों', 'बच्चों' तथा 'शिक्षकों' शब्द बहुवचन का बोध करा रहे हैं।

(ख) वचन के भेद–एकवचन बहुवचन।

1. **एकवचन**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु, व्यक्ति तथा पदार्थ का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–आँख, घोड़ा, पुस्तक, मेज, सड़क आदि।
2. **बहुवचन**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों तथा पदार्थों का बोध होता हे, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–आँखें, घोड़े, किताबें, मेजें, सड़कें आदि।

(ग) **वचन-परिवर्तन के नियम**

1. **'आ' को 'ए' में बदलना–**
   (क) कमरा – कमरे (ख) पत्ता – पत्ते
2. **'अ' को 'एँ' में बदलना–**
   मेज – मेजें सड़क – सड़कें
3. **'आ' को 'आएँ' में बदलना–**
   सूचना – सूचनाएँ दवा – दवाएँ
4. **'इ' या 'ई' को 'इयाँ' में बदलना–**
   लड़की – लड़कियाँ नदी – नदियाँ
5. **'ा' को 'ाँ' में बदलना–**
   बुढ़िया – बुढ़ियाँ चुहिया – चुहियाँ
6. **'उ', 'ऊ' के साथ 'एँ' जोड़कर–**
   ऋतु – ऋतुएँ वधू – वधुएँ
7. **जन, वर्ग, गण, वृंद जोड़कर–**
   छात्र – छात्रगण अध्यापक – अध्यापक वृंद

3. **बॉक्स में दिए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–**
   (क) गोदावरी की चार सहायक **नदियाँ** हैं।
   (ख) भारत में **छः** ऋतुएँ होती हैं।
   (ग) मैदान में **लड़के** फुटबॉल खेल रहे हैं।
4. **सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–**
   (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗)
5. **रेखांकित शब्दों के लिए सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**
   (क) (2) वचन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **नीचे दिए गए शब्दों को चुनकर उचित वर्गों में लिखिए–**
  एकवचन : घृणा, चाय, प्रिय, कली, नहर, कन्या, तोता, हीरा
  बहुवचन : नेतागण, गुरुजन, खगवृंद, होश, सभाएँ, कपड़े, चूहे, जनता

12. सर्वनाम

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) सर्वनाम संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किया जाता है।

(ख) 'श्रोता' के लिए पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग होता है।

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार के होते हैं–उत्तम पुरुषवाचक, मध्यम पुरुषवाचक, अन्य पुरुषवाचक।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़ो एवं समझो–

राधा माता-पिता के साथ स्टेश पर आई है। वह अपनी नानी की गाड़ी के आने की प्रतीक्षा कर रही है। वह पा की पुस्तक की दुकान से कुछ खरीदना चाहती है। उसने पिता को अपनी इच्छा बताई। उन्होंने उसकी रुचि जाननी चाही। वे उसे साथ लेकर पुस्तक विक्रेता के पास गए।

उपरोक्त अनुच्छेद में राधा (संज्ञा) शब्द के स्थान पर 'वह', 'उसने', 'उन्होंने', 'वे' शब्दों का प्रयोग किया गया है, इन्हें सर्वनाम शब्द कहते हैं। सर्वनाम शब्द दो शब्दाके सार्थक मेल से बना है–सर्व (सबका) + नाम अर्थात् सबका नाम।

(ख) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(ग) **निश्चयवाचक सर्वनाम**–वे सर्वनाम शब्द जो किसी पास या दूर की वस्तु की ओर संकेत करते हें और उसका निश्चयपूर्वक बोध कराते हें, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहा जाता है। समीप की वस्तुओं के लिए यह तथा दूरी पर स्थित वस्तुओं के लिए वह 'वह' शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे–वह कहाँ जा रही है? यह घर किसका है?

अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनाम शब्दों से अनिश्चत वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है; उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–दाल में कुछ गिरा है। दरवाजे पर कोई खड़ा है।

(घ) सर्वनाम के छः भेद होते हैं–1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, 4. संबंधवाचक सर्वनाम, 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम, 6. निजवाचक सर्वनाम।

क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। जैसे–वह सुबह से गया हुआ है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं।

(ख) वे सर्वनाम शब्द, जो किसी दूर या पास की वस्तुओं की ओर संकेत करते हैं, वह **निश्चयवाचक** कहलाते हैं।

(ग) वाक्य में प्रयुक्त किए गए दूसरे संज्ञा या सर्वनामों के साथ संबंध करने के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें **संबंधवाचक** कहते हैं।

(घ) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें **प्रश्नवाचक** कहते हैं।

4. निम्नलिखित सर्वनामों से वाक्य बनाइए–

(क) उसमें = कमरे में देखा तो **उसमें** धूल भरी हुई थी।

(ख) इसका = अब **इसका** क्या करना है?

(ग) तुझे = **तुझे** अब चलना चाहिए।

(घ) किन्होंने = **किन्होंने** तुम्हें यह कथा सुनाई है?

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) सर्वनाम (ख) (2) छः

13. विशेषण

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) महानतम।

(ख) **परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–**

1. **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण**–दस तोला, सोना।
2. **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण**–कई किलो चावल।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं–

1. **गुणवाचक विशेषण**–जो विशेषण किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-दोष, रूप-रंग, आकार, स्थान, काल, स्वाद, दिशा आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–सरल, दुष्ट, भला, विनम्र।
2. **संख्यावाचक विशेषण**–जो विशेषण शब्द किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–मेरे पास दो कलम हैं। तीन लोग पूजा कर रहे हैं।
3. **परिमाणवाचक विशेषण**–जो विशेषण शब्दःसंज्ञा अथवा सर्वनाम की परिभाषा संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें परिमणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–पापा दस किलो आटा लाए। माँ किलो सेब लाई।
4. **सार्वनामिक विशेषण**–जब विशेषण, सर्वनाम या संज्ञा से पहले लगकर उसकी विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे–यह बच्चा, वह लड़की आदि। इन्हें संकेतवाचक या निर्देशवाचक विशेषण भी कहते हैं।

(ग) संख्यावाचक विशेषण में संख्या का बोध होता है; जैसे–एक, चार आदि। वहीं परिमाणवाचक विशेषण में परिमाण का बोध होता है; जैसे–एक किलो, दो लीटर आदि।

(घ) तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

1. **मूल्यावस्था**–जब विशेषण द्वारा मात्र गुण या दोष को पकट किया जा, किसी दूसरे से उसकी तुलना न की जाए; जैसे–मनीष बुद्धिमान है।
2. **उत्तरावस्था**–जब विशेषण द्वारा दो की तुलना में एक को अच्छा या बुरा बताया जाए; जैसे–राधिका, मंजू से अधिक सुंदर है।

3. **उत्तमावस्था**–जो विशेषण के द्वारा एक की अनेक से तुलना करके उसे सबसे अच्छा अथवा कुछ बुरा कहा जाए; जैसे–गौरव सबसे अधिक बुद्धिमान है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) वे शब्द जो संज्ञा तथा सर्वनाम के गुण-दोष, रंग, आकार आदि के विषय में बताएँ, उन्हें **गुणवाचक विशेषण** कहते हैं।

(ख) जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण या माप तोल के बारे में बताएँ, उन्हें **परिमणवाचक विशेषण** कहते हैं।

(ग) जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्य के बरे में बताएँ, उन्हें **निशिचय संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं।

(घ) वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताएँ, उन्हें **सार्वनामिक विशेषण** कहते हैं।

4. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाइए–

संज्ञा शब्द	**विशेषण**	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**
आदर	**आदरणीय**	बंगाल	**बंगाली**
स्वदेश	**स्वदेशी**	राजस्थान	**राजस्थानी**
दिन	**दैनिक**	धर्म	**धार्मिक**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) विशेषण (ख) (2) चार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- **कलश 'क' से शब्द और कलश 'ख' से शब्दांश लेकर उपयुक्त विशेषण बनाइए–**

विशेषण

सामाजिक	जोशीला	श्रद्धालु	स्वर्गीय
शक्तिमान	रोगी	प्रमाणिक	रंगीला
धनी	राट्रीय	चाची	नमकीन
मर्यादित	कँटीला	ईर्ष्यालु	बौद्धिक
लालची	बलवान	ममेरा	शैक्षिक

14. कारक

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) कर्ता कारक परसर्ग रहित कब होता है भूतकाल की क्रिया के साथ यदि कर्म न हो, तो कर्ता के साथ परसर्ग नहीं लगता।

(ख) कर्म कारक में क्रिया का फल संज्ञा या सर्वनाम पर पड़ता है।

(ग) संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

कारक के आठ भेद होते हैं–1. कर्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. संप्रदान, 5. अपादान 6. संबंध, 7. अधिकरण, 8. संबोधन।

1. कर्ता कारक–कर्ता का अर्थ है करने वाला। संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'ने' है। कर्ता कारक परसर्ग रहित भी हो सकता है; जैसे–बालक पत्र पढ़ता है।
2. कर्म कारक–जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'को' है। इसका प्रयोग परसर्ग या विभक्ति चिह्न के बिना भी हेाता है; जैसे–नीरज ने दिल्ली में आश्रमधाम देखा। (परसर्ग रहित)
3. करण **कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कर्ता के साधन का बोध हेाता है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'से', 'के द्वारा' या 'के साथ' होता है; जैसे–हम बस से कश्मीर जा रहे हैं।
   उदाहरण–हम बस से कश्मीर जा रहे हैं।
4. संप्रदान कारक–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से यह प्रतीत होता है कि क्रिया किसके लिए या किस उद्देश्य से की जा रही है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'के लिए' है; जैसे–माता जी बच्चों के लिए फल लाईं। मरीज के लिए दवाई खरीद लाओ।
5. अपादान कारक–संज्ञा के जिस रूप से अलग होने, तुलना करने या डरने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'से' होता है; जैसे–सुधर छत से गिर गया।
6. संबंध **कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। संबंध कारक का क्रिया से सीधा संबंध नहीं होता। इसका विभक्ति चिह्न 'का, के, की, रा, रे, री तथा ना, ने, नी' होते हैं; जैसे–मधु का घर जयपुर में है।
7. अधिकरण कारक–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के स्थान का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'में', 'पर' हैं; जैसे–पेड़ पर बंदर बैठे हैं।
8. संबोधन कारक–संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से किसी को पुकारे जाने अथवा संबोधित करने का बोध हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'हे', 'अरे' हैं। संबोधन कारक के पश्चात् संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है; जैसे–हे भगवान! तुम यहाँ क्या कर रही हो?

(ख) **करण कारक और अपादान कारक में अंतर**–करण कारक और अपादान कारक दोनों में ही 'से' विभक्ति चिह्न का प्रयोग होता है किंतु फिर भी दोनों में अंतर है।

करण कारक	**अपादान कारक**
1. करण कारक के माध्यम से कर्ता काम करता है; जैसे–	1. अपादान कारक में तुलना तथा अलग होने का पता चलता है; जैसे–
• अभिषेक कमरे से बाहर आया।	• अभिषेक राधा से छोटा है।
• वह बस से गया।	• वह घर से चला गया।

(ग) **कर्म कारक और संप्रदान कारक में अंतर**–कर्म कारक और संप्रदान कारक दोनों में ही 'को' विभक्ति चिह्न का प्रयोग होता है किंतु फिर भी दोनों में अंतर है।

कर्म कारक संप्रदान कारक

1. कर्म कारक में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है; जैसे–शिक्षक ने विद्यार्थियों को मारा।
2. संप्रदान कारक में कर्ता देने का कार्य करता है; जैसे–शिक्षक ने विद्यार्थियों को ज्ञान दिया।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) संसार **में** भ्रटाचार बढ़ता जा रहा है।
(ख) दर्जी ने कैंची **से** कपड़ा काटा।
(ग) निधि अपनी बहन **से** बहुत छोटी है।
(घ) महात्मा बुद्ध **के** चेहरे **पर** सदा मुस्कान बनी रहती थी।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) क चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓)

15. क्रिया

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) कार्य के होने या करने को क्रिया कहते हैं।
(ख) प्रत्यय लगाकर क्रिया के रूप में परिवर्तन किया जा सकता है।
(ग) **अकर्मक क्रिया**–'अकर्मक' का अर्थ है–कर्म रहित। अर्थात् जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे–मोहित खेल रहा है। कशिश हँस रही है।
अकर्मक क्रियाओं के व्यापार और फल दोनों कर्ता पर पड़ते हैं।
सकर्मक क्रिया–'सकर्मक' का अर्थ है–कर्म के साथ। अर्थात् जिस क्रिया व्यापार में कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–विद्यार्थी परीक्षा दे रहे हैं। स्नेहा विद्यालय गई है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वे शब्द जो किसी कार्य के करने, घटित होने य किसी स्थिति का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया कहते हैं।
कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–
अकर्मक क्रिया–'अकर्मक' का अर्थ है–कर्म रहित। अर्थात् जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे–मोहित खेल रहा है। कशिश हँस रही है।
अकर्मक क्रियाओं के व्यापार और फल दोनों कर्ता पर पड़ते हैं।
सकर्मक क्रिया–'सकर्मक' का अर्थ है–कर्म के साथ। अर्थात् जिस क्रिया व्यापार में कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–विद्यार्थी परीक्षा दे रहे हैं। स्नेहा विद्यालय गई है।

(ख) **संरचना** के आधार पर क्रिया के छः भेद होते हैं–1. सामान्य क्रिया, 2. प्रेरणार्थक क्रिया, 3. संयुक्त क्रिया, 4. नामधातु क्रिया, 5. पूर्वकालिक क्रिया, 6. कृदंत क्रिया।

(ग) धातु के चार भेद होते हैं–

1. सामान्य धातु–मूल रूप में 'ना' प्रत्यय जोड़कर जो रूप बनता है, उसे सामान्य धातु कहा जाता है: जैसे–

   मूल धातु ('ना' प्रत्यय) सामान्य धातु मूल धातु ('ना' प्रत्यय) सामान्य धातु
   रो रोना काट काटना

2. व्युत्पन्न धातु–सामान्य धातु में प्रत्यय लगाकर बनाई गई धातु को व्युत्पन्न धातु कहते हैं; जैसे–

सामान्य धातु	**व्युत्पन्न धातु**	**सामान्य धातु**	**व्युत्पन्न धातु**
कटना	काटना, काटना	चलना	चलाना, चलवाना

3. नामधातु–संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों में प्रत्यय लगाकर जो धातु रूप बनाए जाते हैं, उन्हें नामधातु कहते हैं; जैसे–संज्ञा शब्दों में–लात-लतियाना, सज्जा-सजाना।
4. मिश्रधातु–संज्ञा, विशेषण तथा क्रियाविशेषण शब्दों के बाद लगना, लेना, करना, होना, आना आदि शब्द लगाकर जो धातु बनाई जाती है, उसे मिश्रधातु कहते हैं: जैसे–संज्ञा–लज्जा + आना = लजाना।

(घ) क्रिया का मूलरूप धातु कहलाता है।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) जिस शब्द से किसी कार्य के होने, करने या स्थिति का बोध हो, उसे **क्रिया** कहते हैं।

(ख) क्रिया का मूल रूप **धातु** कहलाता है।

(ग) जिन क्रिया शब्दों का एक कर्म होता है, उसे **एककर्मक क्रिया** कहते हैं।

(घ) जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरों से काम करवाता है या उन्हें कार्य करने का प्रेरित करता है, उसे **द्वितीय प्रेरणार्थक** क्रिया कहते हैं।

4. निम्नलिखित शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाइए–

चिकना = **चिकनाना**	आप = **आपा**	फिल्म = **फिल्माना**
मोटा = **मोटापा**	हाथ = **हथियाना**	लालच = **ललचाना**
साठ = **सठियाना**	झूठ = **झूठलाना**	गरम = **गरमाना**

5. सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

(क) (2) क्रिया (ख) (2) चार

16. काल

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) क्रिया के होने के समय का बोध कराने वाले शब्द काल कहलाते हैं।

(ख) स्वयं कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) काल के तीन भेद होते हैं–

1. भूतकाल–बीते हुए समय का बोध कराने वाली क्रिया रूप को भूतकाल कहते हैं; जैसे–मैंने गृह कार्य कर लिया था। वह अभी आया है।
2. वर्तमान काल–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञा हो कि कार्य चल रहे समय में हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–गुंजन पौधा लगा रही है। शुभम खेल रहा है।
3. भविष्यत् काल–जब आने वाले समय में क्रिया के करने या होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे–हम कल ऋषिकेश जाएँगे।, में कल विद्यालय जाऊँगा।

(ख) भूतकाल के छः भेद होते हैं–

सामान्य भूतकाल–क्रिया का वह रूप जो सामान्यतः किसी कार्य का बीते हुए समय में होना बताता है, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं; जैसे–राधा विद्यालय गई। फल वाले ने फल बेचे।

आसन्न भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के अभी-अभी समाप्त होने का बोध हो, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे–मीना ने आइसक्रीम खाई। मैंने अपना काम कर लिया है।

पूर्ण भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य का भूतकाल में बहुत पहले होने का बोध हो, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे–मोना चित्र बना चुकी थी। मोहित को पुरस्कार मिल चुका था।

अपूर्ण भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के भूतकाल में शुरू होने, किंतु समाप्ति का पता न होने की सूचना मिले, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे–मीना पत्र लिख रही थी। बच्चे क्रिकेट मैच खेल रहे थे।

संदिग्ध भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के भूतकाल में होने का संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं; जैसे–उसे मेरा घर मिल गया होगा। रितु ने आटा खरीद लिया होगा।

हेतु-हेतुमद् भूत–क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य का भूतकाल में दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का ज्ञान होता हो, उसे हेतु-हेतुमद् भूतकाल कहते हैं; जैसे–यदि लोग अनुशासन में रहते, तो भ्रष्टाचार नहीं फैलता।

(ग) भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं–

सामान्य भविष्यत्–क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया का व्यापार आने वाले समय में होगा, उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे–राकेश फिल्म में काम करेगा। माँ खाना बनाएगी।

संभाव्य भविष्यत्–क्रिया के जिस रूप से भविष्यत् काल में किसी कार्य के होने की संभावना पायी जाए, उसे संभाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे–शायद दादा जी कल आ जाएँ। शायद शाम को हम बाजार जाएँगे।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) बीते हुए समय का बोध करवाने वाला क्रिया रूप **भूतकाल** कहलाता है।

(ख) क्रिया का वह रूप जो सामान्यतः किसी कार्य का बीते हुए समय में होना बताता है, उसे **सामान्य भूतकाल** कहते हैं।

(ग) जब आने वाले समय में क्रिया के करने या होने का बोध हो, उसे **भविष्यत् काल** कहते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों के काल और भेद लिखिए–

(क) गीता फूल तोड़कर माला बनाएगी।	**सामान्य भविष्यत् काल**
(ख) मोहनी चित्र बना रही है।	**अपूर्ण वर्तमान काल**
(ग) डॉक्टर मरीज को देख चुका होगा।	**संदिग्ध भूतकाल**
(घ) बच्चा हँसता है।	**सामानय वर्तमान काल**
(ङ) अनुरोध खाना खा चुका था।	**पूर्ण भूतकाल**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) काल (ख) (2) तीन

(ग) (2) भूतकाल

17. वाच्य

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) अकर्मक। (ख) कर्तृवाच्य

(ग) कर्म की।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कत्र्ता है, कर्म है या भाव, उस रूपांतरण को वाच्य कहते हैं।

(ख) वाच्य के तीन भेद होते हैं–

1. कर्तृवाच्य–जब क्रिया के व्यापार का मुख्य विषय कर्ता हो, उन वाक्यों को कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे–राम क्रिकेट खेलता है। राहुल विद्यालय जाता है।
2. कर्मवाच्य–ऐसे वाक्य जिनमें कर्ता प्रधान न होकर कर्म प्रधान होता है और क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार होता है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।
   कर्मवाच्य के वाक्यों की क्रिया सदा सकर्मक होती है; जैसे–नानी के द्वारा कहानी सुनाई जाती है। रमा द्वारा कहानी पढ़ी जाती है।
3. भाववाच्य–क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि वाक्य का उद्देश्य कर्ता या कर्म नहीं हैः बल्कि क्रिया के भाव को ही प्रधानता है, उसे भाववाच्य कहते हैं।
   भाववाच्य में क्रिया सदैव एकवचन, पुलिंलग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है; जैसे–मुझसे अब खाया नहीं जाता। सर्दी में बाहर निकला नहीं जाता।

(ग) कर्तृवाच्य में सकर्मक व अकर्मक दोनों प्रकार की क्रिया का प्रयोग हो सकता है।

(घ) **कर्तृवाच्य**–जब क्रिया के व्यापार का मुख्य विषय कर्ता हो, उन वाक्यों को कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे–राम क्रिकेट खेलता है। राहुल विद्यालय जाता है।
कर्तृवाच्य में अकर्मक तथा सकर्मक दोनों प्रकार की क्रिया होती है; जैसे–

सकर्मक–सुमित पुस्तक पढ़ रहा है। अकर्मक–विनोद भीतर सो रहा है।
मीना ने पत्र लिखा। सभी विद्यार्थी चिल्ला रहे हैं।
काजल ने कहानी पढ़ी। मोहन गाता है।

भाववाच्य–क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि वाक्य का उद्देश्य कर्ता या कर्म नहीं है; बल्कि क्रिया के भाव की ही प्रधानता है, उसे भाववाच्य कहते हैं।

भाववाच्य में क्रिया सदैव एकवचन, पुलिंलग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है; जैसे–मुझसे अब खाया नहीं जाता। सर्दी में बाहर निकला नहीं जाता।

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
1. अरुण हँसता है।	1. अरुण से हँसा जाता है।
2. मेघा नहीं भाग सकती।	2. मेघा से भाग नहीं जाता।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि वाक्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्ता, कर्म या भाव है, उसे **वाच्य** कहते हैं।

(ख) जिस वाक्य में मुख्य विषय कर्ता होता है, वह **कर्तृवाच्य** कहलाता है।

(ग) जिस वाक्य में मुख्य विषय कर्म रहता है, वह **कर्मवाच्य** कहलाता है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का निशान लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗)

5. निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य-भेद छाँटकर लिखिए–

(क) नुपुर गा नहीं सकती। **भाववाच्य**
(ख) प्रधानमंत्री द्वारा फैसला किया गया। **कर्मवाच्य**
(ग) जायसी ने 'पद्मावत' की रचना की। **कर्तृवाच्य**

6. निम्नलिखित वाक्यों के उचित भेद पर सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) तीन (ख) (2) कर्तृवाच्य
(ग) (2) कर्मवाच्य

7. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य निर्देशानुसार लिखिए–

(क) सुमन कविता सुनाती है।
(ख) मेरे द्वारा दौडा नहीं जाता।
(ग) मोहिनी से किताब पढ़ी जाती है।

18. वाक्य-विचार

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर आश्रित होते हैं।

(ख) 1. जंगल में रहने वाला बाघ, शेरों द्वारा मार दिया गया।
2. मेरठ की विशाखा ने प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(ग) आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं–1. संज्ञा उपवाक्य 2. विशेषण उपवाक्य 3. क्रियाविशेषण उपवाक्य।

(घ) दो सरल वाक्यों का एक सरल, संयुक्त, मिश्रित वाक्य में रूपांतरण–

दो सरल वाक्य–मैं पढ़ता हूँ। मेरा विद्यालय पास में है।

एक सरल वाक्य–मैं पास के विद्यालय में पढ़ता हूँ।

संयुक्त वाक्य–मैं पढ़ता हूँ और मेरा विद्यालय पास में हैं।

शिक्षित वाक्य–मैं उस विद्यालय में पढ़ता हूँ जो पास में ही है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) मिश्रित वाक्य–मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं जो अपने पूरे अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होते हैं; जैसे–जो पुस्तक आपने मुझे दी थी, मैंने पढ़ ली है। सुभाष ने कहा कि मैं अपना काम स्वयं करूँगा।

(ख) मिश्रित वाक्य का वह उपवाक्य प्रधान उपवाक्य कहलाता है जिस पर आश्रित उपवाक्य निर्भर होते हैं।

(ग) किसी भी कथन का पूरा भाव प्रकट करने वाले सार्थक शब्द समूह के मेल को वाक्य कहते हैं।

(घ) वाक्य के दो भेद होते हैं–1. उद्देश्य 2. विधेय।

1. उद्देश्य–प्रत्येक वाक्य में व्यक्ति, वस्तु या घटना के विषय में बताया जाता है। इसलिए वाक्य के विषय को उद्देश्य कहते हैं। जैसे–मोना पुस्तक लिख रही है। तितली फूलों पर मँडरा रही थी।

   पहला वाक्य मोना के बारे में बता रहा है, इसलिए इसका उद्देश्य है–मोना। दूसरे वाक्य में उद्देश्य है–तितली।

   उद्देश्य में वाक्य की क्रिया का कर्ता और उसके विशेषणों को भी माना जाता हैः जैसे–मेरा भाई मोहित (उद्देश्य) पुस्तक लिख रहा है। (विधेय)

2. विधेय–विधेय का अर्थ है किसी के बारे में बताना। उद्देश्य के बारे में जो कुछ वाक्य में बताया जाता है, उसे वाक्य का विधेय कहते हैं; जैसे–

   पद्मा पत्र लिख रही है। तितली फूलों पर मँडरा रही थी।

   पहले वाक्य में विधेय है–'पत्र लिख रही है' और दूसरे में 'फूलों पर मँडरा रही थी।'

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) **गांधी जी** सदैव सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते थे।

(ख) **क्या** में अंदर आ सकता हूँ।

(ग) **आप** यह काम शाम तक कर लेना।

(घ) **गंगा** का जल प्रदूषित होता जा रहा है।

(ङ) **पृथ्वी** सूर्य की परिक्रमा 365 दिन में करती है।

4. सही कथन पर (✓) और गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓)

5. रचना के आधार पर नीचे लिखे वाक्यों के प्रकार लिखिए–

(क) **संयुक्त वाक्य** (ख) **मिश्रित वाक्य** (ग) **संयुक्त वाक्य** (घ) **संयुक्त वाक्य** (ङ) **मिश्रित वाक्य** (च) **संयुक्त वाक्य** (छ) **सरल वाक्य** (ज) **सरल वाक्य**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (2) वाक्य (ख) (2) दो

(ग) (2) आठ

19. विराम-चिह्न

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) प्रश्नवाचक चिह्न।

(ख) वाक्य में जब थोड़ी देरे के लिए ही रुकना हो तब अन्य विराम का प्रयोग होता है।

(ग) सुभाषचंद्र बोस ने कहा–तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।
हरिवंश राय बच्चन – अग्निपथ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) विराम चिह्न का अर्थ है–ठहराव अर्थात् रुकना। भाषा के लिखित रूप में विशेष स्थानों पर रुकने का संकेत करने वाले चिह्न को विराम चिह्न कहते हैं।

(ख) हिंदी भाषा में प्रयुक्त विराम-चिह्न

पूर्ण विराम (।) **उदाहरण–** सभी लोग खाना खाते हैं।

प्रश्नवाचक चिह्न (?) **उदाहरण–** कौन था वह व्यक्ति?

विस्मयसूचक चिह्न (!) **उदाहरण–**वाह! आज तो चिड़ियाघर देखने जायेंगे।

अर्ध विराम (;) **उदाहरण–** विद्या धन अनमोल है; खर्च करने से बढ़ता है।

अल्प विराम (,) **उदाहरण–** आज हर्ष, मोनू और प्रीति विद्यालय नहीं आए।

विवरण चिह्न (/ ः :-) **उदाहरण–**लिंग के दो भेद होते हैं ः स्त्रीलिंग और पुल्लिग।

योजक चिह्न (-) **उदाहरण–** राम-सा पुत्र, लक्ष्मण-सा भाई, सीता-सी पत्नी।

निर्देशक चिह्न (–) **उदाहरण–** सुभाषचंद्र बोस ने कहा–तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।

उद्धरण चिह्न (‘‘ ’’ / ‘ ’) **उदाहरण–** माँ ने कहा, ‘‘मैं बाजार जा रही हूँ।’’

कोष्ठक (( ), {}, [ ]) **उदाहरण–**सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) की पत्नी यशोधरा थी।

(ग) उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं–इकहरे, उद्धरण चिह्न तथा दोहरे उद्धरण चिह्न।

(घ) **निर्देशक चिह्न** (–)–यह चिह्न किसी कथन से पूर्व (पहले), उदाहरण देने तथा कवि। लेखक का नाम लिखने से पूर्व (पहले) आदि स्थानों पर लगाए जाते हैं; जैसे–
सुभाषचंद्र बोस ने कहा–तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।
हरिवंश राय बच्चन–अग्निपथ।

(ङ) **विवरण चिह्न (ः / ः-)**–यह चिह्न किसी विषय के विवरण या व्यापक जानकारी से पूर्व (पहले) लगाया जाता है; जैसे–
लिंग के दो भेद होते हैं ः स्त्रीलिंग और पुल्लिग।
भारतीय सभ्यता का सूत्र है ः सत्यम् शिवम् सुंदरम्।

3. बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) (।) यह चिह्न **पूर्ण विराम** का प्रतीक है।

(ख) (!) यह चिह्न **विस्मयसूचक चिह्न** का प्रतीक है।

(ग) (: / :-) यह चिह्न **विवरण चिह्न** का प्रतीक है।

(घ) (“ ”, ‘ ’) यह चिह्न **उद्धरण चिह्न** का प्रतीक है।

(ङ) ([] / ()) यह चिह्न **कोष्ठक चिह्न** का प्रतीक है।

4. सही मिलान कीजिए–

• प्रश्नवाचक चिह्न	• (?)
• विस्मयादिबोधक चिह्न	• (!)
• अल्प चिह्न	• (,)
• विवरण चिह्न	• (: / :-)
• उद्धरण चिह्न	• (‘ ’ / “ ”)
• कोष्ठक चिह्न	• ([] / ())

5. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर उचित विराम-चिह्न लगाइए–

एक प्रसिद्ध कवि और नाटककार ने कहा है, “समय को मैंने नष्ट किया; अब समय मुझे नष्ट कर रहा है। मनुष्य का जीवन अनमोल है, उसी तरह समय भी अमूल्य है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। जो व्यक्ति समय के साथ नहीं चलता वह जीवन में पिछड़ जाता है। इसलिए हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए।”

20. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) बहुत तेजी से उन्नति करना।

(ख) ज्यादा सीधापन भी किसी काम का नहीं होता।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) मुहावरे एक प्रकार के वाक्यांश हैं। इनका सामान्य अर्थ नहीं होता बल्कि ये विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। जैसे–ईद का चाँद होना – कभी-कभी दिखाई देना।

(ख) लोक + उक्ति, अर्थात् लोक में प्रचलित उक्ति। वह कथन जो लोगों में प्रचलित होता है, वह लोकोक्तियाँ कहलाता हैं। जैसे–
आम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ होना)–अभ्यास करते रहने से समय भी गुजरता है तथा ज्ञान भी बढ़ता है। इसी को कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम।

(ग) मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर

मुहावरे	लोकोक्तियाँ
• मुहावरा वाक्य का एक अंश होता है। जैसे–आँखे चुराना।	• लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं। जैसे–जिसकी लाठी उसकी भैंस।
• मुहावरे का अर्थ वाक्य में प्रयुक्त होने पर भी स्पष्ट होता है।	• वाक्य से अलग रहकर भी लोकोक्तियों से वाक्य स्पष्ट हो जाता है।

- मुहावरे वाकय में प्रयुक्त होते समय लिंग, वचन, कारक के अनुरूप बदल जाते हैं।
- लोकोक्तियाँ वाक्य में प्रयुक्त होने के बाद भी अपने मौलिक स्वरूप में बनी रहती हैं।

3. बॉक्स में दिए गए मुहावरों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) **अब चैन की बंसी बजाना** मोहनलाल, बेटी का ब्याह तो हो गया।

(ख) मैं किसी से नहीं डरता, मैं तो जो कहूँगा **डंके की चोट पर** कहूँगा।

(ग) मुख्यमंत्रियों की बैठक में कोई निर्णय न हो सका क्योंकि सभी **अपनी ढपली अपना राग** अलापते रहे।

(घ) रोहन की गलतियों को देखकर माँ **आग बबूला** हो गई।

4. निम्नलिखित मुहावरों, लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए–

अधजल गगरी छलकत जाए	**कम ज्ञानी अधिक अहंकारी होता है।**
जले पर नमक छिड़कना	**कष्टों को और बढ़ाना।**
न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी	**समस्या को जड़ से समाप्त करना।**

21. पत्र-लेखन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

(क) पत्र वह माध्यम है जिसके जरिए एक दूसरे तक संदेश पहुँचाएँ जाते हैं। परिवार के लोगों, मित्रों, व्यवसायों तथा विभिन्न कार्यालयों के अधिकारियों से संपर्क बनाए रखने का सरल साधन पत्र ही है।

(ख) पत्र-लेखन के समय हमें निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- पत्र का संबंध सही संबोधन और अभिवादन से होना चाहिए।
- पत्र की भाषा सहज, स्पष्ट एवं सरल होनी चाहिए।
- पत्र में लिखने वाले का पूरा पता और दिनांक उपयुक्त स्थान पर ही लिखा होना चाहिए।

(ग) पत्र दो प्रकार के होते हैं–औपचारिक पत्र और अनौपचारिक पत्र।

(घ) अपने विचरों को दूर बैठे व्यक्तियों तक लिखित रूप में पहुँचाने के लिए हम पत्र का उपयोग करते हैं।

2. निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए–

(क) अपने मित्र को अपने नए अध्यापक की विशेषताएँ बताते हुए पत्र

315/सी, कविनगर।
गाजियाबाद।
3 जुलाई, 20.....

प्रिय मित्र सुशील,

आशा है तुम अच्छे होंगे। मैं भी यहाँ कुशल हूँ। यह पत्र मैंने तुम्हें अपने नए अध्यापक के बारे में बताने के लिए लिखा है। उनका नाम विभोर ठाकुर हैं। वे राजस्थान के रहने वाले हैं। उनकी हाल ही में नियुक्ति हुई है। वे हमें हिंदी और संस्कृत पढ़ाते हैं। वे अभी केवल

चौबीस वर्ष के हैं। वे सब लड़कों से मित्र जैसा यहार करते हैं। उनका पढ़ाने का तरीका बहुत अलग और अच्छ है। वे कविताएँ भी लिखते हैं। वे गुस्सा करने पर भी दंड देने की बजाए समझाते हैं। वे अपने अनुभवों से हमें सीख देने हैं। उन्होंने शरद ऋतु में हमें राजस्थान घुमाने का वचन दिया है। मैं ऐसे अध्यापक को पाकर प्रसन्न हूँ।
मैं ऐसे अध्यापक को पाकर प्रसन्न हूँ।
शेष सब कुशल है। अंकल-आंटी को मेरा प्रणाम कहना।
तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में।
तुम्हारा मित्र
प्रांजल कुमार

(ख) नई कक्षा तथा विद्यालय के प्रथम दिन के अनुभव का वर्णन करते हुए अपने पिता को पत्र लिखिए।

छात्रावास,
वैदिक आवासीय विद्यालय,
हरिद्वार।
3 जून, 20....
आदरणीय पिताजी,
सादर चरण स्पर्श।
आशा है आप और बाकी सब घर में कुशलतापूर्वक होंगे। मैंने विद्यालय के छात्रावास में स्थानांतरण कर लिया ह। नई कक्षा तथा नए विद्यालय में कल मेरा प्रथम दिन था। कक्षा काफी बड़ी है। मेरी कक्षा में चालीस छात्र हैं। हमारा विद्यालय हरिद्वार का काफी प्रसिद्ध विद्यालय है। इसका परिसर काफी बड़ा और हरा-भरा है विद्यालय में श्रेष्ठ अध्यापक हैं तथा पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद और अन्य गतिविधियों का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। विद्यालय में वैदिक पद्धति से प्रतिदिन सुबह यज्ञ होता है।
मैं ऐसे विद्यालय में प्रवेश पाकर बहुत प्रसन्न हूँ।
माता जी को मेरा प्रणाम कहिएगा और ऋषभ को मेरा ढेर सारा प्यार दीजिए।
आपके पत्र की प्रतीक्षा में।
आपका पुत्र
सलिल चौधरी।

(ग) माता जी को छात्रावास का वातावरण बताते हुए पत्र लिखिए।

छात्रावास,
वीरांगना लक्ष्मीबाई आवासीय विद्यालय,
झाँसी।
5 अगस्त, 20.....
पूज्या माता जी,
सादर प्रणाम।
आपका पत्र मिला। आपकी इच्छानुसार मैं आपको छात्रावास के बारे में लिख रही हूँ। हमारा छात्रावास विद्यालय परिसर में ही स्थित है। हम कक्षा समाप्त करके तुरंत अपने छात्रावास में चले जाते हैं। छात्रावास में कई कमरे हैं। हर कमरे में दो लड़कियाँ साथ

रहती हैं। मेरे साथ मेरठ की एक लड़की रहती है, जो बहुत अच्छी है। छात्रावास का एक मेस है। वहाँ प्रतिदिन के लिए खाना बनता है। खाना स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। छात्रावास में दो महिला वार्डन हैं। वे छात्राओं की सुरक्षा और अनुशासन का ध्यान रखती है। परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। परिसर में एक महिला व एक पुरुष चौकीदार है। हम यहाँ पर पूरी तरह सुरक्षित और घर जैसा अनुभव करते हैं। सभी छात्राएँ एक दूसरे को जानती है तथा एक दूसरे की सहायता के लिए तत्पर रहती हैं।

पिताजी तथा भैया को मेरा प्रणाम कहना।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में।

आपकी पुत्री

मुस्कान भार्वाज।

22. अनुच्छेद-लेखन

1. सोचिए और बताइए–

(क) **जल-प्रदूषण**

जल मानव, जीव-जंतुओं औरपेड़-पौधों के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। जल में ही पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत हुई थी। जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन दुर्भाग्य से आज जल प्रदूषित हो रहा हे। जल को प्रदूषित करने में मानव का सबसे बड़ा हाथ है। उद्योग-धंधों का अपशिष्ट, वाहित मल, प्लास्टिक रेडियो एक्टिव पदार्थ आदि जल में छोड़ दिए जाते हैं। इससे जल-प्रदूषित होता है। इसे ही जल-प्रदूषण कहते हैं। जल-प्रदूषण द्वारा मानव को पेट, लीवर, त्वचा, पाचन संबंधी कई बीमारियाँ हो जाती हैं और कभी-कभी यह कैंसर का भी कारण बनता है। जल को यदि प्रदूषण से नहीं बचाया गया तो एक दिन यह समृत विष बन जाएगा और शुद्ध जल के अभाव में जीव मरने लगेंगे। इसलिए हमें सचेत होना चाहिए और जल को प्रदूषण से बचाना चाहिए। इसके लिए सरकार और जनता, दोनों को साझा प्रयास करना चाहिए।

(ख) स्वयं कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) किसी विषय पर एक ही अनुच्छेद में विचार लिखना अनुच्छेद-लेखन कहलाता है। अनुच्छेद-निबंध का छोटा रूप होता है। अनुच्छेद-लेखन एक रचनात्मक कला है जिसमें किसी विषय पर कम-से-कम शब्दों में अपने पूर्ण विचार व्यक्त किए जाते हैं।

(ख) अनुच्छेद-लेखन के समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

अनुच्छेद लिखते समय सरल, स्पष्ट, रोचक तथा व्यवहारिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

80 से 150 शब्दों में ही अनुच्छेद लिखना चाहिए।

विचार क्रम में लिखे होने चाहिए।

अनुच्छेद लिखने से पूर्व विषय की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

23. अपठित गद्यांश

1. सोचिए और बताइए–

(क) जिस गद्यांश को अपनी पाठ्य पुस्तक में पढ़ा नहीं गया हो, उसे अपठित गद्यांश कहते हैं। इसमें गद्यांश पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं। इसके निरंतर अभ्यास से विद्यार्थियों की अर्थ ग्रहण क्षमता का विकास होता है।

(ख) प्रश्नों को हल करने से पहले निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–
प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले गद्यांश को ध्यानपूर्वक दो-तीन बार पढ़ लेना चाहिए।
प्रश्नों के उत्तर सरल, सुबोध व स्पष्ट होने चाहिए।
दिए गए उत्तरों का संबंध गद्यांश से होना चाहिए।

2. निम्नलिखित अपठित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

पुष्प की सार्थकता ..... होनी चाहिए।

(क) पुष्प की सार्थकता सुगंधित होने में है।

(ख) मानव जीवन में प्रेम रूपी सुगंध का समन्वय होना चाहिए।

(ग) मानव एवं पुष्प दोनों को सुगंधित अर्थात् प्रेम देने वाला होना चाहिए।

(घ) शीर्षक–'प्रेम की सुगंध।'

3. 'निंदा' बड़ा भारी ..... मिलता होगा।

(क) 'निंदा' दोष है क्योंकि यह व्यक्ति को ईर्ष्यालु बनाता है।

(ख) गद्यांश के अनुसार व्यक्ति यदि निंदक की बात सुनकर अपने दोषों को दूर कर लेता है तो वह दोषरहित हो सकता है।

(ग) निंदक ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित होकर निंदा करता है।

(घ) शीर्षक–'निंदा।'

24. निबंध-लेखन

अभ्यास

1. सोचिए और बताइए–

स्वयं कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) निबंध शब्द दो शब्दों के सार्थक मेल से बना है–नि + बंध अर्थात् अच्छी तरह बँधा हुआ। निबंध में शब्द सीमा के अंतर्गत हम विषयानुसार विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करते हैं। निबंध के द्वारा लेखक आत्मीयता, वैयक्तिक्ता के साथ विषय या प्रसंगों पर स्वयं की भाषा शैली में अपने भाव या विचार प्रकट करता है।

(ख) निबंध लिखते समय निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए–
निबंध का आरंभ तथा अंत आकर्षक होना चाहिए।
रोचक, प्रभावशाली तथा सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
विषय तथा शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर निबंध लिखना चाहिए।
विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करना चाहिए।
एक ही बात को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए।

निबंध को प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए दोहों, मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों आदि का प्रयोग करना चाहिए।

(ग) निबंध दो प्रकार के होते हैं–1. व्यक्ति प्रधान निबंध, 2. विषय प्रधान निबंध।

(घ) निबंध को चार भागों में बाँटा गया हैं–शीर्षक, प्रस्तावना, विषय-वस्तु और उपसंहार।

3. निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए–

(क) हमारा राष्ट्रीय खेल

जीवन में खेलों का एक विशेष महत्व है। यह बात किसी से छुपी नहीं है कि पढ़ाई के साथ-साथ नियमित रूप से खेलने से दिल और दिमाग दोनों स्वस्थ होते हैं। इससे न केवल पढ़ाई में मन लगता है वरन् शरीर में भी चुस्ती-फुर्ती बनी रहती है।

हमारे देश में सभी प्रकार के खेल खेले जाते हैं, जिनमें हॉकी, क्रिकेट, फुटबूल, टेनिस, गोल्फ, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, तैरारी, घुड़सवारी आदि प्रमुख हैं। प्रायः लोग उसी खेल में अधिक रुचि दिखाते हैं, जिसे वे अधिक पसंद करते हैं। खेल में विशेषता प्राप्त अपना, अपने विद्यालय का, अपने नगर का तथा अपने देश का नाम रोशन करते हैं। यद्यपि मैं फुटबॉल, हॉकी तथा क्रिकेट तीनों ही पसंद करता हूँ। फिर भी मैं हॉकी खेलना अधिक पसंद करता हूँ।

हॉकी एक ऐसा खेल है, जो विशव के लगभग समस्त देशों में खेला जाता है। विशव में हॉकी का आरंभ कब हुआ, इसका अनुमान लगाना कठिन है, किंतु अधिकतर लोग यह मानते हैं कि इस खेल का प्रारंभ ईरान देश में हुआ। आधुनिक हॉकी का प्रारंभ 18 जनवरी सन् 1886 को हआ, उसी समय इंग्लैंड में हॉकी संघ की स्थापना हुई और खेलने के नियम भी निर्धारित किए गए। ओलंपिक में हॉकी का प्रारंभ 1908 में हुआ। हमारे देश में 7 नवंबर 1925 में अखिल भारतीय हॉकी संघ की स्थापना हुई इसे हमारे देश का राष्ट्रीय खेल बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

यूरोप के जिन देशों में वर्ष भर बर्फ पड़ती है। वहाँ यह खेल आईस हॉकी के रूप में खेला जाता है। यद्यपि मैदानी हॉकी और आईस हॉकी के नियमों में पर्याप्त अंतर है किंतु दोनों खेलों की मूल भावना एक ही है। हॉकी के क्षेत्र में विशव मंच पर सन् 1928 से सन् 1956 तक भारत का एक छत्र प्रभाव रहा। लोग भारत को हॉकी के साथ और हॉकी को भारत के साथ जोड़ते थे। इसका श्रेय जाता है मेजर ध्यानचंद को, जिसे हॉकी का जादूगर भी कहा जाता था।

इस खेल में नियमानुसार दो टीमें होती हैं। प्रत्येक टीम में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। हॉकी के मैदान को दो हिस्सों में बाँट दिया जाता है। जिसे डी कहा जाता है। डी के अंदर से हिट करने पर यदि बॅल गोल पोस्ट बने होते हैं। गोल पोस्ट के सामने एक अर्धगोलाकार रेखा खींच दी जाती है जिसे डी कहा जाता है। डी के अंदर से हिट करने पर यदि बॉल गोल-पोस्ट में चली जाती है तो गोल माना जाता है। जो टीम अधिक गोल कर देती है, वही विजयी होती है। मैदान के बीच में एक रेखा खींची होती है। जिसे सेंट्रल लाइन कहते हैं। इसी सेंट्रल पर बॉल रखकर खेल प्रारंभ किया जाता है।

हॉकी का खेल 35-35 मिनट की पालियों में खेलते हैं। प्रत्येक टीम का एक गोल रक्षक होता है। गोल-रक्षक का कार्य सबसे महत्वपूर्ण होता है। उसे प्रत्येक स्थिति में गोल बचाने के लिए सर्तक रहना पड़ता है। वह सर पर हैलमेट हाथों में दस्तानें, पैरों में पैड

पहनकर हॉकी लिए हुए एक सजग प्रहरी-सा गोल पोस्ट के पास खड़ा रहता है। इसके अतिरिक्त दो खिलाड़ी डिफेंस ऑफ में, तीन खिलाड़ी सेंटर ऑफ में और पाँच खिलाड़ी सेंटर में फारवर्ड के रूप में होते हैं। दूसरी टीम पर गोल करने के लिए आक्रमण किया जाता है, जिसमें फारवर्ड खिलाड़ियों की विशेष भूमिका होती है।

इस खेल में रेफ्री की विशेष भूमिका होती है, वही खेल का निर्णायक होता है। जो खिलाड़ी नियमों का पालन ठीक ढंग से नहीं करता है रेफ्री उसे दंडित भी कर सकता है। हॉकी में यदि कोई खिलाड़ी ऑफ साइड पर चला जाता है या बॉल पैर में लग जाती है या निश्चित ऊँचाई से गेंद ऊपर उठ जाती है तो फाउल हो जाता है। फाउल देने का अधिकार भी रेफ्री को होता है। इस खेल में पैनल्टी कॉर्नर और पैनल्टी स्ट्रॉक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि यहाँ से मारे गए हिट गोल में परिवर्तित होते हैं।

इस प्रकार हॉकी का खेल अत्यंत मनोरंजक एवं रुचिकर होता है। इसमें शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार की कसरत हो जाती है।

(ख) साक्षरता आंदोलन

भारत सबसे घनी आबादी वाला देश ह। यहाँ की दो-तिहाई जनता गाँवों में बसती है। यहाँ जनता शिक्षा के अभाव में निरक्षर रहकर अपना जीवन व्यतीत करती है। यही कारण है कि यहाँ की जनता स्वतंत्र भारत में रहते हुए भी परंतत्रता का जीवन जीती है। पढ़ना और लिखना आना आज के जीवन की आवश्यकता बन गया है। पढ़ा-लिखा आदमी आजाद होता है। वह सही और गलत को समझ सकता है। अनपढ़ न चिट्ठी लिख सकता है, न पढ़ सकता है। वह तो सड़क, गली या स्टेशन का नाम तक नहीं पढ़ सकता। मकान या बस का नंबर नहीं पढ़ सकता। इस तरह अनपढ़ आदमी बेबस होता है।

जैसे एक ज्योति से दूसरी ज्योतिष जलाई जाती है। वैसे ही पढ़ा-लिखा आदमी किसी अनपढ़ को पढ़ा-लिखाकर आजाद कर सकता है। आज हमारे देश की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि हमें अपने देश के अनपढ़ और अशिक्षित लोगों को शिक्षित बनाना है। शिक्षित व्यक्ति स्वयं अपने लिए, अपने समाज के लिए तथा अपने देश के लिए जो भी सोचता है, वह बेहतर सोचता है।

पढ़ा-लिखा व्यक्ति किसी बात या काम को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकता है। पढ़ा-लिखा आदमी जाग उठता है। वह अपनी कमाई को बढ़ा सकता है। खेती, बागबानी, पशुपालन, मछलीपालन आदि की जानकारी देनेवाली आसान पुस्तकें उसके हाथ में दी जा सकती हैं। इससे उसकी कमाई बढ़ सकती है। इसी तरह शिक्षा गरीबी हटा सकती है।

पढ़ा-लिखा व्यक्ति स्वयं अपन और अपने परिवार वालों की उन्नति के लिए सोचेगा। उसमें साफ-सफाई और स्वास्थ्य संबंधी जागृति आएगी। उसके भीतर बसी बुरी आदतों एवं कुरीतियों से उसे छुटकारा मिलेगा। दहेज की बुराई, बाल-विवाह, फिजूलखर्ची, शराब, तंबाबू आदि की आदतें छोड़ने की उसकी इच्छा उसे स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर करेगी। सही-गलत का उसे ज्ञान होगा और वह समाज और देश की उन्नति के लिए अग्रसर होगा। आज देश को आगे बढ़ोन के लिए सबसे अधिक आवश्यकता है, शिक्षा की।

(ग) मेरी रेल यात्रा

जब मैं स्टेशन पर पहुँचा, प्लेटफॉर्म पर यात्रियों की भारी दौड़-भाग थी। कुछ लोगों की उत्सुक आँखें गाड़ी की ओर लगी थीं, जो अभी तक स्टेशन पर नहीं पहुँची थी। मैं और छोटी बहन, माँ के साथ देहरादून जाने के लिए गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ ही पल बीते थे कि सहसा प्लेटफॉर्म पर और अधिक हलचल मच गई। दौड़ते-भागते नर-नारी एक दूसरे से टकरा रहे थे। इतनी ही देर में धड़धड़ती हुई गाड़ी आ पहुँची।

कुली हमारा सामान लेकर चल पड़ा। हमारे मन में विशेष घबराहट न थी, क्योंकि पिताजी ने पहले से हम तीनों की सीट आरक्षित करवा दी थी। हम निश्चिंतता से अपनी सीट पर बैठ गए। कुली ने सामान हमारी सीट के नीचे ही रख दिया था। मैं पहले से ही खिड़की ओर बैठ गया था ताकि बाहर केप्राकृतिक दृश्यों को जी भर कर देख सकूँ।

दस मिनट ही गाड़ी रुकी होगी। सहसा गार्ड ने सीटी बजाई और हरी झंडी दिखाई। गाड़ी हिली और चल दी। मैंने निशिचत होकर गहरी साँस ली। कुछ ही पलों में गाड़ी स्टेशन के बाहर आ पहुँची। अब मैं दूर-दूर दौड़ते-घूमते खेतों, बागों-उपवनों और जंगलों का सौंदर्य देख रहा था। छोटे-छोटे गाँव, इधर-उधर चलते-फिरते नर-नारी, हल चलाते हुए किसान, खेतों में काम करती हुई कृषक-वधुएँ सभी तेजी से आ-जा रहे थे।

देखते-देखते कई स्टेशन आए और चले गए। रेलगाड़ी इस समय सहारनपुर के समीप पहुँचने वाली थी। कुछ यात्री अपना-अपना सामान लेकर उतरने की तैयारी करने लगे थे। सहसा एक भयंकर आवाज हुई। डिब्बे में जैसे भूचाल सा आ गया। ऊपर रखा सारा सामान हमारे ऊपर आ गिरा। हम जोर से कहीं टकराए। मेरे सिर में क्या लगा, मुझे पता नहीं। कुछ ही देर में मैं मुर्च्छित होकर एक ओर लुढ़क गया।

जब मुझे होश आया, मैंने अपने को सहारनपुर के सरकारी चिकित्सालय में बिस्तर पर पड़े पाया। मेरे सिर और हाथ में पट्टियाँ बँधी थीं। सिर में भयानक पीड़ा हो रही थी। पास ही बिस्तर पर मेरी माँ भी लेटी थीं। उनके पैर पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। हाँ, मेरी छोटी बहन मिन्नी का कहीं भी पता न था। मैं घबरा गया। मैंने माँ से पूछा, "मम्मी! मिन्नी कहाँ है?" माँ ने मुझे सांत्वना देते हुए कहा, "बेटे! घबराने की कोई बात नहीं है। मिन्नी को कोई खास चोट नहीं आई थी, वह घर भेज दी गई है। भगवान का लाख-लाख धन्यवाद है कि इतनी भीषण दुर्घटना में भी तुम्हें कोई खस चोट नहीं लगी है। हाँ, मेरे पैर की एक हड्डी जरूर टूट गई है, पर वह भी ठीक हो जाएगी; प्लास्टर चढ़ा दिया गया है। कल तक शायद हम अपने घर वापस चले जाएँगे। तुम्हारे पिताजी कल ही आ गए थे। हमें चिंता तुम्हारे ठीक-ठीक होश में आने की थी।

मैंने जानना चाहा कि दुर्घटना क्यों हुई और उसका क्या कारण था। माँ ने बताया कि जिस प्लेटफॉर्म पर गाड़ी को रुकना था, उस पर गलती से कोई मालगाड़ी खड़ी थी; अतएव हमारी गाड़ी मालगाड़ी से टकरा गई। यह तो खैर हुआ कि गाड़ी की गति उस समय बहुत धीमी थी, नहीं तो अनर्थ ही हो जाता; फिर भी दो बच्चों और तीन महिलाओं के मरने की खबर है।

हम सकुशल अपने घर लौट आए थे। माँ को ठीक होने में लगभग चार महीने लग गए थे, पर मेरे मन में उस घटना का जो आंतक बैठ गया था, वह आज भी जब-तब हमें हिला जाता है।

(घ) छुआछूत

हमारे देश के सामने गरीबी, भ्रष्टाचार, बढ़ती जनसंख्या, आतंकवादी जैसी कई समस्याएँ हैं। इन्हीं में से एक प्रमख समस्या है–छुआछूत। छुआछूत अर्थात् सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों से भेदभाव करना। छुआछूत का उद्‌भव वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था से हुआ। आरंभ में कर्म पर आधारित यह व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई और जातिवाद में बदल गई। तथाकथित निम्न जाति के लोगों को निकृष्ट कार्य जैसे–चमड़े का कार्य, साफ-सफाई का कार्य आदि करने पड़े। कथित उच्च जाति के लोगों ने निकृष्ट कार्य करने वाले इन लोगों को अपवित्र कहकर उनसे छुआछूत करना प्रारंभ कर दिया। उन्हें छूने से बचना, उनके मंदिर में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाना, उनके कुएँ, बस्तियाँ गाँव से बाहर करना आदि द्‌वारा उन्हें प्रताड़ित और बहिष्कृत किया गया। सदियों तक यह अमानवीय प्रथाएँ यूँ ही चलती रहीं। परंतु बौद्‌ध धर्म के आंदोलन के इन व्यवस्थाओं को झटका लगा। गौतम बुद्‌ध ने समानता का संदेश दिया। मुगल काल मेंजातिवाद ने पुनः अपना भयानक रूप धारण कर लिया। इसी समय गुरुनाक, कबीर, रैदास जैसे महात्माओं ने जातिवाद पर कराया प्रहार किया। इस लंबे संघर्ष के बाद भी जातिवाद फलता-फूलता रहा। बीसवीं सदी में जब भारतीय राट्रीय आंदोलन ने जोर पकड़ा तो अछूत समाज के मुद्‌दे भी सतह पर आ गए। महात्मा गांधी ने अछुतों को 'हरिजन' कहकर उन्हें सम्मान दिलाने का प्रयास किया। उन्होंने अछूतों को हिंदू समाज की मुख्य धारा में लाने का भरपूर प्रयास किया। इस समय एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में भीमराव अंबेडकर का भारतीय राट्रीय आंदोलन में उदय हुआ। स्वयं अछूत समाज से आने वाले भीमराव ने अनुनय के बजाए संघर्ष और कूटनीति का रास्ता अपनाया। उन्होंने अछूतों को 'दलित' कहकर संगठित किया। उन्होंने ब्रितानी साम्राज्य और कांग्रेस दोनों से दलितों के अधिकारों के लिए वार्ताएँ की। दलितों के मामले में उनके महात्मा गांधी से हमेशा मतभेद रहे। स्वतंत्रता के बाद जब संविधान ने निर्माण की शुरुआत हई तो उससमय सबसे बड़े कानूनविद भीमराव को संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिला। उन्होंने दलितों के उद्‌धार के लिए कई क्रांतिकारी फैसले लिए। उन्होंने छुआछूत को दंडनीय बना दिया। दलितों को शैक्षिक तथा नौकरी में आरक्षण दिया गया। संसद, विधानसभाओं में भी दलितों के लिए सीटें आरक्षित की गई। इससे धीरे-धीरे दलितों की स्थिति में सुधार होने लगा।

आज स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी दलितों की स्थिति में पूरी तरह सुधार नहीं हुआ है। आज भी उन्हें सामाजिक भेदभाव झेलना पड़ता है। हमें जातिवाद से बचना चाहिए। आधुनिक पीढ़ी को सामाजिक भेदभाव को तिलांजलि देकर भारत को एक खुशहाल समाज बनाना होगा।